बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल...

शेखावाटी मिशन-100

हिन्दी

कक्षा–10

कार्यालय : संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)
प्रभारी : शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

: missionshekhawati100@gmail.com | 9413361111, 9828336296

टीम शेखावाटी मिशन-100

संतोष कुमार महर्षि
संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चुरु संभाग
चुरु (राज.)

रामचन्द्र पिलानियां
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
सीकर (राज.)

पितराम सिंह काला
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
झुन्झुनूं (राज.)

मनोज कुमार ढाका
जिला शिक्षा अधिकारी
झुन्झुनूं (राज.)

निसार अहमद खान
जिला शिक्षा अधिकारी
चुरु (राज.)

महेन्द्र सिंह बड़सरा
सहायक निदेशक (स.शै.प्र.)
कार्यालय संयुक्त निदेशक, चुरु

हरदयाल सिंह फगेड़िया
अति.जिला शिक्षा अधिकारी (शै.प्र.)
सीकर (राज.)

रामचन्द्र सिंह बगड़िया
अति.जिला शिक्षा अधिकारी
सीकर (राज.)

नीरज सिहाग
अति.जिला शिक्षा अधिकारी (शै.प्र.)
झुन्झुनूं (राज.)

सांवरमल गहनोलिया
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (शै.प्र.)
चुरु (राज.)

महेश सेवदा
सहसंयोजक शेखावाटी मिशन-100
सीकर (राज.)

रामावतार भदाला
सहसंयोजक शेखावाटी मिशन-100
सीकर (राज.)

तकनीकी सहयोग

राजीव कुमार, निजी सहायक | पवन ढाका, कनिष्ठ सहायक | महेन्द्र सिंह कोक, सहा. प्रशा. अधिकारी | अभिषेक चाैधरी, कनिष्ठ सहायक | **दीपेन्द्र, कनिष्ठ सहायक**

जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय), सीकर

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

शेखावाटी मिशन-100

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्यक्रम सत्र : 2021-2022

उच्च माध्यमिक परीक्षा - 2022

विषय : हिन्दी-10

सर्वश्रेष्ठ सफलता सुनिश्चित करने हेतु सर्वश्रेष्ठ संकलन

चान्दनी राठौड़
संयोजक हिन्दी
रा.उ.मा.वि.,गोवटी (दांतारामगढ़)

सरोज धायल
रा.उ.मा.वि., खाटूश्यामजी

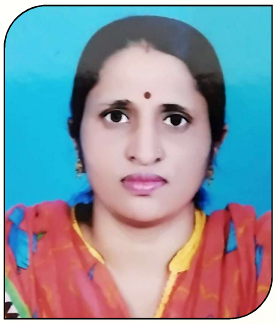

पदम कंवर
रा.उ.मा.वि., चन्दपुरा (सीकर)

जगदीश प्रसाद मील
रा.मा.वि., आकवा (सीकर)

दिनेश भूकर
रा.उ.मा.वि., लालासी (सीकर)

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

1.सूरदास

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भ्रमरगीत सार किसकी रचना है—

(अ) तुलसीदास (ब) सूरदास

(स) नंददास (द) केशवदास (ब)

प्रश्न 2. गोपियो ने अपनी तुलना किस से की है।

(अ) कृष्ण से (ब) गुड़ से लिपटी चींटी से

(स) भौरे से (द) विरहिणी से (ब)

प्रश्न 3. सूरदास की भाषा है

(अ) ब्रज (ब) अवधी

(स) मैथिली (द) हिन्दी (अ)

प्रश्न 4. हमारे हरि हारिल की लकडी । पंक्ति में अंलकार है—

(अ) उपमा (ब) यमक

(स) पुनरूक्ति (द) अनुप्रास (द)

प्रश्न 5. गोपियों को क्या कड़वी ककड़ी के समान लगता है—

(अ) ककड़ी (ब) निर्गुण ज्ञान योग

(स) कृष्ण का विरह (द) ब्रज की प्रकृति (ब)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 5. गोपियों के अनुसार राजनीति किसने पढ़ ली है?

उत्तर. गोपियो के अनुसार हरि अर्थात श्री कृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है।

प्रश्न 6. सूर की गोपियों के अनुसार किसने प्रीति नदी में पाँव भी नहीं डाला है?

उत्तर. सूर की गोपियों के अनुसार उद्धव ने प्रीति नदी में पाँव भी नहीं डाला है।

प्रश्न 7. गोपियों ने योग संदेश किन्हे सौंपने की बात कही है?

उत्तर. गोपियों ने योग संदेश उन्हें सुनाने को कहा है जिनके मन एकाग्र न होकर चकरी की तरह चंचल और चलाएमान भटकते हुए हों।

प्रश्न 8. 'ऊधौ भले लोग आगे के, परहित डोलत धाए' का क्या आशय है?

उत्तर. इसका अर्थ है कि पुराने जमाने के लोग दूसरो के हित के लिए भागदौड करते थे। वे सज्जन होते थे और निरंतर परोपकार में लगे रहते थे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 9. गोपियों को उद्धव द्वारा किया गया योग का संदेश कैसा लगता है?

उत्तर. श्री कृष्णा से प्रेम करना छोड़कर निर्गुण ज्ञान योग का उद्धव का सदेश गोपियों को कड़वी ककड़ी जैसा लगता है, अप्रिय और कष्टप्रद लगता है।

प्रश्न 10. गोपियों ने सच्चा राजधर्म किसे बताया है?

उत्तर. गोपियों के अनुसार सच्चा राजधर्म यह है कि प्रजा को न सताया जाये। परन्तु यहाँ तो श्री कृष्ण स्वंय ही राजधर्म से विमुख होकर उद्धव के माध्यम से योग सदेश भेजकर गोपियों को सताने का कार्य कर रहे है। जिससे गोपियों की विरहाग्नि और बढ़ गई है।

प्रश्न 11. 'ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी मे निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. इस पद में गोपियों ने नीरस ज्ञान और योग को अहंकार में डुबे उद्धव को प्रेम की डोर से मुक्त होने के कारण अभागा सिद्ध करना चाहा है। ज्ञानी और योगी उद्धव प्रेम के अलौकिक आनंद से वन्चित है जो उसका भाग्य न हो के दूर भाग्य है का प्रमाण है।

प्रश्न 12. ''हमारे हरि हारिल की लकरी'' का क्या तात्पर्य है?

उत्तर. हारिल पक्षी अपने पंजो में हमेशा एक लकड़ी दबाये रखता है और उसे कभी अपने से अलग नहीं करता है। गोपियाँ भी सोते जागते सपने में दिन और रात श्री कृष्ण का ही नाम जपते हुए उन्हें अपने हदय में बसा कर रखती हैं। उन्होंने मन, वचन और कर्म से श्री कृष्ण को अपने हदय में बसा रखा है।

<u>निबंधात्मक प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 13. गोपियो ने अपने वाक्‌चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया सूर की गोपियों के वाक्‌चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर. सूरदास के भ्रमरगीत से संकलित पदों में गोपियों के उद्धव के साथ जो संवाद हुए है। उनमें गोपियों ने अपनी सरल व भावपूर्ण प्रेमा भक्ति से उद्धव के ज्ञान योग को तुच्छ सिद्ध कर दिया। उद्धव को अपने निर्गुण ज्ञान योग पर बड़ा अभिमान था। गोपियाँ अपने हदय की वेदना को प्रकट करती हुई सगुण प्रेमा भक्ति का महत्व प्रकट करती हुई उद्धव जैसे ज्ञानी और योगी को निरूतर कर देती हैं। योग साधना को कड़वी ककड़ी और व्याधिकहना तथा व्यंग्य में उद्धव को बड़भागी और कृष्ण को राजनीति शास्त्र का ज्ञाता कहना गोपियों के वाकचातुर्य को स्पष्ट करता है। गोपियों के तर्को और शंकाओं का कोई समाधान उद्धव को सूझते नहीं बनता। इससे गोपियों के एकनिष्ठ कृष्ण प्रेम के सामने उद्धव का सारा ज्ञान व नीतिज्ञता असहाय हो जाती है।

प्रश्न 14.सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर. भ्रमरगीत सूरदास की अनूठी काव्य रचना है जिसकी मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार है।

1. भ्रमरगीत प्रसंग सूरसागर का ही एक भाग है जिसमें श्रीकृष्ण के मित्र उद्धव और गोपियों में मध्य संवाद योजना की गई है।

2. इसमें भौंरे को माध्यम बनाकर गोपियों ने उद्धव का और कृष्ण को अपने व्यंग्य बाणों का लक्ष्य बनाया है।

3. भ्रमरगीत का उद्वेश्य निर्गुण ज्ञान योग पर सगुण प्रेमाश्रित भक्ति की सुगमता और श्रेष्ठता सिद्ध करना है। भ्रमरगीत का प्रमुख रस वियोग श्रृंगार रस है।

4. भ्रमरगीत की भाषा सरल साहित्यिक ब्रजभाषा है। इसमें अलकारों का सहज प्रयोग किया गया है। लोकाक्तियों और मुहावरों के प्रयोग से ब्रज भाषा और भी सशक्त एवं लाक्षणिक बन उठी है।

5. भ्रमरगीत के सभी पद संगीत की राग रागिनियों में बद्ध है

प्रश्न 15.निम्नांकित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी
ज्यौं जल माँह तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति–नदी में पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।

उत्तर. संदर्भ तथा प्रसंगः— प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' में संकलित, महाकवि कृष्णभक्त सूरदास की रचना 'सूरसागर' के भ्रमरगीत प्रसंग से अवतरित है। इस पद में गोपियों द्वारा उद्धव को व्यंग्य की आड़ में अभागा सिद्ध किया गया है।

व्याख्याः— गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करते हुए कहती हैं कि हे उद्धव! आप के तो बड़े ही भाग्यशाली है जो कभी प्रेमबंधन में नहीं पड़े। प्रेम की डोर को छुआ भी नहीं जिस प्रकार पत्ते जल के भीतर रहते है पर उनको दाग भी नहीं लगता वे भीगते नहीं उसी प्रकार आप भी संसार में रहते हुए प्रेम के अलौकिक अनुभव से वंचित हैं। जैसे तेल से भरी हुई मटकी जल के बीच रहे तब भी एक बूंद भी अपने ऊपर नहीं ठहरने देती उसी प्रकार प्रेम जगत् में रहते हुए भी आप उसका बूँद भर भी आस्वाद नहीं पा सके। आपने प्रेम रूपी नदी में पाँव तक नहीं डुबोया। आपकी दृष्टि कभी किसी के रूप पर मुग्ध नहीं हुई। ये तो हम ही दुर्बल भोली भाली गोपियाँ हैं जो श्री कृष्ण के प्रेम जाल में ऐसी फँसी है जैसे मिठाई की लोभी चीटियां गुड़ से चिपकी रहती हैं।

विशेषः— 1. सूरदास ने इस पद के द्वारा निग्रुण ज्ञान योग की अपेक्षा प्रेमाभक्ति को सुगम और श्रेष्ठ सिद्ध किया है।

2. गोपियों ने उद्धव को व्यंग्य की आड़ में अभागा सिद्ध किया है जो प्रेम रूपी अमृत के अनुभव से वंचित है।

3. अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, रूपक, उदाहरण व वक्रोक्ति अलंकारो का सुंदर व सहज प्रयोग दृष्टव्य है।

4. पद में ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 16. महाकवि सूरदास का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर. वात्सल्य रस सम्राट कहे जाने वाले महाकवि सूरदास का जन्म सन् 1478 में मथुरा के निकट रूनकता क्षेत्र में हुआ। ये मथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट पर रहते थे और श्री नाथ जी के मंदिर में भजन कीर्तन करते थे। महाप्रभु—वल्लभाचार्य के शिष्य सूरदास अष्टछाप के कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध है। ये भक्तिकाल की सगुण धारा के कृष्ण भक्त कवि है। ये जन्मांध थे।

इनके तीन ग्रंथ सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली में सूरसागर ही सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ। सूर वात्सल्य, श्रृंगार व भक्ति के श्रेष्ठ कवि माने गए हैं। श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का जैसा सुंदर वर्णन सूरदास ने अपनी बंद आँखो से किया वैसा अन्य कोई कवि नहीं कर सका। इनका भ्रमरगीत सार निर्गुण ज्ञान योग पर सगुण प्रेमाभक्ति की प्रतिष्ठा करता है।

सूर की कविताओं में ब्रजभाषा का निरवश हुआ रूप है जो चली हुई लोकगीतों की परंपरा की ही श्रेष्ठ कड़ी है।

शेखावाटी मिशन-100

2.तुलसीदास

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'भृगुसुत' से तात्पर्य है–

(अ) परशुराम (ब) लक्ष्मण

(स) राम (द) विश्वामित्र

प्रश्न 2. परशुराम पर किसका ऋण बाकी था–

(अ) माता का (ब) पिता का

(स) गुरू का (द) राम का

प्रश्न 3. 'गाधिसूनु' से तात्पर्य है–

(अ) राम (ब) जटायु

(स) विश्वामित्र (द) परशुराम

प्रश्न 4. परशुराम विश्व में प्रसिद्ध थे–

(अ) महामुनि के रूप में (ब) अत्यंत क्रोधी के रूप में

(स) बाल ब्रह्माचारी के रूप में

(द) क्षत्रियों के शत्रु के रूप में

प्रश्न 5. राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद तुलसी के किस काव्य ग्रंथ से अवतरित है–

(अ) विनयपत्रिका (ब) कवितावली

(स) रामचरितमानस (द) गीतावली

अति लघूतरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 6. ''इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं'' कहने से लक्ष्मण का क्या आशय है?

उत्तर. यहाँ कुम्हडबतिया कहने से लक्ष्मण का आशय है कि वह कोई छुई–मुई का पौधा अर्थात डरपोक व्यक्ति नहीं है जो किसी की जरा सी धमकी से घबरा कर डर जाएंगे?

प्रश्न 7. ''हमरे कुल इन्ह पर न सुराई'' में लक्ष्मण ने रघुवंश की क्या परंपरा बताई है?

उत्तर. लक्ष्मण ने बताया कि रघुवंश में देवताओं ब्राहमणो, हरिभक्तों और गायों पर वीरता प्रदर्शित करने की परंपरा नहीं है।

प्रश्न 8. लक्ष्मण ने परशुराम से शूरवीरों के क्या लक्षण बताएं है।

उत्तर. लक्ष्मण ने कहा कि शूरवीर युद्ध के समय अपनी प्रशंसा करने की बजाए वीरता प्रदर्शन करते हैं। कायर व्यक्ति ही युद्ध में शत्रु के सम्मुख वीरता की डीगें हाँकते हैं?

प्रश्न 9. राम लक्ष्मण परशुराम संवाद रामचरितमानस के किस कांड से संकलित है। यह किस भाषा में लिखित है?

उत्तर. राम लक्ष्मण–परशुराम संवाद रामचरितमानस के बाल–की संकलित है। यह अवधी भाषा में रचित है।

प्रश्न 10. परशुराम ने शिव धनुष तोड़ने वाले को किसके समान अपना शत्रु माना?

उत्तर. परशुराम ने शिव धनुष तोड़ने वाले को सहस्रबाहु के समान अपना शत्रु माना।

लघूतरात्मक प्रश्न

प्रश्न 11. गाधिसुनु (विश्वामित्र) के कथन 'मुनिहि हरियरे सूझ' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. मुनि विश्वामित्र परशुराम की अंहकार युक्त बाते सुनकर मन ही मन हँसते हुए सोचने लगते हैं कि मुनि परशुराम को सब हरा ही हरा सूझ रहा है अर्थात वे राम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय कुमार समझकर उन्हें परास्त करने का सपना देख रहे हैं। परशुराम यह समझते हैं कि वह राम लक्ष्मण पर सहजता से विजय पा लेंगे, पर वे यह नहीं जानते

शैक्षणिक मिशन–100

कि राम लक्ष्मण वीर योद्धा और अवतारी पुरूष है उन पर सहस्रबाहु के समान विजय पाना संभव नहीं है। परन्तु मुनि परशुराम परिस्थिति की विषमता को समझ ही नहीं पा रहे हैं।

प्रश्न 12. राम लक्ष्मण परशुराम संवाद के तीनों पात्रों के स्वभाव की एक–एक विशेषता बताइए।

उत्तर. राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद के तीनो पात्रों की विशेषताएँ निम्नलिखित है–

राम– राम धीर, वीर और शांत स्वभाव के है। वे आदर्श और मर्यादाओं का पालन करने वाले पुरूष है जो विनम्र और मधुभाषी हैं।

लक्ष्मण– लक्ष्मण वीर होने के साथ उग्र स्वभाव के हैं। वे वाकपटु हैं, पर उनकी वाणी में व्यंग्य और आक्रमकता है।

परशुराम– परशुराम सदैव आत्मप्रशंसा करने वाले अंहकारी मुनि है, जो बहुत क्रोधी हैं।

प्रश्न 13. परशुराम को क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जोने के लिए कौन–कौन से तर्क दिए?

उत्तर. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष टूट जाने के तर्क देते हुए कहा कि यह धनुष बहुत पुराना था, यह तो राम के छूते ही टूट गया। इसमें श्री राम को कोई दोष नहीं है। वैसे भी एक पुराने और अनुपयोगी धनुष के टूटने से आपकी क्या हानि हुई है! जो आप इनता क्रोध कर रहे हैं। राम ने तो धनुष को नया जानकर ही परखा था। उनका धनुष तोड़ने का केई विचार नहीं था।

प्रश्न 14. लक्ष्मण की उपहासपूर्ण क्षमायाचना को सुनकर, परशुराम ने विश्वामित्र से क्या कहा?

उत्तर. परशुराम ने कहा– विश्वामित्र सुनिए! यह बालक बुद्धिहीन और कुटिल स्वभाव वाला हैं। यह मूर्ख काल के वश में होने के कारण अपने साथ अपने कुल का भी नाश कराएगा। यह तो सूर्यवंश रूपी चन्द्रमा में कलंक के समान है। यह अत्यंत स्वच्छंद मूर्ख और अज्ञानी है। यह क्षणभर में ही मेरे हाथों काल का ग्रास बन जाएगा। बाद में आप मुझे दोष मत देना। यदि आप इस बालक का जीवन बचाना चाहतें है तो मेरे बल और क्रोध का परिचय कराकर इसे अनर्गल प्रलाप करने से रोक लें। यही उचित होगा।

निबंधात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 15. पाठ लक्ष्मण परशुराम संवाद के आधार पर तुलसी के भाषा सौन्दर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर. महाकवि तुलसी का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। उनकी काव्य भाषा की सबसे प्रसिद्ध रचना रामचरितमानस है जिसकी रचना साहित्यिक अवधी में हुई हैं। भाषा की सफाईयों शुद्ध वाक्य रचना इनकी मुख्य विशेषता है। संस्कृतनिष्ठ शब्दों के प्रयोग के साथ उन्हे तद्भव रूप प्रदान करके कोमल–मधु वर्णो की योजना की गई है। तुक मिलाने के लि अनेक शब्दों को दीर्घान्त बनाया गया है। तुलसी ने दोहा और चौपाई छंद में अवधी भाषा को सजाकर उसे गये और लोकप्रिय बनाया है। मुहावरे और लोकोक्तियों के साथ अलंकारो के सहज प्रयोग ने इसे और प्रभावशाली व आकर्षक बना दिया है। संवाद योजना तो अतुलनीय है जो भावों की अभिव्यक्ति और पात्रों के चरित्रोद्घाटन में पूर्ण सक्षम हैं। इनकी भाषा प्रौढ, संप्रेषनीय वाक्चातुर्य से सुसज्जित है।

प्रश्न 16. लक्ष्मण के आचरण को सभा के लोगों ने अनुचित क्यों बताया?

उत्तर. परशुराम द्वारा विश्वामित्र के आग्रह का मान रखने की बात सुनकर लक्ष्मण ने मर्यादा की सीमा लाँघने जैसा आचरण किया। उन्होने परशुराम के शील की हँसी उड़ाई और माता–पिता तथा गुरू के ऋण को चुकाने को लेकर उन पर पैने व्यंग्य किए। ब्राह्मण होने के कारण वह बचे हुए है ऐसा तीखा आक्षेप किया। उनकी वीरता और यश को चुनौती दी। लक्ष्मण मर्यादा के बाहर आचरण कर रहे थे। सभा को यह छोटा मुँह बड़ी बात लग रही थी। रक्तपात हो सकता था। इसी कारण सभी लोगों ने लक्ष्मण के आचरण को अनुचित बताया।

प्रश्न 17. निम्नांकित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

कहेउ लखन मुनिसील तुम्हारा। को नहिं जान विदित संसारा।।

माता पितहिं उरिन भए नीकें। गुरूरिन रहा सोचु बड़ जी के।।
सो जनु हमरेहिं माथें काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा।।
अब अनिअ व्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली।।
सुनि कटु वचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।।
भृगुबर परसु देखाबहु मनोनी। विप्र विचारि बचौं नृपद्रोही।।
मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विज देवता धरहि के बाढ़े।
अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु ने वारे।।

लनख उत्तर आहुति सरिस, भृगुबर कोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन, बोले रघुकुल मानु।।

उत्तर. **संदर्भ तथा प्रसंगः**— प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' में संकलित महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' नायक महाकाव्य के बाल काण्ड से लिया गया है। इस प्रसंग में लक्ष्मण परशुराम के बड़बोलेपन पर व्यंग्य करके उनके क्रोध को और बढ़ा देते हैं। लक्ष्मण की वाचालता और कठोर वचनो को लोग अनुचित बता रहे हैं। राम लक्ष्मण को संकेत से चुप होने को कह रहे हैं।

व्याख्याः— लक्ष्मण परशुराम पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि आप कितने शीलस्वभाव वाले है यह बात सारा संसार जानता है। माता पिता के ऋण से तो आप अच्छी तरह मुक्त हो ही गए हैं अब गुरू का ऋण रह जाने की आपके मन में बड़ी चिंता है। आपने उस ऋण को हमारे माथे मढ़ दिया है। दिन भी बहुत हो गए है तो अब उस ऋण का ब्याज भी बहुत बढ़ गया होगा। अब आप किसी हिसाब लगाने वाले को बुला लीजिए। आपका जितना ऋण होगा, मै तुरंत थैली निकालकर चुका दूँगा। लक्ष्मण के इन कटु व्यंग्य वचनों को सुनकर परशुराम ने अपना फरसा संभाल लिया, यह देखकर सारी सभा हाहाकार करने लगी। इस पर भी लक्ष्मण चुप नहीं हुए और बोले—हे भृगुश्रेष्ठ मैने यह फरसा बहुत देखा है मै इससे नहीं डरता हूँ। हे क्षत्रियों के शत्रु। आप ब्राह्मण हो आपका युद्ध में अच्छे योद्धाओं से पाला नहीं पड़ा। हे ब्राह्मण देवता! आप घर के ही वीर बने हुए हो। लक्ष्मण को इस प्रकार अनुचित वचन बोलते देख सभी लोग उनके व्यवहार की निंदा करने लगे, तब राम ने संकेत से लक्ष्मण को बोलने से मना किया।

परशुराम की क्रोधरूपी अग्नि को लक्ष्मण के व्यंग्य वचन आहुति के समान भड़का रहे थे। तब क्रोधाग्नि को बढ़ते देख राम जल के समान शीतल वचन बोलकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास करते हैं।

विशेषः— 1.परशुराम की आत्मप्रशंसा और बड़बोलेपन का उत्तर लक्ष्मण अपने पैने व्यंग्न वचनों से दे रहे हैं।

2. साहित्यिक अवधी भाषा का पात्रानुकूल प्रयोग हुआ है।
3. दोहा तथा चौपाई छंद है।
4. वीर और रौद्र रस का सुदर प्रयोग हुआ है।
5. 'माता पितहिं उरिन भर नीकें में' मे वक्रोक्ति अलंकार है। इसके साथ अनुप्रास, रूपक उपमा, पुनरूक्तिप्रकाश अलंकारो का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 18. महाकवि तुलसीदास का साहित्यक परिचय लिखिए।

उत्तर. रामभक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के बांदा जिले के राजापुर गाँव में सन् 1532 में हुआ। तुलसी का बचपन बहुत संघर्ष पूर्ण था। जीवन के प्रारभिंक वर्षों में ही माता पिता से बिछोह हो गया। गुरूकृपा व पत्नी रत्नावली की प्रेरणा से उन्हे रामभक्ति का मार्ग मिला।

रामभक्ति परपंरा में तुलसी अतुलनीय है। उनके द्वारा अवधी भाषा में रचित रामचरितमानस जन जन का कंठाहार है। उनके राम मानवीय मर्यादाओं और आदर्श के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से तुलसी ने नीति, स्नेह, शील, विजय, त्याग जैसे उदात आदर्शों को प्रतिष्ठित किया है।

मानस के अलावा कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्ण–गीतावली एवं विनयपत्रिका आदि उनकी प्रमुख रचनाएं है। तुलसी का अवधी और ब्रजभाषा दोनों पर समान अधिकार था। इनहोने प्रबंध, मुक्तक और गेय सभी काव्यरूपों में लिखा सन् 1623 में काशी में उनका देहावसान हुआ।

शेखावाटी मिशन–100

3. जयशंकर प्रसाद

वस्तुनिश्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'आत्मकथ्य' कविता में कवि ने अपनी आत्मकथा को कहा है–

(अ) भोली (ब) सत्य

(स) लम्बी (द) प्रामाणिक

प्रश्न 2. कवि कैसा स्वप्न देखकर जाग गया–

(अ) बुरा स्वप्न (ब) प्रेम स्वप्न

(स) सुंदर स्वप्न (द) अच्छा स्वप्न

प्रश्न 3. 'आत्मकथ्य' कविता में जीवन की करूण कहानी सुना रहे हैं–

(अ) कवि के मित्र (ब) गंभीर अनंत नीलिमा

(स) गुंजार करते भौंरे (द) मौन व्यथा

प्रश्न 4. कविता में थका पथिक कौन है–

(अ) सूर्य (ब) मधुप

(स) कवि (द) यात्री

प्रश्न 5. छायावादी शैली में लिखी 'आत्मकथ्य' जिस पत्रिका में प्रकाशित हुई–

(अ) हंस (ब) इंदु

(स) सरस्वती (द) मतवाला

अतिलधूरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'आत्मकथ्य' कविता में थका पथिक कौन है?

उत्तर. प्रस्तुत कविता में थका पथिक स्वयं कवि जयशंकर प्रसाद है।

प्रश्न 2. 'यह लो, करते ही रहते हैं, अपना व्यंग्य मलिन उपहास'– इस पंक्ति का क्या आशय है?

उत्तर. कवि के अनुसार संसार में आत्मकथाएँ लिखने वाले अपनी दुर्बलताएं व असफलताएं सुनाकर स्वयं को ही व्यंग्य और उपहास का पात्र बना रहे हैं।

प्रश्न 3. 'सरलते !' सम्बोधन किसके लिए है?

उत्तर. 'सरलते !' सम्बोधन कवि की हदयगत सरलता के लिए है।

प्रश्न 4. 'गागर रीति' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर. कवि के अनुसार उसके जीवन में कुछ भी ऐसा उल्लेखनीय नही है जिसे वह आत्मकथन के माध्यम से लोगों को बताए। अपने जीवन को खाली गगरी के समान महत्त्वहीन बताना कवि की विनम्रता का परिचायक है।

लघूरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 5. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर. यात्री अपने साथ पथ के लिए जो भोजन आदि सामग्री लेकर चलता है उसे पाथेय कहते हैं। इसके सहारे यात्रा सुगम हो जाती है। कवि ने अपने जीवन की मधुर स्मृतियों को अपनी जीवन यात्रा का पाथेय बताया है। कवि के कठिन संघर्षपूर्ण जीवन में मधुर स्मृतियां ही उसका सहारा बनी है जिनसे वह जीवन को बिताने में समर्थ हो सका।

प्रश्न 6. 'आत्मकथ्य' कविता में कवि प्रसाद ने महान कवि की विनम्रता किस प्रकार व्यक्त की है?

शुभारंभ मिशन–100

उत्तर. जयशंकर प्रसासद एक महान कवि और प्रतिष्ठित साहितयकार थे। बहुमुखी प्रतिभा सपन्न और कामायनी जैसे अमर महाकाव्य के प्रणेता थे। इस पर भी उनका स्वयं को छोटा या साधारण व्यक्ति कहना उनकी विनम्रता, शालीनता और अंहकार शून्यता का परिचय देता है। अपनी दुर्बलताओं और असफलताओं को सार्वजनिक रूप में स्वीकार करना उनकी महानता को प्रमाणित करता है।

प्रश्न 7. 'उज्ज्वल' गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की' कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर. कवि कहना चाहता है कि वह अपनी प्रिया के साथ बिताए गए आनंदपूर्ण क्षणों का आत्मकथा में वर्णन नहीं कर पाएगा क्योंकि उसकी यह प्रेम कहानी अधूरी ही रह गई। उसने जिस प्रेम से परिपूर्ण दाम्पत्य जीवन का सपना देखा था वह कभी पूरा न हो सका। उसका सुख उसकी बाँहो मे आते आते भाग गया। आत्मकथा में उन मधुर प्रसंगो का वर्णन उसकी वियोग वेदना को फिर जगा देगा।

प्रश्न 8. ''छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ'' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर. कवि प्रसाद अपने सरल स्वभाव के कारण स्वयं को सामान्य व्यक्ति मानते हैं। उनका मानना है कि उनके जीवन में कोई ऐसी उल्लेखनीय विशेषता नहीं है जिसे वह अपनी आत्मकथा में बढ़ा चढ़ाकर एक 'बड़ी कथा' लिखे और सम्मान पाए। वे मानते हैं कि उनके जीवन से किसी को कोई प्रेरणा मिलना संभव नहीं है। अपने जीवन की उपलब्धियों को बड़ा बताकर उनका बखान करना उन्हे उचित नहीं लगता।

निबंधात्मक प्र□नोत्तर

प्रश्न 9. आत्मकथ्य कविता में प्रसाद जी के मानव जीवन के प्रति तथा आत्मकथा लेखन के प्रति क्या विचार सामने आते है?

उत्तर. इस रचना में कवि के ह्रदय के अनेक मनोभाव प्रकाशित हुए हैं। कवि ने भौरों तथा पत्तियों के उदाहरणों द्वारा मानव जीवन की नश्वरता की ओर संकेत किया है। कवि को मानव जीवन की दुखान्तता व्यथित करती है। कवि अपनी दुर्बलताओं की स्वीकार करते हुए कहते हैं कि अनेक धोखे खाने पर भी कवि ने अपना सारा जीवन छल कपट रहित तथा सरलतापूर्ण बिताया है। वह नहीं चाहता कि अपनी आत्मकथा में सरलता के कारण पहुँचे आघातों का विवरण देकर वह सरलता को व्यंग्य और उपहास का पात्र बनाए। लेखक की दृष्टि में आत्मकथा लेखन की कोई उपयोगिता नहीं है। अपनी भूलों और दुर्बलताओं को सार्वजनिक करना कवि की दृष्टि में निरर्थक है। कवि का मानना है कि आत्मकथा लेखन से जीवन की वेदनापूर्ण स्मृतियों को फिर से जगाना उचित नहीं है।

प्रश्न 10. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है?

उत्तर. कवि निम्नलिखित कारणों से आत्मकथा लिखने से बचना चाहता है–

(क) कवि का मानना है कि आत्मकथा लिखने वाले स्वंय को व्यंग्य और उपहास का पात्र बना लेते हैं।

(ख) आत्मकथा लिखने से कवि को अपने अंतरंग प्रेम प्रसंगो के विषय में भी लिखना पड़ेगा। कवि के लिए सुख के वे क्षण उसकी जीवन यात्रा में पाथेय के समान है। इनकी गोपनीयता भंग करना उसे उचित नहीं लगता है।

(ग) आत्मकथा में उन लोगों के नाम भी आएँगें जिन्होने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए कवि से छल किया। इन लोगों मे कवि के मित्र भी हो सकते हैं। कवि सज्जनतावश नहीं चाहता कि उसके मित्रों को लज्जित होना पड़े।

(घ) आत्मकथा लिखने से कवि को अपने मन की दुर्बलताओं, भूलों और जीवने के रीतेपन का उल्लेख करना होगा और कवि ऐसा करना नहीं चाहता है।

(ड़) कवि नहीं चाहता कि थककर शांत हो चुकी व्यथाएँ फिर से जागकर उसे पीड़ित करें।

प्रश्न 11. निम्नांकित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

किंतु कही ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले–
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

यह विडंबना! तेरी सरलते तेरी हंसी उडाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल–खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।

उत्तर. **<u>संदर्भ तथा प्रसंगः–</u>**

प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' में संकलित कवि जयशंकर प्रसाद की रचना 'आत्मकथ्य' से अवतरित है। इसमे कवि ने अपनी हृदयगत सरलता का परिचय दिया है। कवि पूर्व की मधुर स्मृतियों के बारे में सोचकर अपने मन को कष्ट नहीं देना चाहता है।

<u>व्याख्याः–</u>

कवि अपने मित्रों से कहता है कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे रस शून्य, खाली गागर जैसे जीवन के बारें में पढ़ कर तुम स्वयं को ही अपराधी समझने लगो। तुम्हें ऐसा लगे कि तुमने ही मेरे जीवन से रस चुराकर अपनी सुख की गगरी को भरा है। कवि कहता है कि मैं अपनी भूलों और ठगे जाने के विषय में बताकर अपनी सरलता की हँसी उड़ाना नहीं चाहता। कवि कहता है कि मैं अपने प्रिय के साथ बिताई चाँदनी रातों और मधुर क्षणों की कहानी किस बल पर सुनाऊँ। वो खिलखिलाकर हँसते हुए की गई बातें अब एक असफल प्रेमकथा बन चुकी है। उन्हे पुनः याद कर मैं अपने मन को व्यथित नहीं करना चाहता हूँ।

<u>वि□ोशः</u>– 1. कवि की सज्जनता व विनम्रता प्रकट हुई कि कवि के रसशून्य जीवन का कारण जान मित्र स्वयं को अपराधी समझेंगे।

2. कवि के हृदयगत सरलता प्रकट हो रही है।

3. वर्णन शैली आत्मकथात्मकता का पुट लिए हुए है।

4. खड़ी बोली का सहज प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 12. कविवर जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय लिखिए।

उत्तर. छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई में काशी के सुँधनी साहू परिवार में हुआ। प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। आपने स्वाध्याय से ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू तथा फारसी भाषाओं का ज्ञान प्रापत किया। आपने इन्दु नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया। 15 नवम्बर 1937 में आपका स्वर्गवास हो गया।

उनकी प्रमुख काव्य कृतियां है– चित्राधार, कानन–कुसुम, झरना, आँसू, लहर और कामायनी। आधुनिक हिन्दी की श्रेष्ठतम काव्य कृति मानी जाने वाली कामायनी पर इन्हे मंगलाप्रसाद पारितोषिक दिया गया। ये कवि के साथ–साथ सफल गद्यकार भी थे। अजातशत्रु, चंद्रगुप्त व स्कंदगुप्त इनके प्रमुख नाटक है।

छायावादी कविता की अतिशय काल्पनिकता, सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण, प्रकृति प्रेम, देश प्रेम और शैली की लाक्षधिकता इनकी कविता की प्रमुख विशेष्ताएँ है। ये छायावाद के प्रथम कवि के रूप में विख्यात हैं।

4.सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'घेर घेर घोर गगन' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

(अ) यमक (ब) अनुप्रास

(स) रूपक (द) उपमा (ब)

प्रश्न 2. 'अट नहीं रही है' कविता में किस ऋतु का वर्णन है–

(अ) हेमंत का (ब) शरद का

(स) बसंत का (द) ग्रीष्म का (स)

प्रश्न 3. 'उत्साह' कविता में कवि किसका आह्वान कर रहा है–

(अ) बादलों का (ब) मानवों का

(स) धरती का (द) वीरों का (अ)

प्रश्न 4. 'बाल कल्पना के से पाले' में निहित अलंकार है–

(अ) उपमा (ब) मानवीकरण

(स) यमक (द) पुनरूक्ति (अ)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 5. 'उत्साह' कविता में बादल किसका प्रतीक है और क्यों?

उत्तर. 'उत्साह' कविता में बादल नवजीवन, नव–परिवर्तन तथा क्रांति के प्रतीक हैं। क्योंकि बादल एक तरफ पीड़ित–प्यासे जन की आकांक्षा को पूरा करने वाले हैं तो वहीं बादल नयी कल्पना, नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति चेतना उत्पन्न करने वाले हैं।

प्रश्न 6. 'अट नहीं रही है' कविता में फाल्गुन की किस विशेषता का उल्लेख है?

उत्तर. फागुन की शोभा सर्वव्यापक है वह प्रकृति में समा नहीं जा रही है। हर तरफ फाल्गुनी वातावरण की मादकता, सौंदर्य और उल्लास है जिसमें प्रकृति की सुन्दरता दर्शनीय हो उठी है।

प्रश्न 7. घर–घर किससे भर जाता है?

उत्तर. फाल्गुन की बरसाती पवन जब फूलों की सुगंध लिए पलती हैं, तो हर घर सुगंधित पवन से महक उठता है।

प्रश्न 8. कवि निराला ने बादल से गरजने का आग्रह क्यों किया है?

उत्तर. कवि बादलों के गर्जन में नई चेतना जगाने वाला उत्साहवर्धक स्वर सुन रहा है तो वह चाहता है कि जड़ता से ग्रस्त समाज में बादल क्रांति के माध्यम से नवजीवन का संचार करे।

लघुत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 9. "तप्त धरा जल से फिर शीतल कर दो–बादल गरजो।" इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. वर्षा ऋतु में बादल अपने शीतल जल से धरती की तपन को शांत करते हैं। वह नन्हें पौधों को अपने जल से सींचता है। यहाँ तप्त धरा से कवि का आशय विभिन्न प्रकार के कष्टों से पीड़ित जनता का दुःख भी है। बादल में नवजीवन प्रदान करने की क्षमता है। अतः कवि ने बादल से धरती की तपन को शीतल करने व जगत के दुःखी प्राणियों में नवजीवन का संचार करने के लिए गरज कर बरसने का आह्वान किया है।

प्रश्न 10. 'अट नहीं रही' कविता का क्या संदेश है?

उत्तर. 'अट नहीं रही' कविता में निराला ने फाल्गुन की प्राकृति शोभा का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। फाल्गुन की बसंत शोभा प्रकृति में समा नहीं रही है, यह प्राकृतिक सौंदर्य हमें अत्यधिक प्रभावित करता है परंतु आज की नगरीय जीवन शैली में

शिक्षा विभाग मिशन–100

प्रकृति के मनमोहक दृश्य दुर्लभ हो गए है। मनुष्य अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए प्रकृति का अनुचित व अनावश्यक दोहन कर रहा है। जिससे संपूर्ण मानव सभ्यता संकट में है यह कविता हमें प्रकृति से निःस्वार्थ प्रेम करने की प्रेरणा प्रदान ंकरती है।

<u>निबंधात्मक प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 11. 'उत्साह' कविता में निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'उत्साह' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. 'उत्साह' निराला का एक आह्वान गीत है जिसके माध्यम से उत्साह, रचनात्मक क्रांति और नवचेतना का संदेश दिया गया है। कवि ने अपने संदेश का माध्यम बादल को बनाया है। वह बादल का आह्वान करता है कि वह गर्जन करते हुए सारे आकाश में छा जाए। उनका गर्जन जन–जन के हृदय में नवचेतना और नवपरिवर्तन की प्रेरणा भर दे।

बादलों की गर्जन कवि के मन में नई काव्य रचना की प्रेरणा जगा रही है। समाज मे ंआए ठहराव तथा जड़ता को दूर करने में साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है कवि ने बादल के आगमन को इसी संदर्भ में देखा है। कवि समाज के समर्थ लोगों को संदेश देना चाहता है कि समाज के पिछड़े और रूढ़िग्रस्त स्वरूप को बदलकर उसको नया प्रगतिशील रूप प्रदान करें।

बादल तीव्र परिवर्तन का वाहक है। बादल ग्रीष्म के ताप को मिटाकर संसार को शीतलता देता है। प्राणियों को नवीन जीवन प्रदान करता है। हमें भी शोषण, अभाव व कष्टों से पीड़ित मानवता के प्रति संवेदनशील होना होगा। उनके कष्टों को दूर कर उन्हे सुख प्रदान करना यही संदेश कविता के माध्यम से दिया गया है।

प्रश्न 12. ''अट नहीं रही है'' कविता में चित्रित फागुन के सौंदर्य का अपने शब्दों में संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर. कविता के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि फाल्गुन की प्राकृतिक शोभा दसो दिशाओं में व्यापत हो रही है। जिधर भी दृष्टि जाती है, उधर ही प्रकृति के नवीन रूप के दर्शन होते है। फाल्गुन की सुगंधित वायु घर–घर को महका रही है बासंती मस्ती से उड़ान भरते पक्षियों के कारण सारा आकाश पंखमय हो रहा है। फाल्गुन की शोभा इतनी आकर्षक है कि दृष्टि हटाए नहीं हटती है। कहीं हरे और लाल पत्तों से डालियाँ लदी है तो कहीं सुमंद गंध वाले फूल प्रकृति सुंदरी के कंठ में पड़ी पुष्प माला से प्रतीत हो रहे हैं। प्रकृति का यह रमणीय रूप न केवल बाहय जगत तक सीमित है बल्कि मनोजगत में भी समाया हुआ है। तभी तो कवि की सौंदर्य लोलुप दृष्टि इस सुन्दर बासंती दृश्य से हटाए नहीं हट रही है।

<u>कवि परिचय</u>

प्रश्न 13. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का साहित्यिक परिचय लिखिए–

उत्तर. छायावादी कवि चतुष्टम के रूद्र कहलाने वाले निराला का जन्म 1896 में बंगाल के मेदिनीपुर गाँव में हुआ। आपने स्वाध्याय द्वारा हिंदी, संस्कृत तथा बांग्ला भाषाओं का अध्ययन किया। निराला ने हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं को अपनी विलक्षण प्रतिभा से अलंकृत किया। काव्य रचना के अतिरिक्त यह छायावाद, रहस्यवाद एवं प्रगतिवाद तीनों धाराओं में लिखने वाले कवि है। इन्होंने मतवाला, सुधा एवं समन्वय पत्रिकाओं का संपादन किया।

निराला की प्रमुख रचनाएँ है– अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, नए पत्ते, राम की शक्तिपूजा सरोज स्मृति तथा सरोज स्मृति इनकी विशेष ख्याति प्राप्त कृतियाँ है। 1961 ई. में इस निराले साहित्यकार का देहावसान हो गया।

प्रश्न 14. निम्नांकित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

बादल, गरजो!–

घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के–से पाले,
विद्युत–छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो–बादल, गरजो!

उत्तर. संदर्भ तथा प्रसंगः– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' में संकलित कवि निराला की कविता 'उत्साह' से लिया गया। यहाँ कवि बादलों की गर्जना में उत्साह, क्रांति तथा नवचेतना के स्वर सुन रहा है।

व्याख्याः– कवि बादल के गर्जन में नवचेतना और सृजनात्मक उत्साह के स्वर सुन रहा है। इस आह्वान गीत में वह बादल से गरजने का आग्रह करते हुए कहता है कि–हे बादल तुम गरज गरज कर इस आकाश को घेरते हुए इसमें छा जाओ। सुंदर काले घुँघराले बालों वाले बालक जैसे बादल! तुम गरजो! तुम्हारे ह्रद में बिजली की चमक जैसा उत्साह है, तुम कवि के समान सृजनात्मक और संपूर्ण संसार में नए जीवन का संचार करने वाले हो। अपनी वज्र जैसी विध्वंसक शक्ति को छिपाते हुए तुम मुझे नव काव्य रचना की प्रेरणा प्रदान कर रहे हो। मेरे हदय में नई कविता को भरते हुए हे बादल! तुम गरजो!

विशेषः– 1. कवि बादलों के गर्जन में नव चेतना के स्वर सुनकर उत्साह से परिपूर्ण है।
2. काव्यांश में लत्यित कल्पना तथा क्रांति चेतना दोनों की व्यंजना हुई है।
3. अनुप्रास, पुनरूक्ति प्रकाश व उपमा अलंकार का सौदर्य देखते ही बनता है।
4. खड़ी बोली हिन्दी का नाद सौंदर्य कवि के काव्य कौशल को प्रदर्शित करता है।

.

5.नागार्जुन

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'बाँस और बबूल' किसके प्रतीक हैं?

(अ) रूखेपन के (ब) सरसता के

(स) दुष्टता के (द) मानवता के (अ)

प्रश्न 2. आधुनिक कबीर किस प्रगतिशील कवि को कहा जाता है?

(अ) निराला (ब) नागार्जुन

(स) पंत (द) त्रिलोचन (ब)

प्रश्न 3. सूरज की किरणों का रूपांतर है–

(अ) फसल (ब) हवा

(स) मृदा (द) पानी (अ)

प्रश्न 4. फसल क्या है–

(अ) नदियों के पानी का जादू

(ब) हाथों के स्पर्श की महिमा

(स) भूरी काली संदली मिट्टी का गुण धर्म (द)

(द) उपरोक्त सभी

अति लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 5. शिशु की मुस्कान कैसी है?

उत्तर. शिशु की मुस्कान दंतुरित है।

प्रश्न 6. शिशु ने कवि का कैसे पहचाना?

उत्तर. शिशु ने अपने कवि पिता को तब पहचाना जब शिशु की माँ ने उसका अपने पिता से प्रथम परिचय करवा माँ ने उसे प्रेरित किया तो वह कवि को देखकर मुस्कुराने लगा।

प्रश्न 7. 'फसल' कविता में कवि ने मिट्टी का गुणधर्म किसे कहा है?

उत्तर. मिट्टी का गुणधर्म है कि वह खेत में बीज को उगने में सहायता देती है। मिट्टी के बिना फसल नहीं उग सकेगी।

प्रश्न 8. 'कोटि–कोटि' हाथों के स्पर्श की गरिमा' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर. फसलों के तैयार करने में करोड़ों किसानों और श्रमिकों का परिश्रम लगा होता है। उनके उन परिश्रमी हाथों के स्पर्श की महिमा अतुलनीय है जो उन्हें गौरव का अहसास करती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 9. ''छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी में खिल रहे जलजात'' कहने से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर. शिशु के मुस्कुराते मुख और उसके धूल धूसरित कोमल अंगो को देखकर कवि भाव विभोर हो जाता है। शिशु के धूल सने अंग को देखकर कवि को लगता है कि मानो कमल तालाब को छोड़कर मेरी कुटिया में खिल गए हो। शिशु के अंगो को कवि ने तालाब में उत्पन्न होने वाले कमल के समान कोमल बताया है।

प्रश्न 10. ''तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान

मुझे लगती बड़ी ही छविमान।'' उपरोक्त पंक्तियो का भाव स्पष्ट कीजिए।

शैक्षणिक मिशन–100

उत्तर. जब कवि का शिशु पुत्र उसकी ओर कनखियो से देखता है क्योकि उसकी अपने पिता से पहचान नई नई है। कनखियों से देखते समय जब पिता पुत्र की आँखे मिलती है तो शिशु मुस्करा देता है। उस समय शिशु की छोटे छोटे दाँतो से युक्त मुस्कान कवि को बड़ मनमोहक और सुंदर लगती है।

प्रश्न 11. ''उँगलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क'' का आशय स्पष्ट कीजिए?

उत्तर. मधुपर्क दूध, दही, घी, शहद तथा जल के मिश्रण से बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ है। प्राचीन समय में अतिथि के प्रति सेवा व श्रद्धा का भाव प्रकट करने के लिए उनका स्वागत मधुपर्क अर्पित करके किया जाता था। इस काव्यांश में मधुपर्क का सांकेतिक अर्थ लिया गया है–

माँ द्वारा मधुर वात्सल्य भाव से शिशु का लालन पालन किया जाना। कवि लम्बे समय तक घर से बाहर रहते हैं। अतः शिशु को अपनी माँ का स्नेह व दुलार ही अधिक प्राप्त हुआ है जिसे कवि ने मधुपर्क की संज्ञा दी है।

प्रश्न 12. फसल कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर. फसल कविता यह संदेश देती है कि फसल प्रकृति तथा मनुष्य के श्रम का परिणाम है। किसान खेत को जोतकर, बीज बोकर उसमें फसल उगाता है तदुपरान्त जल, मिट्टी, वायु, प्रकाश और मानव श्रम के संयोग से फसल तैयार होती है। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति और मानव की साझेदारी आवश्यक है। जल, वायु, मिट्टी तथा सूर्य का प्रकाश प्रकृति की देन है और मनुष्य के हाथ पुरूषार्थ व श्रम का प्रतीक है। प्रकृति और पुरूषार्थ दोनो के मेल से फसल तैयार होती है।

<u>कवि परिचय</u>

प्रश्न 13. कविवर नागार्जुन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।

उत्तर. प्रगतिवादी कवि नागार्जुन का बिहार के दरभंगा में सन् 1911 में हुआ। इनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र था। ये मैथिली भाषा में यात्री उपनाम से लिखा करते थे। लोकजीवन से गहरा सरोकार रखने वाले नागार्जुन ने भ्रष्टाचार, राजनीतिक स्वार्थ और समाज की पतनशील स्थितियों पर करारे व्यंग्य किए हैं, अतः इन्हें आधुनिक कबीर भी कहा जाता है। ये वास्तविक अर्थों में जनकवि हैं। सामयिक बोध से गहराई से जुड़े नागार्जुन की प्रमुख रचनाएँ हैं– युगधारा, सतरंगे पंखो वाली, हजार–हजार बाँहो वाली, तुमने कहा था आदि 1113 ई. में श्रीलंका गए जहा बौद्ध धर्म ग्रहण किया तथा नाम नागार्जुन रखा।

<u>निबंधात्मक प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 14. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।

(ख) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल। बाँस था कि बबूल?

उत्तर. (क) काव्य परंपरा में कमल के फूल से शरीर के सुंदर अंगो की तुलना की जाती है। शिशु की दंतुरित मुसकान भरे मुख और उसके धूल धूसरित कोमल अंगों को देखकर कवि का मन उल्लास से भर उठता है। वह भाव विभोर हो जाता है उसे लगता है मानो कमल पुष्प तालाब को छोड़कर उसकी झोंपड़ी में आकर खिल रहे हों।

प्रश्न 15. निम्नांकित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

एक के नहीं,
दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादूः
एक के नहीं,
दो के नहीं,

लाख लाख कोटि–कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमाः

एक की नहीं,

दो की नहीं,

हजार–हजार खेतों की मिट्‌टी का गुणधर्मः

उत्तर. संदर्भ तथा प्रसंगः– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्‌यपुस्तक 'क्षितिज' में संकलित कवि नागार्जुन की कविता 'फसल' से लिया गया है। कवि के अनुसार फसल प्रकृति तथा मनुष्य के श्रम का परिणाम है। जिसमें करोड़ो श्रमिक व किसानों की मेहनत लगती है।

व्याख्याः– इस काव्यांश में फसल तैयार होने में मनुष्य के पुरूषार्थ और प्रकृति के संयोग को निरूपित किया गया है। कवि कहता है कि खेतों में लहलहाती ये फसलें किसी एक खास नदी के जल से नहीं अपितु, सैंकड़ो नदियों के जल से सिंचित होकर उगती और बढ़ती है। इन्हें तैयार करने में एक–दो नहीं, लाखों करोड़ो किसान और मजदूर मेहनत करते हैं। हजारों खेतों की भिन्न–भिन्न गुणों वाली मिट्‌टियाँ इनको पोषण प्रदान करती है। इन फसलों को प्राप्त करने में करोड़ो देशवासियों और प्रकृति का समान योगदान निहित है।

विशेषः– 1. कवि ने फसल को नदियों के जल का जादू तथा हाथों स्पर्श की गरिमा और खेतों की मिट्‌टी का गुणधर्म बताया है।

2. अपनी बात पर जोर देने के लिए कवि ने शब्दों की बार–बार आवृति की है।

3. पुनरूक्तिप्रकाश अलंकार का सुदंर प्रयोग हुआ है।

4. सरल तथा प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग हुआ है।

शेखावाटी मिशन–100

6.गिरिजाकुमार माथुर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'छाया मत छूना' कविता में 'छाया' किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है–

(अ) अतीत की दुखद स्मृतियों के लिए

(ब) अतीत की सुखद स्मृतियों के लिए

(स) मनुष्य की छाया के लिए

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं (ब)

प्रश्न 2. 'हर चन्द्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है' यहाँ कृष्णा शब्द का अर्थ है–

(अ) श्री कृष्ण (ब) राधा

(स) उज्ज्वल (द) काली (द)

प्रश्न 3. प्रभुता के शरण बिंब को कवि ने बताया है–

(अ) यथार्थ (ब) मृगतृष्णा

(स) पलायन (द) विंब (ब)

प्रश्न 4. चाँदनी कवि को किस की याद दिलाती है–

(अ) प्रिया के केशों में गुंथे फूलों की

(ब) मधुर प्रसंगो की

(स) अपनी सुखद स्मृतियों की

(द) शरद रातों की (अ)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 5. 'जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. इस पंक्ति में कवि ने मनुष्य को जीवन के कठोर सत्य का साहस के साथ सामना करने के लिए प्रेरित किया है। अतीत को भूलकर मनुष्य को वर्तमान और भविष्य संवारना चाहिए तभी वह सुखी व सफल हो सकता है।

प्रश्न 6. 'क्या हुआ जो खिला फूल रस बसंत जाने पर' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. कवि कहता है कि माना कि बसंत ऋतु में फूलों का खिलना अच्छा लगता है। जीवन में उचित अवस्था में उपलब्धियां प्राप्त करना सुखदायी होता है। अब इस दुख और असफलता को भूला जाना ही अच्छा है।

प्रश्न 7. 'दुविधा–हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं' का आशय प्रकट कीजिए–

उत्तर. जब मनुष्य का मन अनिश्चय में डूबा होता है तो वह उचित अनुचित का निर्णय नहीं कर पाता। उसे सफलता प्रापत करने का सही मार्ग नहीं सूझता।

प्रश्न 8. मनुष्य की कौनसी इच्छाएं उसे भटकने को बाध्य करती है?

उत्तर. कवि ने यश, वैभव और प्रभुता को भ्रमित करने वाला बताया है। इन्हें पाने के लिए व्यक्ति जीवन भर भटकता है पर कभी संतुष्ट नहीं होता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 9. भाव स्पष्ट कीजिए–

प्रभुता का शरण–बिंब केवल मृगतृष्णा है।

हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

शिक्षा मिशन–100

उत्तर. कवि के अनुसार जीवन में प्रभुता या बड़प्पन की लालसा केवल एक छल है। जिस प्रकार हरिण रेगिस्तान में पानी के भ्रम में भटकता रहता है वैसे ही मनुष्य भी जीवन भर यश, वैभव व सुखों के पीछे भटकता रहता है। यहाँ हर चाँदनी में एक काली रात छिपी है। अर्थात् हर सुख के साथ दुख जुड़ा हुआ है अतः मनुष्य को यथार्थ को स्वीकार करना चाहिए।

प्रश्न 10. 'जितना की दौड़ा तू उतना ही भरमाया' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर. कवि के अनुसार यश, धन–वैभव, मान सम्मान ये सभी मनुष्य को भ्रमित करने वाले हैं। कवि का मानना है कि सुख इन चीजों में नहीं है। मनुष्य इन्हें प्राप्त करने का जितना प्रयास करता है उतना ही भरमाया रहता है। मनुष्य को जीवन के कठोर यथार्थ को समझ कर उसे स्वीकार कर जीवन बिताना चाहिए।

प्रश्न 11. 'छाया मत छूना' कविता में कवि ने किस काव्य शैली को अपनाया है?

उत्तर. कवि ने 'छाया मत छूना' कविता में बिंब प्रधान प्रतीकात्मक शैली को अपनाया है। इसके लिए कवि विगत जीवन की यादों के लिए तथा भावी जीवन के सपनों का प्रतीक है। इस प्रकार 'दामिनी' मिलन के क्षणों की, 'चंद्रिका' सुख के दिनों की, 'कृष्णा' दुखों की तथा 'चाँद का खिलना' आनंद के अनुभव का प्रतीक है। कवि ने प्रतीकात्मक शैली को अपनाकर कथ्य को अधिक प्रभावशाली बनाया है।

प्रश्न 12. 'देह सुखी हो पर मन के दुःख का अंत नहीं।' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. उपर्युक्त पंक्ति में कवि ने उस अवस्था का वर्णन किया है, जब मनुष्य शरीर से स्वस्थ और सुखी होने पर भी मन से व्याकुल, अधीर और बैचेन होता है। ये बड़ी कष्टप्रद स्थिति है। ऐसी स्थिति में मनुष्य दुविधा में पकड़कर सही निर्णय नहीं ले पाता और उसका मन दुखी और बैचेन रहता है?

प्रश्न 13. 'छाया मत छूना' कविता में किन जीवन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी गई है।

अथवा

'छाया मत छूना' कविता के द्वारा कवि ने क्या संदेश दिया हैं?

उत्तर. 'छाया मत छूना' कविता में कवि संदेश देना चाहता है। कि मनुष्य को अतीत की मधुर स्मृतियों में डूबकर अपने वर्तमान जीवन के दुःखों को नहीं बढ़ाना चाहिए। अपने अतीत की छाया से वर्तमान को प्रभावित नहीं करना चाहिए सपनों और स्मृतियों में खोए रहने के बजाए जीवन के कठोर यथार्थ का साहस के साथ सामना करना चाहिए और भविष्य को सुधारना चाहिए।

कवि ने आशावाद का संदेश दिया है। अतीत को भूलाकर आगामी जीवन को सुखी और सफल बनाने पर जोर दिया है। विगत की सुखद काल्पनिकता से चिपके रहकर वर्तमान से पलायन की अपेक्षा कठिन यथार्थ से परिचित होना ही जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिए। जीवन के सत्य को छोड़कर उसकी छायाओं से भ्रमित होकर माया में उलझे रहना उचित नहीं है।

जीवन में सुख और दुःख दोनों की उपस्थिति है, अतः आत्मविश्वास के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देती हुई कविता जीवन मूल्यों में विश्वास जगाती है।

निबंधात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 14. कविवर गिरिजा कुमार माथुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।

उत्तर. कविवर गिरिजाकुमार माथुर का जन्म सन् 1918 में गुना मध्यप्रदेया में हुआ। इन्होंने झाँसी से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद अंग्रेजी में एम.ए व एल.एल.बी. की उपाधि भी अर्जित की। कुछ समय तक वकालत करने के बाद आकाशवाणी और दूरदश्रन में भी कार्यरत हुए। उनका निधन 1994 में हुआ।

नयी कविता के कवि माथूर रोमानी मिजाज के कवि माने जाते हैं। ये भावुक कलाकार थे। इनकी कविताओं में गहरी मानवीय संवेदनाएं प्रकट हुई है। इन्होंने विषय की मौलिकता के साथ कविता के शिल्प पक्ष को भी निखारा हैं। माथुर जी 13 वर्ष की उम्र में ही कविता करने लगे थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, भीतरी नदी की यात्रा आदि। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'नई कविताः सीमाए और संभावनाए' नामक आलोचना ग्रंथ भी लिखा।

प्रश्न 15. निम्नांकित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

दुविधा हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुःख है न चाँद खिला शरद रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

उत्तर. संदर्भ तथा प्रसंगः– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज में संकलित कवि गिरिजाकुमार माथुर की कविता 'छाया मत छूना' से लिया गया है। इस काव्यांश में कवि ने मानव को अतीत की स्मृतियों को भूलकर आशावादी होने का संदेश दिया है।

व्याख्याः– कवि कहता है कि यह सच है कि दुविधाओं से घिरे होने के कारण तुम्हारा साहस क्षीण हो गया और तुम्हे आगे बढ़ने का उचित मार्ग नहीं सूझ रहा है। इसी कारण तुम्हारा शरीर तो स्वस्थ और सुखी है पर मन असीम दुःख से भरा है। तुम्हें इस बात का दुख है कि शरद की रात में भी तुम्हें चन्द्रमा के दर्शन नहीं हुए अर्थ जब तुम्हें सुख प्राप्त होना चाहिए था तो तुम उससे वंचित रह गए। जिस प्रकार बसंत ऋतु निकल जाने पर फूल के खिलने का महत्व नहीं रह जाता उसकी प्रकार जीवन की उचित अवस्था में तुम्हें सुख व प्रसन्नता नहीं प्राप्त हो सकी तो क्या हुआ। अब उन दुखों को भूलकर भविष्य को संवारना चाहिए। यदि विगत सुखों को याद करोगे तो दुख दुगुना होगा।

विशेषः– 1. दुःख, दुविधा और असफलताओं को भूलकर मनुष्य को भविष्य संवारने का संदेश दिया गया है।

2. अनुप्रास और प्रश्नालंकार का प्रयोग हुआ है।

3. सरल और प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली हिंदी भाषा का प्रयोग हुआ है।

शेखावाटी मिशन–100

7.ऋतुराज

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'कन्यादान' कविता में कवि ने अंतिम पूँजी किसे बताया है–

(अ) माँ को (ब) लड़की को

(स) स्त्री जीवन को (द) आभूषणों को (ब)

प्रश्न 2. माँ अपनी अंतिम पूँजी किसे समझ रही थी?

(अ) अपने घर को (ब) आभूषणों को

(स) बेटी को (द) अपने पास बचे धन को (स)

प्रश्न 3. 'कितना प्रामाणिक था उसका दुख' किसका दुःख प्रामाणिक था–

(अ) माँ का (ब) बेटी का

(स) पिता का (द) परिवार का (अ)

प्रश्न 4. 'दुख बाँचना' से आशय है–

(अ) दुःख पढ़ना (ब) दुःख सहन करना

(स) दुःख को समझ पाना (द) दुःख बाँटना (स)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 5. 'लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखना' से माँ का क्या आशय है?

उत्तर. माँ का आशय है कि उसकी बेटी अपने लड़की होने पर गर्व का अनुभव करें परन्तु किसी प्रकार की हीनता की भावना से ग्रस्त न हो। वह स्वयं को अबला न समझे। स्वाभिमान के साथ जिए।

प्रश्न 6. माँ को बेटी अंतिम पूँजी क्यों लग रही थी?

उत्तर. माँ परिवार में बेटी के साथ अपने सुख दुख जितनी सहजता व गोपनीयता से साझा कर पाती है उतना किसी अन्य सदस्य के साथ नहीं। उसे लग रहा था कि बेटी के जाने के बाद उसके जीवन में शून्यता आ जाएगी। इसलिए बेटी उसकी अंतिम पूंजी थी जो उससे छिनने जा रही थी।

प्रश्न 7. माँ ने आभूषणों को स्त्री जीवन के बंधन क्यों कहा है?

उत्तर. वस्त्र और आभूषण मन को भ्रमित करने वाले मोहक शब्दों के समान होते है। स्त्री इनके मोह में पड़कर जीवन में अनेक प्रकार के बंधनो को स्वीकार कर लेती है।

प्रश्न 8. कवि ने माँ के दुख को प्रामाणिक क्यों कहा है?

उत्तर. कवि ने माँ–बेटी से बिछुड़ने के माँ के दुख को प्रामाणिक माना है। उसमें औपचारिकता या दिखावा नहीं है।

निबंधात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 9. 'आग रोटियाँ सेकने के लिए है
जलने के लिए नहीं।'

(क) इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की किस स्थिति की ओर संकेत किया गया है?

(ख) माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों जरूरी समझा?

उत्तर. (क) इन पंक्तियों में स्त्री की शोचनीय सामाजिक स्थिति की ओर संकेत किया गया है। वह पूरे परिवार की पूरे समर्पण से सेवा करती है लेकिन उसके गुणों का काई मूल्य नहीं होता है। क्रूर और धनलोलुप उसे दहेज आदि के लिए प्रताड़ित करते हैं। उसे जल मरने को विवश किया जाता है या जलाकर मार डाला जाता है। इन पंक्तियों में समाज की इसी कुरीति पर करारा व्यंग्य किया गया है।

श्रेष्ठतादायी मिशन–100

(ख) माँ को स्त्री जीवन का पर्याप्त अनुभव है। वह जानती है कि स्त्री को कैसी कठिन समस्याएँ जानती है कि स्त्री को कैसी कठिन समस्याएँ और उत्पीड़न सहन करने पड़ते हैं। लेकिन लड़की अभी दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करने जा रही है। वह निश्छल, सरल्य और भोली है और विवाह के धुँधले सुखद सपनों में लीन है। अतः माँ उसे पहले ही भावी जीवन की चुनौतियों के बारे में सचेत करना चाहती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 10. 'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियो की।'
इन पंक्तियो को पढ़कर लड़की की जो छवि आपके सामने उभर कर आती है, उसे शब्द बद्ध कीजिए।

उत्तर. इन पंक्तियो को पढ़कर हमारे मन में एक ऐसी सरल, भोली और भावुक लड़की की छवि उभरती है जो अपने विवाह के धुंधले, सुंदर मधुर सपनों में खोई हुई है। विवाह उसके लिए धूमधाम से पूर्ण उत्सव है। उसका वस्त्र–आभूषणों से सज धज कर ससुराल जाना, उसकी सुंदरता पर सभी का मोहित होना, पति व सास ससुर का प्रेम पाना आदि कल्पनाएँ लड़की के मन में छाई हुई है। अभी वह जीवन के कठोर यथार्थ से अपरिचित है।

प्रश्न 11. 'कन्यादान' शब्द द्वारा वर्तमान में कन्या के दान की बात करना कहाँ तक उचित है?

उत्तर. कन्या के साथ दान शब्द बड़ा व्यंग्यात्मक और नारी की गरिमा पर आघात करने वाला प्रतीत होता है। कन्या कोई वस्तु नहीं, जीता जागता व्यक्तित्व है। अन्नदान, धनदान, भूमिदान या गोदान की तरह क्या मनुष्य का भी दान किया जाता सभ्य समाज पर कलंक नही है।

कन्यादान अब केवल वैवाहिक कर्मकाण्ड की एक औपचारिकता भर बनकर रह गया है। जब स्त्री स्वावलम्बी और सशक्तिकरण की बाते हो रही हों तो कन्यादान की बात एक मजाक सी प्रतीत होती है। विवाह एक सामाजिक समझौता है वहाँ कन्या दान की वस्तु बल्कि समानता की अधिकारी है।

प्रश्न 12. 'कन्यादान' कविता के संदेश या उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर. 'कन्यादान' कविता का उद्देश्य नारी को जाग्रत करके अपने व्यक्तित्व, अपनी क्षमता और अपने गुणों से परिचित कराना है। वस्त्र, आभूषण, रूप सौंदर्य आदि नारी के व्यक्तित्व को नाना प्रकार के बंधनो में बँधकर उसे जीवन भर पुरूष पर आश्रित बनााए रखने के मोहक षड्यंत्र है।

नारी को सरलता, ममता, धैर्य, निस्वार्थता आदि स्वाभाविक गुणों को धारण करते हुए स्वयं को हीनता, दीनता तथा दुर्बलता से मुक्त करना चाहिए। उसे समाज की दूषित मान्यताओं की उपेक्षा और तिरस्कार करना चाहिए जो उसे बंधनो में बाँधकार उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व की हत्या करते हैं।

प्रश्न 13. 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को क्या–क्या सीख दी?

उत्तर. माँ ने बेटी को निम्नलिखित सीख दी–

1. अपनी सुंदरता पर रीझकर धोखे में मत रहना।
2. अत्याचार और अन्याय का समझबूझ और साहस से सामना करना। निराशा या हताशा में जल मरने की नहीं सोचना।
3. वस्त्र और आभूषणों के मोह में फंसकर आजीवन दासता के बंधन में मत बंध जाना।
4. स्त्रियोचित गुणों को धारण करते हुए भी अपने स्वाभिमान से समझौता नहीं करना।
5. दीनता, हीनता और दुर्बलता से मुक्त रहना।

प्रश्न 14. निम्नांकित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–
माँ ने कहा पानी में झाँककर

अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

उत्तर. **<u>संदर्भ तथा प्रसंग</u>**:— प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' में संकलित कवि ऋतुराज की कविता 'कन्यादान' से लिया गया है। इस पद्यांश में एक माँ अपनी बेटी के विवाह के अवसर पर अपने जीवन के अनुभवों से संचित जीवनोपयोगी सीख दे रही है। वह उसे बनावटी सामाजिक आदर्शों से मुक्त हो सशक्त और स्वाभिमानी बनने की प्रेरणा दे रही है।

<u>व्याख्या</u>:— विवाह के बाद विदा होती पुत्री को माँ अपने अनुभव से शिक्षा देते हुए कहती है कि बेटी! ससुराल में अपनी सुंदरता पर मुग्ध होकर इतराना नहीं। यह सुदंरता किसी के लिए प्रसन्नता तो किसी के लिए ईर्ष्या का कारण भी बन सकती है। आग केवल रोटी सेंकने के लिए है। कभी भी समस्याओं से निराश होकर हताशा में जल मरने की मत सोचना। चुनौतियों का समझबूझ और साहस के साथ सामना करना। सुन्दर वस्त्र और कीमती गहनों के भ्रम में मत पड़ना। ये नारी को बंधन में डालने वाली बेड़ियाँ है। ये नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को समाप्त करने के मधुर षड्यंत्र हैं। इनके मोह जाल में मत फंसना। तू लड़की है तो स्त्रियोचित गुणों को धारण करना लेकिन अबला बनकर अन्याय मत सहना। सहनशीलता के साथ स्वाभिमान को मत भुलाना।

<u>व्याख्या</u>:— 1. माँ द्वारा दी गई सीख आज के सामाजिक परिवेश में उपयोग ही और व्यावहारिक है।

2. कवि ने इसमें प्रतीकात्मक तथा लाक्षणिक शैली को अपनाया है।

3. भाषा में प्रवाह है तथा वह भावानुकूल है।

4. लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 15. कविवर ऋतुराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।

उत्तर. कवि ऋतुराज का जन्म राजस्थान के भरतपुर में सन् 1940 में हुआ। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से अंग्रेजी में एम.ए किया। ऋतुराज के अब तक प्रकाशित काव्य संग्रहो में 'पुल पर पानी' ,'एक मरणधर्मा ओर अन्य' , 'सुरत निरत' तथा 'लीला मुखारविन्द' प्रमुख हैं। उन्हें पहल सम्मान, परिमल सम्मान, मीरा पुरस्कार तथा बिहारी पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

मुख्यधारा से अलग समाज के उपेक्षित लोगों को ऋतुराज ने अपने लेखन का विषय बनाया है। उनकी कविताओं में दैनिक जीवन के अनुभव का यथार्थ है और वे आम जीवन में व्याप्त, चिन्ताओं, विसंगतियो और सामाजिक जीवन की विडम्बनाओं की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करते है। उनकी भाषा अपने परिवेश और लोक जीवन से जुड़ी हुई है।

8. नेताजी का चश्मा (स्वंय प्रकाश)

रिक्त स्थान

प्रश्न 1. चश्मे वाले को लोग ....कहते थे।

प्रश्न 2. मूर्ति देखते ही 'दिल्ली चलो और ....बगैरह नारे याद आने लगे थे।

प्रश्न 3. शहर के मुख्य बाजार के मुख्य चोराहे पर .... की एक संगमरमर की प्रतिभा थी।

प्रश्न 4. सिर से कंधे तक की मूर्ति को .... कहते है।

प्रश्न 5. नेताजी की मूर्ति .... की बनी हुई थी ।

उत्तर.:– (1) कैप्टन (2) तुम मुझे खून दो (3) नेताती सुभाष चन्द्र बोस (4) वस्ट (5) संगमरमर

(सही / गलत)

प्रश्न 1. कैप्टन एक बेहद बूढा मरियल सा लँगड़ा आदमी था (सही / गलत)

प्रश्न 2. हालदार साहब एक सकारात्मक सोच के देशभक्त व्यक्ति थे। (सही / गलत)

प्रश्न 3. पान वाला एक काला, मोटा और खुशमिजाज आदमी था। (सही / गलत)

प्रश्न 4. नेताजी की मूर्ति पर चश्मा चश्मेवाला लगाता था । (सही / गलत)

प्रश्न 5. नेताजी का चश्मा पाठ देशप्रेम व देशभक्तो के प्रति समान करना सिखाता है। (सही / गलत)

उत्तर.:– (1) सही (2) सही (3) सही (4) गलत (5) सही

एक शब्द वाले प्रश्न

प्रश्न 1. नेताजी का चश्मा पाठ में किस देशभक्त की बात की जा रही है।

उत्तर. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

प्रश्न 2. हर पन्दहवे दिन कम्पनी के काम से कस्बे से कौन गुजरता था।

उत्तर. हालदार साहब।

प्रश्न 3. कभी सड़क पक्की करवाना, पेशाबघर बनवाना , कबूतरो की छतरी बनवाना कभी कवि सम्मेलन करवाने का कार्य कस्बे में कौन करता था?

उत्तर. कस्बे की नगरपालिका

प्रश्न 4. नेताजी के बगैर चश्में वाली मुर्ति किसे आहत करती थी ।

उत्तर. चश्मेवाले को अर्थात कैप्टन को

प्रश्न 5. मूर्ति किसने बनाई थी?

उत्तर. कस्बे के अध्यापक , मास्टर मोतीलाल

अतिलघूतरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कहानी नेताजी का चश्मा के लेखन कौन है?

उत्तर. कहानी 'नेताजी का चश्मा ' सुप्रसिद्ध कहानीकार स्वयं प्रकाश द्धारा लिखित है।

प्रश्न 2. लेखक स्वयंप्रकाश द्धारा लिखित किन्ही दो कहानी संग्रह के नाम लिखिए।

उत्तर. (1) सूरज कब निकलेगा (2) आदमी जात का आदमी।

प्रश्न 3. लेखक स्वंय प्रकाश के उपन्यासो के नाम लिखिए।

उत्तर. (1) बीच मे विनय (2) जलते जहाज पर (3) ईधन इनमे महत्वपूर्ण उपन्यास है।

प्रश्न 4. 'चश्मा' लेखक की नजर में किसका प्रतीक है।

उत्तर. लेखक की नजर में चश्मा देशप्रेम एवं देशभक्तों को सम्मान देने का प्रतीक है।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 5. नेताजी की मूर्ति पर चश्मा कौन लगाता था और क्यों?

उत्तर. नेताजी की मूर्ति पर चश्मा बूढ़ा कैप्टन चश्मे वाला लगाता था वह नेताजी के प्रति सम्मान व आदर प्रकट करने की भावना से चश्मा लगाता था।

प्रश्न 6. चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे।

उत्तर. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के प्रति चश्मे वाले का अत्यन्त सम्मान भाव देखकर लोग उसे कैप्टन कहकर पुकारते थे।

प्रश्न 7. हालदार साहब उस कस्बे से क्यों गुजरते थे।

उत्तर. हालदार साहब किसी कम्पनी में काम करते थे अतः कम्पनी के काम से उनको कस्बे से आना जाना होता व हर पन्द्रवे दिन कस्बे से गुजरते थे।

प्रश्न 8. नेताजी की मूर्ति की बनाबट में क्या कमी थी ।

उत्तर. नेताजी की मूर्ति में चश्मा पत्थर का नही था, शायद मूर्ति बनाने वाला पत्थर का चश्मा बनाना भूल गया था।

प्रश्न 9. पान वाला कैसा था?

उत्तर. पान वाला काल मोटा व खुशमिजाज आदमी था वह सदा मुँह मे पान ठुँसे रखता था।

प्रश्न 10. मूर्ति किस स्वतंत्रता सेनानी की थी और कैसी थी?

उत्तर. मूर्ति नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की थी, मूर्ति संगमरमर की थी टोपी की नोक से कोट के दुसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची, जिसे बस्ट कहते है। यह बहुत सुन्दर थी

प्रश्न 11. चश्मे वाले का व्यक्तिव कैसे था

उत्तर. चश्मे वाला एक बेहद बूढा मरियल–सा लंगडा आदमी था। सिर पर गाँधी टोपी और आँखो पर काला चश्मा लगाता था वह फेरी लगाकर चश्मे बेचता था।

प्रश्न 12. नेताजी की मूर्ति बनाने का कार्य किसे सौंपा गया व क्यों?

उत्तर. देश के अच्छे मूर्तिकारों की जानकारी न होने, धन संसाधनों का अभाव व स्थानीय कलाकारों को ही अवसर देने के कारण कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के मास्टर को मूर्ति बनाने का कार्य सौंपा गया।

प्रश्न 13. हालदार साहब ने कैप्टन को कैसा समझा?

उत्तर. हालदार साहब ने सोचा कि कैप्टन सेना का कोई भूतपूर्व कैप्टन होगा अथवा नेताजी की आजाद हिंद फौज में कैप्टन रहा होगा।

प्रश्न 14. हालदार साहब की स्वभावगत विशेषताएँ बताइये।

उत्तर. हालदार साहब एक देशभक्त व्यक्ति थे। वह कल्पनाशील व भावूक हद्धय व्यक्ति थे। नेताजी के प्रति व देशभक्तों के प्रति गहरा आदर व सम्मान भाव रखते थे।

प्रश्न 15. चश्मे वाला क्या करता था?

उत्तर. चश्मेवाले को नेताजी की बगैर चश्मे वाली मूर्ति बुरी लगती थी, इसलिए अपनी छोटी सी दुकान मे उपलब्ध गिने चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता था।

प्रश्न 16. हालदार साहब दुःखी क्यो थे?

उत्तर. हालदार साहब यह देखकर दुःखी थे कि लोग देशभक्तों व देश पर मर मिटने वालो का सम्मान नही करते बल्कि उनका मजाक बनाते है।

प्रश्न 17. मूर्ति के नीचे क्या लिखा था?

उत्तर. मूर्ति के नीचे लिखा था मूर्ति मास्टर मोतीलाल । वह कस्बे के एकमात्र हाई स्कूल के मास्टर थे।

प्रश्न 18. 'तभी उन्होने इसे लक्षित किया' किसने , क्या तथा कब देखा?

उत्तर. हालदार साहब जब पहली बार कस्बे से गुजरे और पान खाने के लिए चौहारे पर रूके तो उन्होने देखा कि वहाँ लगी नेताजी की मूर्ति की आँखो पर सचमुच के चश्में का चौड़ा वाला फ्रेंम टूटा हुआ था।

प्रश्न 19. बनाकर पटक देने के माध्यम से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहते है।

उत्तर. बनाकर पटक देने से लेखक का आशय संस्थाओ की गैर जिम्मेदार कार्यप्रणाली से है। निर्माण कार्य स्तरीय है या नही गुणवता उत्तम है या नहीं इससे कोई लेना देना नहीं होता। बस कार्य को निर्धारित अवधि में पूरा कर देने पर लेखक ने व्यंग्य किया है।

प्रश्न 20. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

उत्तर. मूर्ति पर सरकडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि देश में अभी भी देशभक्तों स्वतत्रा सेनानियो के प्रति सम्मानभाव व देशभक्ति की भावना जीवित है।

<u>लघूत्तरात्मक प्रश्न</u>

प्रश्न 1. बस्ट किसे कहते है? मूर्ति की क्या विशेषताएँ थी?

उत्तर. सिर से लेकर कमर तक के भाग की मूर्ति को बस्ट कहते है। नेताजी की मूर्ति संगमरमर की थी । टोपी की नोंक से कोट के दूसरे बटन तक दो फुट उँची मूर्ति थी। वह फौजी वर्दी पहने हुए थे। और नेताजी की मूर्ति बहुत सुन्दर थी ।

प्रश्न 2. हालदार साहब को चश्मे वाले का यह कार्य कैसा लगता है और क्यों

उत्तर. हालदार साहब को चश्मे वाले का मूर्ति को चश्मा लगाना सराहनीय कार्य लगता है। 'वाह भई खूब क्या आइडिया हैं' ऐसा कहकर वह चश्मेवाले के कार्य की प्रंशसा भी करते हैं। वह चश्मे वाले को एक देशभक्त व्यक्ति मानते है। उसके मन मे नेताजी के प्रति आदर व सम्मान का भाव होने के कारण चश्मे वाला का यह कार्य सराहनीय है।।

प्रश्न 3. सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे।

उत्तर. सेनानी न होते हुए थी चश्मे वाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे क्योकि उसके मन मे देशभक्ति की प्रबल भावना थी। नेताजी सुभाषचन्द्र की मूर्ति पर चश्मा लगाने व मूर्ति के प्रति आदर व सम्मान भाव प्रकट करने के कारण लोगों ने उसे व्यंग्य से कैप्टन पुकारना शुरू कर दिया होगा। आजाद हिंद फौज के सेनानी भी कैप्टन कहलाते थे। जैसे कैप्टन लक्ष्मी कैप्टन शाहनवाज आदि। तो इसी ढर्रे पर लोगों ने चश्मे वाले को भी विनोद वश कैप्टन उपनाम दे दिया होगा।

प्रश्न 4. वो लंगडा क्या जाएगा फौज मे। पागल है पागल । '' कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर. कैप्टन के लिए यह टिप्पणी करना कि ''वो लंगडा क्या जाएगा। फौज में पागल है पागल'' से पानवाले की देशभक्तों के प्रति अनादर, उपेक्षा, संवेदन शून्यता और उदासीनता की भावना उजागर होती है। कैप्टन की मनोभावना देशप्रेम, सम्मान की भावना को समझना उसकी बुद्धि से बाहर की बात थी। यदि उसे देशभक्त और देशप्रेम की भावना का तनिक भी ज्ञान होता तो वह ऐसी अशोभनीय और निंदनीय टिप्पणी कदापि नहीं करता ।

प्रश्न 5. मूर्ति के पास से गुजरते हुए अंत में हालदार साहब क्यो भावुक हो उठे थे?

उत्तर. हालदार साहब जब फिर कस्बे के चौराहे से गुजरे तो उन्होनें नेताजी की मूर्ति पर सरकडे का चश्मा लगा देखा। उसे देखकर हालदार साहब आश्चर्यचकित और अत्यन्त भाव–विभोर हो गए। उन्होने महसूस किया कि कैप्टन के मृत्यु हो जाने पर भी कस्बे में देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत देखकर उन्हे संतोष महसूस हुआ। अतः नेताजी के प्रति सम्मान भाव देखकर वह नई पीढी की सकारात्मक सोच देशभक्ति की भावना देख कर वह भावुक हो उठे थे।

प्रश्न 6. कैप्टन चश्में वाले को सामने देख कर हालदार साहब अवाक रह गए । अपके अनुसार इसका क्या कारण रहा होगा?

उत्तर. चश्मे वाले के नेताजी के प्रति सम्मान की भावना और उसके कैप्टन नाम से हालदार साहब को लगा होगा कि चश्मेवाला नेताजी का साथी या आजाद हिंद फौज कर सिपाही होगा। लेकिन जब उन्होने देखा कि चश्मे वाले एक बेहर बुढा मरियल सा लँगडा आदमी है, जिसने सिर पर गाँधी टोपी और आँखो पर काला चश्मा लगाए हुए व एक हाथ मे संदूक लिए फेरी लगाता है तो उनकी कल्पना मूर्ति खण्ड–खण्ड हो गई और अवा्क रह गए।

प्रश्न 7. हालदार साहब द्वारा कैप्टन के बारे मे पूछने पर पान वाला उदास क्यों हो गया?

उत्तर. हालदार साहब द्वारा नेताजी की मूर्ति पर चश्मा नही होने की वजह पूछे जाने पर पानवाला उदास होकर जवाब देता है कि कैप्टन मर गया । वह उदास था क्योंकि उसे कैप्टन की मृत्यु का दुःख हो रहा था। उसे कैप्टन का मूर्ति को चश्मा पहनाना अजीब और सनकपूर्ण लगता था और वह कैप्टन का मजाक भी बनाता था लेकिन उसकी मृत्यु से पानवाले के जीवन में सुनापन सा उत्पन्न हो गया और उसे कैप्टन की देशभक्ति की भावना का अनुभव भी हुआ ।

प्रश्न 8. नेताजी का चश्मा कहानी मे निहित देश भक्ति के संदेश को अपने शब्दों मे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. नेताजी का चश्मा कहानी मे लेखक ने यह संदेश दिया है कि देशभक्ति प्रकट करने के लिए सेना में जाना, सैनिक होना और शक्तिशाली होना जरूरी नहीं है। हर देशवासी अपनी सोच और सामर्थ्य के आधार पर देश के लिए योगदान कर सकता है देश से प्रेम करना व देशभक्तो का सम्मान करना ही सच्ची देशभक्ति है।

प्रश्न 9 हालदार साहब को मूर्ति के सामने से गुजरने पर उन्हें क्या अन्तर दिखाई देता था और क्यों?

उत्तर. हालदार साहब को मूर्ति के सामने से गुजरने पर हर–बार मूर्ति पर लगे चश्में के फ्रेम के बदले जाने का अंतर दिखाई पड़ता था। देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत कैप्टन चश्मेवाला मूर्ति पर चश्मा लगाता था लेकिन यदि किसी ग्राहक को मूर्ति वाला चश्मा पंसद आ जाता था तो मूर्ति पर लगे चश्में को हटाकर अन्य फ्रेम वाला चश्मा लगा देता था।

प्रश्न 10. नेताजी की मूर्ति लगााने के कार्य को सफल और सराहनीय प्रयास क्यों बताया गया? कोई दो कारण बताइए।

उत्तर. मूर्ति लगाने के कार्य को सराहनीय और सफल बताने के निम्नलिखित कारण है?

(1) नेताजी के त्याग और बलिदान के प्रति लोगों में सम्मान की भावना उत्पन्न हुई

(2) नेताजी की मूर्ति लोगों में देशभक्ति की भावना भरती थी

प्रश्न 11 लेखक स्वंय प्रकाश का जीवन परिचय दिजिए।

उत्तर. भारतीय समाज के सजग प्रहरी और वरिष्ठ कथाकार स्वंय प्रकाश अपनी कहानियों और उपन्यासों के लिये विख्यात है। आपकाा जन्म 20 जनवरी 1947 को इंदौर (मध्यप्रदेश) में हुआ। आपने हिंदी से एम.ए. किया और पी.एच.डी की उपाधि हासिल की थी । इसके अलावा मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढाई करने के पश्चात आपने अपनी रचनाओं में मध्यावर्गीय जीवन के वर्ग शोषण के विरूद्ध चेतना को प्रकट किया हैं। आपको प्रेमचंद की परम्परा का महत्वपूर्ण कथाकार माना जाता है। आपके तेरह कहानी संग्रह व 5 उपन्यास प्रकाशित हो चुके है।

आपके द्वारा रचित प्रमुख उपन्यास है। 'नीच मे विनय' 'ईधन' जलते जहाज ' पर 'ज्योति रथ के सारथी' और 'कब निकलेगा' 'संधान' आएँगे अच्छे दिन भी' 'आदमी जात का आदमी' आदि है। आपका देहावसान दिसम्बर 2019 को हुआ।

अपठित गद्यांा की संप्रसंग व्याख्या

प्रश्न 1. अब हालदार साहब को बाता कुछ–कुछ .... वाह ! भाई खूब क्या आइडिया है।

उत्तर. संदर्भ–प्रस्तुत गधांश पाठयपुस्तक क्षितिज भाग 2 में संकलित नेताजी का चश्मा पाठ से उद्धृत है यह प्रसिद्ध कहानी लेखक 'स्वयं प्रकाश ' द्वारा लिखित है।

प्रसंग– इस गद्यांश में कहानी के प्रधान पात्र हालदार साहब द्धारा चश्मे वाले कैप्टन के बारे में जानकारी प्राप्त करने व चश्मों के बदलने के पीछे छिपी जिज्ञासा का वर्णन है।

व्याख्या– एक कपंनी के कर्मचारी हालदार साहब हर पन्द्रहवे दिन कम्पनी के काम से एक कस्बे से गुजरते थे । जब भी वह कस्बे के मुख्य चौराहे से गुजरते उन्हें नेताजी की मूर्ति को चश्मा बदला हुआ मिलता । उन्होने अपनी इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए पानवाले से पूछा तो पानवाने के जवाब से हालदार साहब को कुछ–कुछ समझ में आया कि एक चश्में बेचने वाला है। जिसका नाम कैप्टन है। नेताजी की बिना चश्में वाली मूर्ति को देखकर वह आहत होता है। इसलिए अपनी छोटी सी चश्मे की दुकान से गिने–चुने चश्मों के फ्रेमो से कोई एक चश्मा नेताजी की मूर्ति को पहना देता है। ग्राहक के द्वारा जब मूर्ति पर पहला चश्मा माँगा जाता है। तो वह उतार कर ग्राहक को दे देता है। तथा मूर्ति को अन्य चश्मा पहना देता है। ऐसा करने हुए वह नेताजी की मूर्ति से क्षमा मांगता है। किन्तु साथ ही साथ श्रद्धा व सम्मानवशं उन्हे दूसरा चश्मा भी पहना देता है। हालदार साहब को कैप्टन का यह कार्य बहुत ही प्रंशसनीय व सराहनीय प्रतीत होता है।

विशेष – (1) हिन्दी भाषा के शब्दों के साथ साथ अंग्रेजी शब्दों जैसे फ्रेम, आइडिया तथा उर्दू शब्दों जैसे– दरकार का प्रयोग किया है।

(2) कैप्टन द्वारा देशभक्ति की भावना व देशभक्तो के प्रति सम्मान की भावना को अभिव्यक्त किया है।

प्रश्न 2. ''मूर्ति संगमरमर की थी .... मूर्ति पत्थर की लेकिन चश्मा रियली?''

उत्तर. संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश पाठयपुस्तक क्षितिज भाग 2 में संकलित नेताजी का चश्मा पाठ से उद्‌घृत है यह प्रसिद्ध कहानी लेखक 'स्वयं प्रकाश ' द्वारा लिखित है।

प्रसंग – इस गद्यांश में कहानीकार कस्बे में मुख्य बाजार में मुख्य चौराहे पर स्थापित नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की संगमरमर से निर्मित मूर्ति का शब्द चित्र प्रस्तुत कर रहा है।

व्याख्या– हालदार साहब जब कस्बे से गुजरे तो उन्होने देखा कि मुख्य चोराहे पर नेताजी की संमरमर की मूर्ति बनी हुई थी। टोपी की नोक से लेकर नेताजी के कोट पर लगे दूसरे बटन तक लगभग दो फुट उंची मूर्ति थी । अंग्रेजी में जिस बस्ट कहते है। मुर्ति फौजी वर्दी में कुछ– कुछ मासूम, कमसिन और बहुत सुन्दर थी मूर्ति को देखते ही देशभक्ति से ओत–प्रोत प्रसिद्ध घोष जिनका नेताजी ने आह्‌वान किया था दिल्ली चलो और तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा । याद आने लगते थे। लेखक के अनुसार यह कार्य एक अति सराहनीय और सफल कार्य था जो लोग में देशभक्तो के प्रति समान भाव जगाता था।

लेकिन इतनी सुंदर व प्रशंसनीय होते हुए भी मूर्ति में एक कमी थी, कि नेताजी की आँखो पर चश्मा नहीं लगा था। इसलिए उस मूर्ति पर सचमुच का एक चौड़े ओर काले फ्रेम का चश्मा पहना दिया था । हालदार साहब जब कस्बे से पहली बार गुजरते है चौरोह पर पान वाली दुकान पर पान खाने रूकते है। तभी उनका इस मूर्ति पर ध्यान जाता है। और चश्में को देख कर उनके मुख पर मुस्कान आ जाती है। उन्होने वास्तविक चश्मे पहनाने के आइडिया की बहुत सराहना की ।

विशेष– (1) नेताजी कि मूर्ति का शब्द चित्र प्रस्तुत किया गया है।

(2) हिन्दी, उर्दू व अग्रेंजी में मिश्रित शब्दो का प्रयोग किया गया है।

(3) भाषा सरल व सहज है।

निंबधात्मक प्र्न

प्रश्न 1. नेताजी का चश्मा कहानी के अनुसार देश के निर्माण में बडे ही नहीं बच्चे भी शमिल हैं, आप देश के नए निर्माण में किस प्रकार योगदान देगे?

उत्तर. नेताजी का चश्मा ' कहानी में कस्बे के निवासियों द्वारा एक देशभक्त कि मूर्ति स्थापित की गई थी । लेखक के अनुसार मूर्ति का रंग, रूप, गुण, दोष, इतने महत्वपूर्ण नहीं थे जितने लोगो की देश प्रेम की भावना महत्वपूर्ण थी । हर व्यक्ति देश के निर्माण में योगदान दे सकता है। चाहे छोटा हो या बड़ा देशभक्ति जाहिर करने के लिए एक आवश्यक नही है। कि स्वंतत्रता आंदोंलन में भाग लिया जाए । अपने जीवन का बलिदान किया जाए, देश प्रेम अभिव्यक्ति तो हम छोटे–छोट कार्य करके भी कर सकते है। जैसे– भ्रष्टाचार और अन्याय के के विरूद्ध संघर्ष करके बाल–विवाह बालश्रम का विरोध कर के अपनी भाषा संस्कृति परम्पराओं को सहेज कर के देशभक्तों का देश का समान कर के पर्यावरण की रक्षा करके देश के सुनहरे व्यक्ति का निर्माण करने में योगदान दे सकते है। एक ईमानदार परिश्रमी कर्तव्यनिष्ट इसांन बनकर देश के निर्माण योगदान दे सकते है।

प्रश्न 2. बार बार सोचते है। क्या होगा कौम का जो देश के खातिर घर–गृहस्थी जवानी जिन्दगी सब कुछ थोप देने वाले पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढती है इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. इस कथन के माध्यम से लेखक के कहना चाहते है। ऐसे व्यक्ति सम्मान के पात्र होते हैं जो देश के लिए त्याग और बलिदान करते है। लेकिन यदि उन पर लोग हंसते है। तो यह गलत हैं। पाठ में कैप्टन द्वारा जो कि वृद्ध मरियल है, लेकिन देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत है नेताजी की मुर्ति पर चश्मा लगाता है तो लोग उसे सनकी और पागल कहते है। इसलिए लेखक कहते है। कि जहाँ ऐसे स्वार्थी लोग है उस देश का भविष्य कैसे उज्जवल होगा।

शेखावाटी मिशन-100

9. बालगोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी)

रिक्त स्थानः–

प्रश्न 1. बालगोबिन भगत .... के पदो को ही गाया करते थे।

प्रश्न 2. गाते समय बालगोबिन अक्सर .... बजाते थे।

प्रश्न 3. पुत्र की मृत्यु पर भगत .... रहे थे।

प्रश्न 4. बालगाबिन की पुत्रवधु सुंदर, सुशील और .... के गुणों से युक्त थी।

प्रश्न 5. बालगोबिन भगत के लेखक .... है।

उतरः– 1. कबीर, 2. खँजड़ी, 3. भजन गा, 4. प्रबन्धिका, 5. रामवृक्ष बेनीपुरी

सही–गलतः–

प्रश्न 1. बालगोबिन भगत अंधिविश्वासी एवं पुरानी सोच के व्यक्ति थे। (सही / गलत)

प्रश्न 2. बालगोबिन भगत कबीर को 'साहब' मानते थे। (सही / गलत)

प्रश्न 3. बालगोबिन भगत एक गृहस्थ साधु थे। (सही / गलत)

प्रश्न 4. बालगोबिन भगत 'रेखाचित्र' विधा में लिखा गया है। (सही / गलत)

प्रश्न 5. बालगोबिन भगत के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सजीव झाँकी देखने को मिलती है। (सही / गलत)

उतरः– 1. गलत, 2. सही, 3. सही, 4. सही, 5. सही

एक भाब्द वाले प्र□न–उतरः–

प्रश्न 1. 'पतोहू' का क्या अर्थ है?

उत्तर. पुत्र की वधू

प्रश्न 2. ठण्डी पुरवाई का क्या अर्थ है?

उत्तर. पूरब दिशा से चलने वाली हवा

प्रश्न 3. 'पूरब में लोही लगने' से क्या मतलब / आशय है?

उत्तर. सुबह के समय सूरज की लालिमा

प्रश्न 4. पतोहू से पुत्र की चिता को आग लगवाना बालगोबिन की किस मानसिकता को दर्शाता है?

उत्तर. नारियों के प्रति सम्मान

प्रश्न 5. बालगोबिन भगत क्या कार्य करते थे?

उत्तर. खेतीबाड़ी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्रश्न 1. पाठ 'बालगोबिन भगत' हिंदी गद्य की किस विधा में लिखा गया है?

उत्तर. रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित बालगोबिन भगत हिंदी गद्य की 'रेखाचित्र' विधा में लिखा गया है।

प्रश्न 2. बालगोबिन गृहस्थ थे, फिर उन्हे भगत क्यों कहा जाता था?

उत्तर. बालगोबिन गृहस्थ होते हुए भी अपने आचरण, व्यवहार, सोच और प्रवृति से साधु–संत जैसे थे इसलिए उन्हें भगत कहते थे।

प्रश्न 3. बालगोबिन के संगीत को लेखक ने जादू कहा है, क्यों?

उत्तर. जो भी व्यक्ति बालगोबिन के संगीत को सुनता था मंत्रमुग्ध हो जाता था। बच्चे, औरतें और प्रत्येक व्यक्ति उनके गीतों को तल्लीनता पूर्वक सुनते और गुनगुनाते थे इसलिए लेखक ने उनके संगीत को जादू कहा है।

प्रश्न 4. लेखक बालगोबिन की किस बात पर सर्वाधिक मुग्ध थे?

उत्तर. लेखक बालगोबिन के मधुर गान पर जो सदा–सर्वदा की सुनने को मिलता, उस पर मुग्ध थे।

प्रश्न 5. कबीर पंथी किसको कहते है? बालगोबिन को कबीर पंथी क्यो कहा है?

उत्तर. कबीर की विचारधारा को मानने वाले को कबीरपंथी कहते है। बालगोबिन कबीर को 'साहब' मानते उन्ही के आदर्शो पर चलते थे।

प्रश्न 6. बालगोबिन अपने खेत की पैदावार कहाँ और क्यों ले जाते थे?

उत्तर. बालगोबिन जो कुछ खेत में पैदा होता सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते अर्थात् कबीर मठ ले जाते। उनके अनुसार उनकी सब चीज 'साहब' की थी।

प्रश्न 7. बालगोबिन की संगीत–साधना का चरम उकर्ष क्या था?

उत्तर. जब बालगोबिन के पुत्र की मृत्यु हुई तब भी वह तल्लीनता के साथ गीत गा रहे थे उनका यह व्यवहार संगीत साधना का चरम उत्कर्ष था।

प्रश्न 8. बालगोबिन अपनी पतोहू को उत्सव मनाने के लिए क्यों कहते है?

उत्तर. बालगोबिन के अनुसार, उनके पुत्र की आत्मा परमात्मा के पास चली गई है अतः ऐसी आनंद की बात पर रोने के लिए अपनी पतोहू को मना करते है और उत्सव मनाने के लिए कहते है।

प्रश्न 9. बालगोबिन ने सामाजिक मान्यताओ के विरूद्ध जाकर पतोहू से कौनसा कार्य करवाया?

उत्तर. बालगोबिन ने अपने पुत्र के क्रिया कर्म अपनी पतोहू से करवाये। पतोहू से दाह संस्कार का कार्य पूर्ण करवाया।

प्रश्न 10. पतोहू के भाई को बालगोबिन ने क्या आदेश दिया?

उत्तर. पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया और आदेश दिया कि पतोहू का दूसरा विवाह करवा दें।

प्रश्न 11. पतोहू को बालगोबिन की किस दलील के आगे झुकना पड़ा?

उत्तर. बालगोबिन की यह दलील की ''मैं घर छोड़कर चला जाऊगाँ'' के आगे पतोहू को झुकना पड़ा।

प्रश्न 12. ''साधु की सारी परिभाषाओं पर खरा उतरने वाला'' से क्या आशय है?

उत्तर. एक सच्चे साधु के जो लक्षण होते है वह सब बालगोबिन भगत के आचरण में विद्यमान थे।

प्रश्न 13. इकलौते पुत्र की मृत्यु के बाद बालगोबिन भगत गा क्यों रहे थे?

उत्तर. बालगोबिन के अनुसार आत्मा अपनी प्रियतम परमात्मा के पास गई है। विरहनी अपनी प्रेमी से जाकर मिल गई है इसलिए वे गा कर उत्सव मना रहे थे।

प्रश्न 14. बालगोबिन भगत के चरित्र की दो विशेषताएँ लिखिए–

उत्तर. बालगोबिन भगत के चरित्र की दो विशेषताएँ निम्न प्रकार से है–

1. नारी जाति के प्रति सम्मान और सहानुभूति का भाव रखते थे।
2. सुलझे हुए एवं दूरदर्शी सोच के व्यक्ति थे।

प्रश्न 15. 'मैं कभी–कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गए' यह कथन किसके बारे में कहा है और क्यों?

उत्तर. यह कथन बालगोबिन के बारे में कहा गया है क्योंकि वह अपनी रोती हुई पुत्रवधु को उत्सव मनाने के लिए कह रहे थे।

<u>लघूत्तरात्मक प्रश्नः–</u>

प्रश्न 1. गर्मियों की उमस भरी शाम को बालगोबिन भगत शीतल और मनमोहक बना देते थे? कैसे?

उत्तर. गर्मियों की उमस भरी शाम को वह अपने घर के आँगन में आसन लगा लेते थे। कुछ उनके प्रेमी लोग भी वहाॅ आ जाते थे। एक निश्चित ताल व गति के साथ प्रेमी मंडली बालगोबिन भगत के साथ गीतों को दुहराती। बालगोबिन खँजड़ी लिए आँगन में नाचते। सारा आँगन नृत्य और संगीत से ओंतप्रोत हो जाता।

प्रश्न 2. ''बालगोबिन की मृत्यु उन्हीं के अनुरूप हुई।'' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. बालगोबिन भगत संत प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्होंने जीवन भर स्नान, ध्यान, व्रत आदि नियमो का पालन किया और मृत्युपर्यन्त उनको निभाया। उनकी इच्छा के अनुसार कि प्रभुभक्ति करते हुए मृत्यु मिले वैसे ही भक्ति गीत गाते–गाते ही उनकी आत्मा प्रियतम परमात्मा से जा मिली।

प्रश्न 3. ''घर परिवार होते हुए भी वह साधु की सभी परिभाषाओं में खरे उतरने वाले थे।'' कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. लेखक के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि बालगोबिन भगत गृहस्थ होते हुए भी अपने आचरण और वेशभूषा, व्यक्तित्व से साधु पुरूष थे। साधुत्व आधार जीवन के मानवीय सरोकार होते है और बालगोबिन गृहस्थ होते हुए भी उस मनुष्यता, लोक संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है।

प्रश्न 4. ''भगत की हर चीज साहब की थी।'' भगत की यह मान्यता उनके किस आचरण से प्रमाणित होती है?

उत्तर. बालगोबिन भगत गृहस्थ थे लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी। उनके खेत में जो कुछ पैदा होता, सिर पर लादकर कबीर मठ ले जाते और भेंट रूप में रख देते और प्रसाद रूप में जो मिलता उसी से अपना गुजारा करते थे। इससे यह सिद्ध होता है कि उनकी हर चीज 'साहब' की थी।

प्रश्न 5. धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थी? उस माहौल का शब्दचित्र लिखो।

उत्तर. आषाढ़ का महीना और रिमझिम वर्षा के साथ ही गाँव के सभी किसान खेतों में रोपनी कर रहे है। बालगोबिन भगत भी कीचड़ से लथपथ रोपनी करते हुए संगीत से आकाश और पृथ्वी पर अपना जादू बिखेरते है। खेलते हुए बच्चे, मेंडों पर बैठी औरतें, हल चला रहे किसान उनके संगीत के जादू से चमत्कृत और आनन्दित हो रहे है।

प्रश्न 6. लेखक 'बालगोबिन भगत' अध्याय के आधार पर क्या संदेश देते है?

उत्तर. इस पाठ से हमें यह संदेश मिलता है कि साधुत्व का पालन गृहस्थ जीवन में भी निभाया जा सकता है। व्यक्ति नियमों पर दृढ़ रहकर संतोषी प्रवृत्ति, ऊँच–नीच के भेद को त्यागकर, मोह–माया के जाल से दूर रहकर, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील होकर भी साधुत्व जीवन जी सकता है।

प्रश्न 7. 'भगत नहीं रहे सिर्फ उनका पंजर पड़ा है।' – पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

उत्तर. इस पंक्ति के माध्यम से लेखक कहना चाहते है कि भगत की मृत्यु हो चुकी है। वह अब इस संसार से विदा ले चुके है। उनकी आत्मा शरीर रूपी पिंजरे को छोड़कर जा चुकी है। केवल उनका निर्जीव शरीर ही धरती पर पड़ा है।

प्रश्न 8. बालगोबिन भगत अपने बेटे का विशेष ध्यान क्यों रखते थे?

उत्तर. बालगोबिन भगत का अपने बेटे से विशेष प्रेम और ध्यान पुत्र मोह के कारण नहीं था बल्कि उनका पुत्र काम काज में सुस्त और शरीर से दुर्बल था और वह यह मानते थे कि जो कमजोर और निगरानी के हकदार होते है उनसे अधिक स्नेह रखना चाहिए।

<u>**लेखक परिचयः–**</u>

प्रश्न 1. रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए।

उत्तर. हिंदी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन् 1899 में बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर ग्राम में हुआ। मैट्रिक की परीक्षा पास करने से पहले ही 1920 ई. में महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। 1930 से 1942 ई. तक का समय जेल में ही व्यतीत किया।

आपके द्वारा रचित प्रमुख रचनाएँ निम्न प्रकार से है–

1. निबंध संग्रह– 'गेहूँ और गुलाब' , मशाल'
2. रेखाचित्र– 'माटी की मूरतें' बालगोबिन भगत

3. संस्मरण– 'मील के पत्थर' जंजीरे और दीवारे आपका देहावसान सन् 1968 में हुआ।

पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्याः–

प्रश्न 1. बालगोबिन भगत की संगीत–साधना .... सबका ध्यान खींचकर ही रहती है।

उत्तर. संदर्भ– प्रस्तुत अवतरण पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग–2' में संकलित रेखाचित्र 'बालगोबिन भगत' से लिया गया है। इसके लेखक 'रामवृक्ष बेनीपुरी' है।

प्रसंग– लेखक ने इस अंश में भगत जी के पुत्र की मृत्यु, पतोहू के चरित्र और भगत जी के व्यक्तित्व के उच्चतम रूप का परिचय करवाया है।

व्याख्या– लेखक कहते है कि जिस दिन बालगोबिन के पुत्र की मृत्यु हुई उस दिन उनकी संगीत साधना का सबसे उच्चतम दिन था वह उनका इकलौता पुत्र था। उकी मृत्यु के दुःखद अवसर पर भी उनका गायन बंद नहीं हुआ। वे पुत्र के शव के पास बैठकर गाते रहे। उनके लिए पुत्र की मृत्यु की एक सामान्य घटना थी। उनका पुत्र कामकाज में सुस्त और शरीर से दुर्बल था। इस कारण भगत उस पर विशेष ध्यान देते थे। उनके अनुसार ऐसे लोगो पर जो कमजोर या निगरानी के हकदार होते है उन से अधिक स्नेह रखना चाहिए क्योंकि स्वस्थ और बुद्धिमान तो अपना ध्यान रख सकते है। बड़ी इच्छा से भगत ने अपने पुत्र की शादी करवाई और प्रभुकृपा से पतोहू भी सौभाग्यशाली और सुशील थी। उसने घर का सारा प्रबंध संभालन लिया और भगत को घर–गृहस्थी के कार्यो से निवृत्त भी कर दिया था। जब भगत जी का बेटा बीमार हुआ तो उसकी सुध लेने कोई नहीं आया, परन्तु उसकी मृत्यु हो जाने पर अधिकतर लोग भगत के घर आ गए थे।

विशेष– 1. लेखक ने भगत के व्यक्तित्व का सजीव व मार्मिक चित्रण किया है।

2. देशज शब्दों के साथ, खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग किया है।

3. भाषा शैली सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

प्रश्न 2. ''इस बार लौटे तो तबीयत .... उनका पंजर पड़ा है।''

उत्तर. संदर्भ– प्रस्तुत अतरण पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग–2' में संकलित रेखाचित्र 'बालगोबिन भगत' से लिया गया है। इसके लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी है।

प्रसंग– इस अंश में लेखक ने बालगोबिन भगत की मृत्यु उनके अंतिम समय का वर्णन किया है।

व्याख्या– बालगोबिन गंगा स्नान करके लौटे तो बीमार पड़ गए। खाने–पीने के बावजूद स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ। बुखार भी रहने लगा। परन्तु अपने नियमों का दृढ़ता से पालन करने थे। दिन में दो बार स्नान, ध्यान और गान करने, खेतीबाड़ी करते लोग उनको आराम करने को कहते किंतु बालगोबिन भगत उनकी बात को हँस कर टाल देते थे। एक दिन शाम को भगत जी ने गीत गाए किंतु उनके स्वर को सुनकर यह प्रतीत हुआ कि जैसे स्वर का धागा बीच–बीच में टूट रहा हो, जैसे किसी मोती की माला का एक–एक दाना बिखर रहा हो अर्थात् उनकी जीवन रूपी माला का धागा टूट गया था। सवेरे में जब उनके खँजड़ी और गीतो का स्वर सुनाई नहीं दिया तो लोगो ने उनको जाकर संभाला तो पाया कि बालगोबिन भगत के प्राण जा चुके थे। उनका निर्जीव शरीर ही वहॉ पड़ा था।

विशेष– 1. लेखक ने बालगोबिन भगत का सजीव रेखाचित्र प्रस्तुत किया है।

2. भाषा शैली सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

3. मुहावरेदार शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

निबन्धात्मक प्रश्नः–

प्रश्न 1. 'बालगोबिन भगत' पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर. 'बालगोबिन भगत' पाठ का मुख्य पात्र है वह मंझोले कद के गोर–चिट्टे आदमी थे। उनका चेहरा हमेशा सफेद बालों से जगमग किए रहता, कमर में एक लंगोटी पहनते थे और सिर पर कबीरपंथियो की सी कनफटी टोपी। सर्दियों में काली कंबली ओढ़ते थे। मस्तक पर रामानन्दी चंदन का टीका और गले में तुलसी के जड़ो की बैडोल माला बाँधे रहते।

कबीर को 'साहब' मानते हुए उनके आदर्शो पर चलते। खेत में कार्य करते हुए तल्लीन होकर गीत गाते थे। स्वभाव से संतोषी प्रवृति के बालगोबिन भगत अपनी खेत की पैदावार को कबीर मठ में भेंट कर आते थे। मोहमाया से दूर रहते हुए, अपने नियमो पर दृढ़ बालगोबिन सामाजिक कुप्रथाओं के विरोधी थे। संत की तरह सज्जन सरल, वाकपटु थे। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते, ना किसी से झगड़ा करते, ना किसी से बिना पूछे उसकी चीज को हाथ लगाते। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी संत आचरण के व्यक्तियों बालगोबिन भगत।

प्रश्न 2. बालगोबिन भगत रेखाचित्र में सामाजिक परमपराओं के विरूद्ध कार्य करते पाया है? उनका यह आचरण क्या संदेश देता है?

उत्तर. बालगोबिन भगत इस पाठ में दो बार सामाजिक मानयताओं के विरूद्ध जाकर कार्य करते हुए पाया है–

1. पुत्र की मृत्यु पर शोक न मना कर उत्सव के रूप में मानना और अपने पुत्र की चिता को अग्नि पतोहू से दिलवाना।
2. पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया और पतोहू का दूसरा विवाह कर देने का आदेश दिया। उनके यह कार्य ऊपरी तौर पर अटपटे लगते है लेकिन एक नई विचारधारा, नई सोच प्रतीक है जो नारी और पुरूष को समान मानती है। उनका यह आचरण प्राचीन काल से चली आ रही रूढ़ियों को तोड़कर विवेकशील होने का संदेश देता है।

शेखावाटी मिशन-100

10. लखनवी अंदाज (यशपाल)

रिक्त स्थानः–

प्रश्न 1. नवाब साहब ने लेखक को .... खाने के लिए पूछा।

प्रश्न 2. नवाब साहब ने .... का टिकट खरीदा।

प्रश्न 3. लखनवी अंदाज के लेखक .... है।

प्रश्न 4. रेल की एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक .... पालथी मारे बैठे।

प्रश्न 5. 'लखनवी अंदाज' पाठ में लेखक ने .... पर व्यंग्य किया है।

उतरः– 1. खीरा, 2. सेकण्ड क्लास, 3. यशपाल, 4. सफेदपोश सज्जन, 5. नवाबी आदतो

सही–गलतः–

प्रश्न 1. कहानी लिखने के लिए घटना, विचार, पात्र होना जरूरी है। (सही / गलत)

प्रश्न 2. लेखक को एक नई कहानी की तलाश थी। (सही / गलत)

प्रश्न 3. नवाब साहब ने रेल में समय बिताने के लिए खीरा खरीदा। (सही / गलत)

प्रश्न 4. नवाब सहाब ने खीरो की फांको को खिड़की से बाहर फेंक दिया। (सही / गलत)

प्रश्न 5. 'लखनवी अदांज' में लेखक ने बनावटी जीवनशैली का प्रदर्शन करने वाले लोगो पर व्यंग्य किया है। (सही / गलत)

उतरः– 1. सही, 2. सही , 3. सही, 4. सही , 5. सही

एक भाब्द वाले प्रश्न–उतरः–

प्रश्न 1. 'लखनवी अंदाज' के लेखन की शैली कौन सी है?

उत्तर. व्यंग्यात्मक शैली

प्रश्न 2. लेखक यात्रा करने के लिए कौनसा टिकट खरीदता है?

उत्तर. सेकण्ड क्लास टिकट

प्रश्न 3. 'हमने भी उनके सामने की बर्थ पर बैठकर आत्मसम्मान में आँखे चुरा ली।' कथन किसका है–

उत्तर. लेखक यशपाल का

प्रश्न 4. 'लखनवी अंदाज' पाठ के लेखक कौन है–

उत्तर. यशपाल

प्रश्न 5. कहानी संग्रह 'पिजंरे की उड़ान' किसने लिखा है–

उत्तर. यशपाल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्रश्न 1. लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों खरीदा?

उत्तर. लेखक ने अपनी नयी कहानी के कथ्य के बारे में एकांत में सोचने के इरादे से सेकण्ड क्लास के डिब्बे को चुना। सेकण्ड क्लास के डिब्बे मे भीड़ भी नहीं होती । प्राकृतिक दृश्य का आनंद लेने के लिए वह डिब्बा चुना।

प्रश्न 2. 'लखनवी अदांज' व्यंग्य रचना में लेखक ने किस पर कटाक्ष किया है?

उत्तर. लेखक ने यथार्थ की उपेक्षा कर बनावटी जीवनशैली अपनाने वाले, पतनशील सामंती वर्ग पर कटाक्ष किया है।

प्रश्न 3. नवाब साहब ने खीरे का क्या किया?

उत्तर. नवाब साहब ने खीरे के एक–एक टुकड़े को उठाया, अपने मुहँ तक ले गए, नाक से सूंघा और खिड़की से बाहर फेंक दिया।

प्रश्न 4. लेखक को नवाब का कौनसा भाव परिवर्तन अच्छा नहीं लगा?

शिक्षावाणी मिशन–100

उत्तर. लेखक को देखकर पहले तो अनमने भाव से नवाब का खिड़की से बाहर देखना और फिर शराफत का भाव प्रकट करने के उद्देश्य से खीरा खाने के लिए पूछना अच्छा नहीं लगा।

प्रश्न 5. लेखक के अनुसार नयी कहानी के लेखक किस प्रकार के है?

उत्तर. लेखक के अनुसार नयी कहानी के लेखक बिना विचार, भाव तथा घटना और पात्रों के कहानी के लिखते हैं सिर्फ लेखक बनने के लिए।

प्रश्न 6. ''नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गये।'' कथन में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. लेखक ने नवाब के खानदानी नजाकत और तजाकत पर व्यंग्य किया है कि मात्र खीरा छीलने, नमक मिर्च बुरकने और सूंघ कर फेंक देने में ही उनको थक कर लेट जाना पड़ा।

प्रश्न 7. नवाब साहब की व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर. 1. सनकी स्वभाव वाले व्यक्ति थे नवाब साहब।

2. खानदानी रईजी व झूठी शान–शौकत दिखानेवाले नवाबी नजाकत व नफासत से पूरित व्यक्ति थे।

प्रश्न 8. ''एब्स्ट्रैक्ट'' शब्द के माध्यम से लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है?

उत्तर. एक्स्ट्रैक्ट अर्थात् अमूर्त। इसके माध्यम से लेखक ने व्यंग्य किया है–

1. नवाबों की काल्पनिक जीवन शैली

2. नयी कहानी के लेखकों की अति सूक्ष्म धारणाओं पर

प्रश्न 9. 'लखनवी अंदाज' पाठ में लेखक ने खीरा खाने को क्यों मना किया?

उत्तर. लेखक ने महसूस किया कि नवाब साहब सिर्फ औपचारिकता निभाने और कोरा शिष्टाचार दिखाने हेतु खाने को पूछ रहे थे, इसलिए मना किया।

प्रश्न 10. 'लखनवी अंदाज' पाठ मे नवाब साहब ने आम आदमियों की तरह खीरा क्यों नहीं खाया?

उत्तर. लेखक को अपनी नवाबी शान, खानदानी तहजीव, लखनवी नफासत और नजाकत दिखाने के लिए खीरा आम आदमियों की तरह नहीं खाया।

प्रश्न 11. लेखक ने नयी कहानी का लेखक किसे कहा है? 'लखनवी अंदाज' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर. लेखक ने लखनवी नवाबों जैसे नजाकत और नफासत गलों को नयी कहानी का लेखक कहा है।

प्रश्न 12. ''नवाब साहब से संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया। हमने भी उनके सामने की बर्थ पर बैठकर आत्मसम्मान में आँखे चुरा ली''। इस कथन से नवाब साहब और लेखक के स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर. इस कथन से पता चलता है कि नवाब साहब अपनी रईसी के कारण और लेखक अपनी विद्वता के कारण अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझते थे ओर एक–दूसरे के साथ के इच्छुक नहीं थे।

प्रश्न 13. लेखक के स्वभाव की विशेषताएँ लखनवी अंदाज' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर. 1. लेखक, कल्पनाशील स्वाभिमानी तथा लागों के हावभाव व मनोभाव को पढ़ लेने की विशेष क्षमता से युक्त होते हैं।

2. अपनी रचनाओं के लिए नई सामग्री की तलाश आस–पास के वातावरण से ही करते हैं।

प्रश्न 14. 'ज्ञान–चक्षु' खुलने से क्या आशय है?

उत्तर. लेखक नवाब साहब के खीरे खाने के तरीके को देखकर समझ गए कि यदि खानदानी रईस खाद्य–पदार्थ को बिना मुँह से खाए पेट भर सकते थे तो नयी कहानी के लेखक भी बिना विचार, पात्र, घटना के कहानी की रचना।

<u>लघूत्तरात्मक प्रश्नः–</u>

प्रश्न 1. लेखक को नवाब साहब के किन हावभावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं है?

उत्तर. लेखक को देखकर नवाब साहब के चिंतन में व्यवधान पड़ा, एकांत भंग हुआ, ऐसे भाव उनके चेहरे पर आए। लेखक की उपेक्षा दिखाने के लिए खिड़की से बाहर देखते हैं। ऐसे हाव–भाव से महसूस हुआ कि नवाब साहब बातचीत के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं।

प्रश्न 2. लखनवी नवाब पाठ के आधार पर नवाब साहब के व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।

उत्तर. नवाब सहाब के स्वभाव में खानदानी रईसी का मियां अभिमान था। वह लेखक पर अपनी खानदानी रईसी का प्रभाव जमाना चाहते थे। बड़े मनोयोग से खीरे की फाँको को तैयार करके केवल सूँघकर ही उसका स्वाद लेने का अभिनय किया। वह रईसों की नजाकत नफासत और तहजीब का प्रदर्शन करके लेखक को हीन व खुद को विशिष्ट दिखाना चाहता थे।

प्रश्न 3. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी कहानी लिखी जा सकती है।' यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत है?

प्रश्न 4. नवाब साहब ने खीरे को खाने योग्य किस प्रकार बनाया?

उत्तर. नवाब सहाब ने खीरों को पानी से धोकर तौलिये से पौछा फिर चाकू से खीरों के सिरों को काटकर उन्हे गोद कर झाग निकाला, फिर सावधानीपूर्वक छीलकर फाँकों को करीने से तौलिये पर सजाकर उन पर जीरा व नमक मिला मिर्च छिड़क कर खाने योग्य बनाया।

प्रश्न 5. 'लखनवी अंदाज' से हमे क्या संदेश मिलता है?

उत्तर. 'लखनवी अंदाज' नामक पाठ से हमे यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति को दिखावटी जीवन–शैली से दूर रहना चाहिए। काल्पनिकता को छोड़ वास्तविकता में जीना चाहिए और वह हमारे व्यवहार और कार्यो में भी दिखना चाहिए।

प्रश्न 6. नवाब साहब ने गर्व से लेखक की ओर देखा उनको किस बात का गर्व था?

उत्तर. नवाब साहब ने बड़ी नजाकत व नफासत से धीरे को सूँघकर फेंक दिया और स्वाद तथा तृप्ति का प्रदर्शन किया ऐसा करके उन्होंने खानदानी नवाबी रईसी का प्रदर्शन किया और गर्व महसूस किया।

प्रश्न 7. नवाब साहब की खीरा सेवन की प्रक्रिया को देखकर लेखक के मन में क्या विचार आया?

उत्तर. लेखक के मन में विचार आया कि खीरे के इस्तेमाल का यह ढंग सूक्ष्म या काल्पनिक तरीका तो माना जा सकता है लेकन इस तरीके से पेट भरना कैसे संभव है? पेट की भूख तो कोई खाद्य पदार्थ जब मुँह से खाया जाए और पेट में पहुँचे तभी शांत होती है।

प्रश्न 8. नवाब साहब ने लेखक से दोबारा खीरा खाने का आग्रह क्यों किया होगा?

उत्तर. लेखक के डिब्बे में प्रवेश करते समय नवाब साहब ने हुआ–सलाम करने की साधारण शिष्टता भी नहीं दिखाई थी। पहली बार खीरा खाने को कहना केवल दिखावा था अपनी अशिष्टता को छिपाने का। दूसरी बार लेखक से खीरे खाने का आग्रह में सज्जनता का पुट था लेकिन इसका कारण शायद यह था कि दूसरे व्यक्ति की उपस्थिति में खीरा खाना शिष्टता के खिलाफ था।

<u>लेखक परिचयः–</u>

प्रश्न 1. यशपाल का व्यक्तित्व व कृतित्व परिचय दीजिए।

उत्तर. हिंदी के प्रमुख कहानीकारों में से एक यशपाल का जन्म 3 दिसम्बर 1903 को पंजाब के फिरोजपुर छावनी में हुआ था। सन 1921 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर स्वदेशी आंदोलन में जमकर भाग लिया। अमर शहीद भगत सिंह के साथ मिलकर इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। इनकी साहित्य सेवा प्रतिभा से प्रभावित होकर भारत सरकार ने 'पद्य भूषण' की उपाधि प्रदान कर इनको सम्मानित किया।

यशपाल के लेखन की प्रमुख विधा उपन्यास है लेकिन इन्होंने लेखन की शुरूआत कहानी से की।

इनके प्रमुख कहानी संग्रह है— ज्ञानदीप, तर्क का तूफान, पिंजरे की उड़ान, फूलों का कुर्ता।

इनके प्रमुख उपन्यास है— दादा कामरेड, झूठा सच दिव्या, मेरी तेरी उसकी बात।

इनका देहावसान 26 दिसम्बर 1976 में हुआ।

पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्याः—

प्रश्न 1. हम गौर कर रहे थे .... क्यों नहीं बन सकती?

उत्तर. संदर्भ— प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग—2 में संकलित व्यंग्य रचना 'लखनवी अंदाज' से लिया गया है इसके लेखक 'श्री यशपाल' है।

प्रसंगः— इस अंश में लेखक ने नवाब साहब द्वारा खीरा सेवन के नवाबी तौर—नरीके के बारे में बताया है। इसके साथ ही 'नई कहानी' की रचना को समर्थन प्रदान किया है।

व्याख्याः— लेखक ने नवाब साहब की खीरा इस्तेमाल करते, उसकी सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होते हुए की प्रतिक्रिया को गौर से देख रहे थे। लेखक कहते हैं कि इस तरीके को खीरे के इस्तेमाल की सूक्ष्म, नफासत भरा रूपहीन या काल्पनिक तरीका कहा जा सकता है परन्तु इस तरीके से पेट तो तृंप्त नहीं हो सकता था। लेखक ऐसा सोच रहे थे कि नवाब साहब ने ऊँची डकार ली और लेखक को यह जताया कि उनका पेट भी भर गया था। इसके अलावा लेखक पर अपनी नवाबी रईसी का प्रभाव डालने के लिए कहते है कि खीरा खाने में स्वादिष्ट तो होता है लेकिन कठिनाई से पचता है और पाचन तंत्र पर बुरा प्रभाव डालता है। नवाब साहब के ऐसा कहते ही लेखक के ज्ञान की आँखे खुल जाती है और व्यंग्य के रूप में कहते हैं कि ऐसे ही होते हैं 'नयी कहानी के लेखक'। लेखक नयी कहानी के लेखकों के लिए व्यंग्यात्मक कटाक्ष करते हुए कहते है कि जब खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से पेट भर सकता है, डकार आ सकती है तो फिर नयी कहानी के लेखक भी बिना विचार, घटना और पात्रों के नयी कहानी बना सकते है।

विशेषः— 1. 'नयी कहानी' के लेखकों पर व्यंग्य किया है कि वे बिना विचार, घटना, पात्रों के लेखक बनने की इच्छा से कहानी रचना करते है।

2. भाषा में उर्दू मिश्रित हिन्दी शब्दो का प्रयोग किया है।

3. नवाबी रईसों के बनावटी तौर तरीको पर प्रकाश डाला है।

4. शैली व्यंग्यात्मक है।

प्रश्न 2. ''ठाली बैठे, कल्पना करते .... सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ।''

उत्तर. संदर्भः— प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग—2' में संकलित व्यंग्य रचना 'लखनवी अंदाज' से लिया गया है। इसके लेखक 'यशपाल' है।

प्रसंगः— इस अंश में लेखक नवाब साहब के संकोच और असुविधा का वर्णन कर रहे है।

व्याख्याः— लेखक कहते है खाली बैठे रहने के कारण कल्पना करते रहने की उनकी पुरानी आदत थी। अतः असुविधा क्यों अनुभव हो रही थी। लेखक सोचते है कि जवाब साहब ने कम खर्च ओर बिल्कुल अकेले यात्रा करने के उद्देश्य से सेकण्ड क्लास का टिकिट खरीद लिया हो और अब एक सज्जन के आ जाने से उनकी इस योजना में बाधा पड़ रही थी। लखनऊ के नवाब अपनी रईसी व शानौशौकत के लिए मशहूर थे। इसलिए वे नहीं चाहते थे कि लखनऊ का काई बड़ा आदमी उन्हें सेकण्ड क्लास में यात्रा करते देखे क्योंकि ऐसा सफर उनके सम्मान के विरूद्ध होता। लेखक सोचता है कि सफर में समय व्यतीत करने के लिए खीरे खरीदे होगें पर एक सफेदपोश के सामने खीरे जैसी तुच्छ वस्तु खाने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे।

विशेषः— 1. लेखक ने नवाब साहब की मानसिकता का वर्णन किया है।

2. भाषा सहज, सरल व बोधगम्य है।

3. उर्दू मिश्रित हिंदी शब्दावली का प्रयोग किया है।

4. शैली व्यंग्यात्मक है।

<u>निबन्धात्मक प्रश्नः–</u>

प्रश्न 4. 'लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफेदपोश सज्जन' इन शब्दों से लेखक ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर. इन शब्दों के द्वारा लेखक ने लखनऊ के उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो खुद को किसी नवाबी खानदान का वंशज मानते हुए आम आदमियों से श्रेष्ठ मानते हैं। इनकी बोलचाल, वेशभूषा में अभी भी वही नजाकत व नफासत का दिखावा प्रकट होता है। खानदानी रईसी के अभिमान रखने की मानसिकता पर व्यंग्य किया है उनके आचरण में दिखावटीपन प्रकट होता है। वे खुद को आम आदमियों से श्रेष्ठ समझते है और नवाबी स्तर से कम का काई काम करते देखें जाने पर ये लोग परेशान हो जाते है अतः लेखक ने इन शब्दों का प्रयोग किया।

प्रश्न 5. 'लखनवी अंदाज' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर. लेखक यशपाल ने एक लखनवी नवाब साहब के खीरे के इस्तेमाल के लखनवी अंदाज को अपनी कहानी का विषय बनाया है। नवाब साहब खीरे को सूंघकर ही उसका स्वाद का आनंद प्राप्त कर लेते हैं और डकार लेकर पेट भर जाने का दिखावा भी करते हैं। लेखक ने खानदानी रईसी के इन दिखावों पर व्यंग्य किया है साथ ही साथ इनके माध्यम से 'नयी कहानी' के लेखको पर भी कटाक्ष किया है। बिना विचार घटना और पात्रों के कहानी लिखने को उसने नयी कहानी के लेखको का लखनवी अंदाज ही माना है। इस प्रकार 'लखनवी अंदाज' शीर्षक कहानी के कथ्य और उद्देश्य को पूरी तरह सार्थकता प्रदान करता है अतः यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

शेखावाटी मिशन-100

11. एक कहानी यह भी (मन्नू भंडारी)

रिक्त स्थानः–

प्रश्न 1. लेखिका की यादों का सिलसिला .... से शुरू होता है।

प्रश्न 2. पिताजी रसाई को .... कहते थे।

प्रश्न 3. पिताजी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी दुर्बलता थी उनकी ....।

प्रश्न 4. मन्नू भंडारी की हिंदी की प्राध्यापिका .... थी।

प्रश्न 5. मन्नू भंडारी का जन्म .... में हुआ था।

उतरः– 1. अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले, 2. भटियारखाना, 3. यशलिप्सा, 4. शीला अग्रवाल, 5. मध्यप्रदेश के भानपुरा गांव

सही–गलतः–

प्रश्न 1. मन्नू भंडारी पांच भाई बहनों मे सबसें छोटी थी। (सही / गलत)

प्रश्न 2. एक कहानी यह भी एक आत्मकथा है। (सही / गलत)

प्रश्न 3. अपनो के हाथों विश्वासघात से लेखिका के पिता बन गए थे। (सही / गलत)

प्रश्न 4. लेखिका मन्नू भंडारी अपनी मां को आदर्श मानती थी। (सही / गलत)

प्रश्न 5. लेखिक मन्नू भंडारी बचपन में काली, दुबली व मरियल सी थी। (सही / गलत)

उतरः– 1. सही, 2. गलत, 3. सही, 4. गलत, 5. सही

एक शब्द वाले प्रश्न–उतरः–

प्रश्न 1. 'एक कहानी यह भी' में लेखिका का कौन सा व्यक्तित्व सामने आया है?

उत्तर. स्वतंत्रता सेनानी

प्रश्न 2. 'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका का क्या नाम है?

उत्तर. मन्नू भंडारी

प्रश्न 3. मन्नू भंडारी का बचपन कहाँ बीता?

उत्तर. अजमेर

प्रश्न 4. लेखिका के पिता के मित्र का क्या नाम था?

उत्तर. डॉ. अम्बालाल

प्रश्न 5. लेखिका और उनके पिता के बीच टकराहट का क्या हाल था?

उत्तर. विचारो की भिन्नता

प्रश्न 6. 'एक कहानी यह भी' पाठ में लेखिका के मन में कौनसी हीन भावना ग्रंथि बन गई थी?

उत्तर. काले रंग की होना।

प्रश्न 7. 'भटियारखाना' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर. भटियारखाना शब्द का अर्थ है– वह स्थान जहाँ भट्टी या चूल्हा जलता है।

प्रश्न 8. मन्नू भंडारी का प्रसिद्ध उपन्यास कौनसा है?

उत्तर. महाभोज

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्रश्न 1. लेखिका मन्नू भंडारी जन्म कहा हुआ था?

उत्तर. लेखिका मन्नू भंडारी का जन्म मध्यप्रदेश के भानपुरा गाँव में हुआ था।

प्रश्न 2. मन्नू भंडारी के पिता किस कार्य में लगे हुए थे?

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर. मन्नू भंडारी के पिता अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश (विषयवार) तैयार करने का कार्य कर रहे थे।

प्रश्न 3. मन्नू भंडारी के परिवार में विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता क्या थी?

उत्तर. मन्नू भंडारी के परिवार में विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता थी कि उम्र में सोलह वर्ष और शिक्षा में मैट्रिक की हुई हो।

प्रश्न 4. 'एक कहानी यह भी' किस शैली में लिखा गया है?

उत्तर. एक कहानी यह भी आत्मकथा शैली/विधा में लिखा–गया है।

प्रश्न 5. लेखिका बचपन में कैसी दिखती थी?

उत्तर. मन्नू भंडारी बचपन में मरियल–सी, दुबली एवं काली दिखती थी।

प्रश्न 6. लेखिका के पिता का स्वभाव कैसा था?

उत्तर. लेखिका के पिता एक तरफ कोमल, संवेदनशील तो दूसरी तरफ कोधी, शक्की और अहंकारी थे।

प्रश्न 7. 'भग्नावशेषों को ढोते पिता' ऐसा लेखिका ने क्यों कहा है?

उत्तर. लेखिका के पिता की आर्थिक स्थिति खराब हो जाने के कारण अपने पुराने गुणों के बचे हुए अंशो के सहारे जी रहे थे।

प्रश्न 8. लेखिका के पिता का शक्की स्वभाव क्यों हो गया था?

उत्तर. लेखक के पिता अपनों के द्वारा ही विश्वासघात करने के कारण शक्की स्वभाव के हो गए थे।

प्रश्न 9. लेखिका का साहित्यिक दुनिया से परिचय किसने करवाया?

उत्तर. लेखिका का साहित्यिक दुनिया से परिचय हिन्दी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने करवाया। उन्होने लेखिका को चुन–चुन कर साहित्य पढ़ने की सलाह दी।

प्रश्न 10. आत्मकथ्य किसे कहते है?

उत्तर. आत्मकथ्य में व्यक्ति अपने जीवन में घटित घटनाओं के बारे में बहुत कम बातें बताता हैं या जीवन में घटित कुछ घटनाओं की तरफ इशारा मात्र करता है।

प्रश्न 11. लेखिका का व्यक्तित्व किन–किन व्यक्तियों से प्रभावित हुआ?

उत्तर. लेखिका का व्यक्तित्व उनके पिता व उनकी हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से अत्यधिक प्रभावित हुआ।

प्रश्न 12. कॉलेज के प्रिंसिपल से मिलने जाते समय लेखिका के पिता की मनः स्थिति कैसी थी?

उत्तर. प्रिंसिपल द्वारा लेखिका के पिता को पत्र लिखकर शिकायत की गई और उन्हे मिलने बुलाया। उस समय वह अत्यन्त क्रोधित थे।

प्रश्न 13. लेखिका मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'एक कहानी यह भी' में किसका व्यक्तित्व उभर कर आया है?

उत्तर. इसमें लेखिका के किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओ के साथ उनके पिताजी और उनकी कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व उभर कर सामने आया है।

प्रश्न 14. लेखिका के पिता के मित्र डॉ. अम्बालाल प्रसन्न क्यों हुए थे?

उत्तर. आजाद हिंद फौज पर मुकदमा चलाने के विरोध में लेखिका द्वारा दिए गये जोशीले भाषण को सुनकर उनके पिता के मित्र डॉ. अम्पालाल प्रसन्न हुए थे।

प्रश्न 15. लेखिका और शीला अग्रवाल को कॉलेज से क्यों निकाला गया?

उत्तर. लड़कियों को भड़काने के लिए और अनुशासन व्यवस्था बिगाड़ने के कारण शीला अग्रवाल तथा लेखिका को कॉलेज से निकाला गया।

<u>लघूत्तरात्मक प्रश्नः–</u>

प्रश्न 1. लेखिका के मन में हीनता का भाव क्यों पैदा हो गया था?

उत्तर. लेखिक मन्नू भंडारी बचपन में काली, दुबली व मरियल सी थी। उसकी बड़ी बहन सुशीला गौरी, स्वस्थ और हँसमुख थी। उनके पिता उनकी तुलना बड़ी बहन से करते थे। जिस कारण लेखिका का आत्मविश्वास समाप्त सा हो गया और उन्हें लगता कि सफलता योग्यता के कारण नहीं बल्कि संयोगवश मिली है।

प्रश्न 2. लेखिका मन्नू भंडारी अपनी माँ को अपना आदर्श क्यों नहीं बना सकी? कारण सहित बताइए।

उत्तर. लेखिका अपनी माँ को अपना आदर्श इसलि नहीं बना सकी क्योंकि–

1. माँ अनपढ़ होने के कारण अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं थी।
2. पिता के अन्याय को भाग्य मानकर सहती थी।
3. माँ के त्याग और सहनशीलता को उनकी असहाय और मजबूरी का परिणाम मानती थी।

प्रश्न 3. लेखिका किसके सहयोग से जागरूक नागरिक बन पायी थी?

उत्तर. लेखिका के पिता ने उन्हे रसोईघर से हटाकर सामाजिक समस्याओं से अवगत करवाया। राजनैतिक बहसों में भाग लेकर देश में हो रही गतिविधियों से अवगत करवाया जिससे वह उनके सहयोग से जागरूक नागरिक बन पायी।

प्रश्न 4. ''कितनी तरह के अन्तर्विरोधों के बीच जीते थे वे।'' लेखिका ने पिता के व्यक्तित्व के किन अंतर्विरोधों का उल्लेख किया है?

उत्तर. लेखिका के पिता परस्पर विरोधी स्थितियों और आकांक्षाओं के साथ जीना चाहते थे एक तरफ तो वे विशिष्ट बनने और बनाने की प्रबल लालसा रखते थे तो दूसरी तरफ उन्हे सामाजिक प्रतिष्ठा और छवि को बनाए रखने की भी चिंता रहती थी। सम्मान और विशिष्टता प्राप्त करने के लिए उसका मूल्य चुकान का साहस उनमें नहीं था।

प्रश्न 5. 'एक कहानी यह भी' लेखिका ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर. इस आत्मकथ्य 'एक कहानी यह भी' से हमें संदेश मिलता है कि स्वतंत्रता और जन आंदोलनों मे स्त्री–पुरूष की बराबरी की भागीदारी होनी चाहिए। माता पिता को संतान के व्यक्तित्व विकास में बाधक नहीं बनना चाहिए।

प्रश्न 6. मन्नू भंडारी की विशेषताएँ पाठ 'एक कहानी यह भी' के आधार पर बताइए।

उत्तर. मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्न प्रकार से है–

1. विद्रोही स्वभाव–लेखिका प्रारम्भ से ही हठी व विद्रोही स्वभाव की थी। लेखिका का व उनके पिता का वैचारिक मतभेद प्रारम्भ से ही था।
2. नेतृत्व कौशल–विद्यार्थी जीवन से ही लेखिका हड़ताल, जुलूस, भाषण, प्रभात फेरी में बढ़ चढ़कर भाग लेती थी।
3. साहित्यिक चेतना–पिता के कहने पर राजनैतिक बहसों मे भाग लेती थी और शीला अग्रवाल के प्रभाव से लेखकीय व्यक्तित्व उभर कर सामने आया।

प्रश्न 7. लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

उत्तर. लेखिका के पिता का आग्रह रहता था कि लेखिका रसोई से दूर रहे वे रसोई को भटियारखाना कहते थे। उनका मानना था कि इस भटियारखानें में रहने से व्यक्ति की प्रतिभा और क्षमता मट्टी में चली जाती है अर्थात् नष्ट हो जाती है। इसे वे समय की बर्बादी मानते थे।

प्रश्न 8. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखो।

उत्तर. लेखिका के पिता लेखिका को देश–समाज के प्रति जागरूक बनाना चाहते थे किंतु घर तक ही सीमित रखना चाहते थे। लेखिका को उनके पिता के द्वारा निर्धारित सीमा स्वीकार नहीं थी वह सक्रिय रूप से आंदोलन में भाग लेना चाहती थी।

लेखक परिचयः–

प्रश्न 1. लेखिक मन्नू भंडारी का जीवन व कृतित्व परिचय लिखिए।

उत्तर. हिंदी की सुप्रसिद्ध कहानीकार मन्नू भंडारी का जन्म मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में 3 अप्रैल 1931 में हुआ था। इनकी कहानियों में नारी जीवन की विडम्बना तथा पीड़ा का मार्मिक चित्रण हुआ है। इनकी रचनाओं में स्त्री मन से जुड़ी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती है। साहित्य के क्षेत्र में इनकी उपलब्धियों के लिए इन्हें हिंदी अकादमी शिखर सम्मान, राजस्थान, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

इनकी रचनाएँ निमन हैंः–

कहानी संग्रह– मैं हार गई, एक प्लेट सैलाब, त्रिशंकु तथा यही सच है।

उपन्यास– महाभोज तथा आपका बंटी इनका देहावसान 15 नवम्बर 2021 को 90 वर्ष की अवस्था में हुआ।

प्रश्न 2. ''लड़कियों को जिस उम्र से स्कूल .... क्या कुछ हो रहा है?''

उत्तर. संदर्भः– प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग–2' में संकलित आत्मकथ्य 'एक कहानी यह भी' से लिया गया है। इसकी लेखिका मन्नू भंडारी है।

प्रसंगः– इस अंश में लेखिका अपने पिता के व्यक्तित्व के बारे में बता रही हैं।

व्याख्याः– लेखिका कहती है कि जिस समय लड़कियों को स्कूली शिक्षा देने के साथ–साथ कुशल गृहिणी और पाक–कला में निपुण किया जाता हैं, उनके पिता लेखिका से आग्रह करते है कि वे रसोई से दूर रहे। रसोई को वे भटियारखाना कहते थे। उनके अनुसार रसोई में रहना, अपनी काबिलियत और क्षमता को खत्म करना था। इसलिए लेखिका के पिता भटियारखाने से लेखिका को दूर रखने के लिए आग्रह करते थे। लेखिका के पिता का प्रिय शौक बहस करना था अतः आए दिन उनके घर पर राजनैतिक दलों के लोग इकट्टे होते व बहसे करते थे। लेकिन जब चाय नाश्ता देने जाती तो पिताजी उनको वही बैठा लेते और उन सबकी बातें सुनने और समझने के लिए कहते। उस समय स्वतंत्रता आंदोलन चरम पर था अतः लेखिका के पिता चाहते थे कि लेखिका देश–दुनिया में क्या हो रहा है उसको जाने व समझे।

विशेषः– 1. शैली आत्मकथात्मक है।

2. भाषा सरल, सहज व बोधगम्य है।

3. शब्दों का वाक्य विन्यास अद्भुत है।

प्रश्न 3. जब रगों में लहू की जगह .... कोप से बच गई थी।

उत्तर. संदर्भः– प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग–2 में संकलित आत्मकथ्य 'एक कहानी यह भी' से लिया गया है। इसकी लेखिका मन्नू भंडारी है।

प्रसंगः– इस अंश में लेखिका पिता के चरित्र की कमजोरियों और व्यवहार के बारे में अवगत करवा रही हैं।

व्याख्याः– लेखिका कहती है कि युवाओं की नसों में रक्त जब लावा बन जाता है अर्थात रक्त में क्रोध, उत्साह, उन्माद मिलकर लावे का रूप ले लेता है तब उनके सारे डर, भय नष्ट हो जाते है। इसका ज्ञान लेखिका को तब हुआ जब उनकी क्रोध से सबको डरा देने वाले पिताजी से अपने विचारों को लेकर टकराहट शुरू हुई। यह टकराहट लेखिका ने राजेन्द्र यादव से शादी की तब तक चलती रही।

लेखिका कहती है कि उनके पिता के व्यवहार की एक कमजोरी थी 'यश प्राप्त करने की चाह।' उनके जीवन का यह सिद्धांत था कि व्यक्ति को अपना जीवन विशिष्ट बन कर जीना चाहिए। सम्मान, यश प्राप्त हो ऐसे कार्य करने चाहिए। जीवन में प्रभुत्व और प्रतिष्ठा प्राप्त हो। उनकी इसी चाह के कारण लेखिका कई बार उनके कोप से बच गई क्योंकि उनके द्वारा किए गए कार्यो से समाज में यश प्रसिद्धि और सम्मान प्रापत हो रहा था।

विशेषः– 1. शैली आत्मकथात्मक है।

2. भाषा सरल, सहज, बोधगम्य है।

3. शब्दों का वाक्य विन्यास अद्भुत है।

<u>निबंधात्मक प्रश्नः—</u>

प्रश्न 1. मन्नू भंडारी के पिता के व्यक्तित्व की विशेषताएँ पाठ 'एक कहानी यह भी' के आधार पर बताइये।

उत्तर. मन्नू भंडारी के पिता एक विरोधाभासी व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। उनकी विशेषताएँ जो अनुकरणीय है वह है—

1. वे बेहद संवेदनशील और कोमल हृदय वाले थें। अपने बच्चो की भावनाओं को समझते थे।
2. शिक्षा के प्रति जागरूक थे। अपने घर पर ही आठ—दस बच्चों को शिक्षित करने का दायित्व खुशी से पूरा करते थे।
3. देशप्रेम की भावना रखते थे।
4. समाज सुधार और राजनीति में दिलचस्पी रखते थे।
5. बेटी के अच्छे कार्यो पर व भाषण आदि पर गर्व करते और देश प्रेम के प्रति अग्रसर करते थे।
6. विशिष्ट बनने और सम्मान हासिल करने की प्रबल भावना रखते थे साथ ही सामाजिक छवि भी उत्तम रखना पसंद करते थे।

प्रश्न 2. लेखिका के व्यक्तित्व को किस—किस ने प्रभावित किया और कैसे?

उत्तर. लेखिका के व्यक्तित्व पर उनके पिता और उनकी हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने अत्यधिक प्रभावित किया।

पिता का प्रभाव — उनके पिता का सकारात्मक व नकारात्मक राजनैतिक बहसों में शामिल करके समाज व देश के प्रति जागरूक बनाया। रसोई तथा घर के काम से दूर रख कर उसकी प्रतिभा को निखरने का अवसर प्रदान किया। कॉलेज में प्रभुत्व की प्रशंसा करके नेतृत्व क्षमता को प्रोत्साहित किया लेकिन पिताजी के गोरे रंग के प्रति लगाव ने लेखिका में हीनता का भाव पैदा किया। पिताजी के शक्की और क्रोधी स्वभाव की भी लेखिका के व्यक्तित्व मे झलक दिखाई देती है। हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया, इसके अलावा स्वतंत्रता आंदोलन में खुलकर भाग लेने के लिए प्रेरित और खोया हुआ आत्मविश्वास लौटाया।

शेखावाटी मिशन—100

12. नौबतखाने में इबादत (यतीन्द्र मिश्र)

रिक्त स्थानः—

प्रश्न 1. अवधी पांरपरिक लोक गीतों एक चैती में .... का उल्लेख बार—बार मिलता है।

प्रश्न 2. काशी .... की पाठशाला है।

प्रश्न 3. शहनाई को बजाने के लिए .... का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 4. प्रवेश दार के ऊपर मंगल ध्वनि बजाने का स्थान .... कहलाता है।

प्रश्न 5. बिस्मिल्ला खाँ के बचपन का नाम .... था।

उत्तर — 1. शहनाई, 2. संस्कृति 3. रीड 4. नौबतखाना 5. अमीरूद्दीन

सही—गलतः—

प्रश्न 1. रसूलन बाई और बतूलन बाई के गीतो को सुनकर अमीरूद्दीन की रूचि गायकी में बढ़ी। (सही / गलत)

प्रश्न 2. डुँमराव की सोन नदी के किनारे पर उगने वाली नरकट धास से शहनाई बनती है। (सही / गलत)

प्रश्न 3. कुलसुम की देशी धी में बनी कचौडी को संगीतमय कचौडी कहते हैं। (सही / गलत)

प्रश्न 4. भीमपलासी और मुल्तानी एक प्रकार के राग हैं। (सही / गलत)

प्रश्न 5. नौबतखाने में इबादत यनीन्द्र मिश्र द्वारा रचित रेखाचित्र है। (सही / गलत)

उत्तर — 1. सही, 2. सही, 3. सही, 4. सही, 5 सही

एक शब्द वाले प्रश्न—उतरः—

प्रश्न 1. संकटमोचन मंदिर में संगीत का आयोजन कब होता ।

उत्तर. हनुमान जयंती के अवसर पर

प्रश्न 2. शहनाई को क्या उपाधि दी गई है?

उत्तर. सुषिर वाद्यों में शाह

प्रश्न 3. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म कहाँ हुआ था?

उत्तर. बिहार के डुँमराव में

प्रश्न 4. 'नौबतखाने मे इबादत ' रेखाचित्र किस पर लिखा गया है?

उत्तर. बिस्मिल्ला खाँ प्रसिद्ध शहनाई बादक

प्रश्न 5. शास्त्रों मे काशी किस नाम से प्रतिष्ठित है?

उत्तर. आनंद कानन

प्रश्न 6. नौबदखाने में इबादत के लेखक हैं—

उत्तर. यतीन्द्र मिश्र

अत्तिलधूत्तरात्मक प्रश्नः—

प्रश्न 1. नौबतखाने में इबादत से क्या तात्पर्य है।

उत्तर. नौबतखाने प्रवेश द्वार पर मंगल ध्वनि, शहनाई द्वारा बजाये जाने वाले स्थान को कहते है। शहनाई वादन के साथ ईश्वर की प्रार्थना करना इबादत कहलाती है।

प्रश्न 2. डुमराँव गाँव किन कारणों से इतिहास में प्रसिद्ध है?

उत्तर. अमीरूद्धिन (बिस्मिल्ला खाँ) का जन्म डुमराँव गाँव बिहार में हुआ था। शहनाई में प्रयुक्त होने वाली रीड एक प्रकार की घास सोन नदी के किनारे उत्पन्न होने के कारण डुमराव गाँव प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न 3. काशी को एक और किस नाम से जाना जाता है?

शिक्षा मिशन—100

उत्तर. काशी को 'आनंद कानन' के नाम से जाना जाता है। जिसका अर्थ आनन्द या खुशियाँ देने वाला कानन (वन) होता है।

प्रश्न 4. 'नौबतखान में इबादत पाठ किसके जीवन पर आधारित है?

उत्तर. यतीन्द्र दास मिश्र द्वारा रचित यह पाठ शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के एक रोचक व्यक्ति चित्र पर आधारित है।

प्रश्न 5. शहनाई को शाहेनय क्यों कहते है?

उत्तर. शहनाई को शाह अर्थात सुषिर वाद्यों के राजा कर उपाधि प्राप्त है इसलिए शहनाई को शाहेनय कहते हैं

प्रश्न 6. शहनाई कैसा वाद्य है तथाा इसका प्रयोग कब होता है?

उत्तर. शहनाई 'सुषिर' वाद्य है। तथा मगलकारी अवसरों पर इसका प्रयोग होता है।

प्रश्न 7. बिस्मिल्ला खॉ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यो कहा जाता है?

उत्तर. बिस्मिल्ला देश के महानतम शहनाई वादक रहे हैं। अतः बिस्मिल्ला को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहते है।

प्रश्न 8. काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा गया हैं?

उत्तर. काशी भारतीय संस्कृति की संगम स्थली है। यहाँ रहकर संस्कृति के इतिहास और विकास का अध्ययन किया जा सकता है।

प्रश्न 9. सूषिर वाद्य किसे कहते है? नाम बताइये।

उत्तर. फुँक कर बजाए जाने वाले वाद्य सुषिर वाद्य कहलाते हैं। जैसेः– शहनाई , नागस्वरम्, बाँसुरी, बीन, आदि ।

प्रश्न 10. बिस्मिल्ला खाँ की महत्त्वपूर्ण जिजीविषा क्या थी?

उत्तर. संगीत को सम्पूर्णता के साथ सीखना, सच्चे सुर की साधना उनकी महत्त्वपुर्ण जिजीविषा थी।

प्रश्न 11. कुलसुम की देसी घी वाली दुकान में बनी कचौड़ी को बिस्मिल्ला खॉ संगीतमय कचौड़ी क्यों कहते है?

उत्तर. बिस्मिल्ला खाँ को कुलसुम हलवाइन की देशी घी कचौड़ियाँ बहुत पसंद थी। स्वादिष्ट तो लगती ही थी, साथ ही हलवाई द्वारा कचौडी घी में डालते समय की 'छन्न' की ध्वनि में बिस्मिल्ला को संगीत के आरोह –अवरोह सुनाइ पड़ते थे।

प्रश्न 12. बिस्मिल्ला खाँ के मन में संगीत– प्रेम जगाने में किसका योगदान रहा ।

उत्तर. बिस्मिल्ला खॉ रियाज के लिए जब बालाजी मंदिर जाते थे तो मार्ग में रसूलनबाई और बतजुलनबाई गायिका बहनों के ठुमरी टप्पे तथ दादरा गाने की मधुर ध्वनि को सुनकर संगीत के प्रति आसक्त हुए ।

प्रश्न 13. 'भीतर की आस्था रीड के माध्यम से बजती है। आशय स्पष्ट किजिए।

उत्तर. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे। उनके मन की यह श्रद्धा शहनाई के स्वरोंक के रूप में मधुर संगीत जो शहनाई की रीड से निकलता, उससे प्रकट होता था।

प्रश्न 14. बिस्मिल्ला खॉ अस्सी बरस से खुदा से क्या माँगते आ रहे है?

उत्तर. बिस्मिल्ला खा अस्सी बरस से खुदा से सच्चा सुर प्राप्त करने का वरदान माँगते आ रहे थे जिसे सुनकर श्रोताओं की आँखों से सच्चे मोतियों जैसे आँसू सहज भाव से निकल पडे।

प्रश्न 15. नागस्वरम् क्या है? शहनाई और नागस्वम् में क्या समानता है?

उत्तर. नागस्वम् दक्षिण भारत का मंगल अवसरों पर बजाया जाने वाला वाद्य हैं दोनों ही वाद्य शुभ एवं मांगलिक उत्सवों पर प्रयुक्त होते है।

प्रश्न 16. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की काशी को क्या देन है?

उत्तर. मुसलमान होते हुए गंगा को मैया मान, बालाजी व विश्वनाथ के प्रति आस्था रखते हुए काशी को जन्नत जैसा पवित्र मानकर काशी को हिन्दू–मुस्लिम एकता की मूल्यवान संस्कृतिदी है।

लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्रश्न 1. शहनाई को 'सुषिर वाद्यों मे शाह' की उपाधि क्यों दी गई है?

उत्तर. संगीत शास्त्र के अनुसार फूँककर बनाए जाने वाले वाद्यों को सुषिर वाद्य कहा जाता है। शहनाई अरब देशों की देन मानी जाती है। अरब देशों में फूँककर बजाए गाने वाले वाद्यों की जिसमें रीड का प्रयोग होता है 'नय' कहते है। शहनाई की ध्वनि सबसे मधुर होने के कारण उसे सुषिर वाद्यों में 'शाह' कहा गया है। इसी प्रकार 'शाहेनय' ही कालांतर में 'शहनाई' हो गयी।

प्रश्न 2. 'नौबतखाने में इबादत नामक पाठ में लेखक क्या संदेश देते है?

उत्तर. यह पाठ 'अनेकता मे एकता' का संदेश देता है। सभी धर्मो के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए। कला और कलाकार का सम्मान करना चाहिए तथा प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँच कर भी सादगी और निराभिमान बने रहने का संदेश देता है।

प्रश्न 3. 'खाँ साहब हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर. भारतीय संगीत जगत को प्रतिष्ठा दिलाने मे बिस्मिल्ला खाँ का अपूर्व योगदान है। भारतरत्न से लेकर देश के ढेरों विश्व–विद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्म विभूषण जैसे सम्मानो से नहीं बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य मे हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे।

प्रश्न 4. बिस्मिल्ला खाँ को काशी की संस्कृति में आ रहे किन परिवर्तनों को देखकर ठेस पहुँचती थी?

उत्तर. बिस्मिल्ला खाँ को काशी की अनेक सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओ जैसेः– मलाई बरफ और देसी घी के व्यंजनों का तोप लोप, संगतकारों के प्रति संगीतकारों का उपेक्षापूर्ण व्यवहार, संगीत, साहित्य और अरब की अनेक परम्पराओं का लुप्त होना आदि को देखकर ठेस पहुँचती है।

प्रश्न 5. 'बिस्मिल्ला खाँ धार्मिक उदारता व सद्भाव के प्रतीक हैं।' कैसे?

उत्तर. बिस्मिल्ला खाँ की एक ओर अपने धर्म इस्लाम में पूर्ण आस्था है, वह पाँचो वक्त की नमाज पढ़ते हैं, वहीं दूसरी ओर गंगा मैया, बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति भी अपार श्रद्धा–भाव रखते है। इससे सिद्ध होता है कि वह धार्मिक उदारता और सद्भाव के प्रतीक है।

प्रश्न 6. बिस्मिल्ला खाँ के लिए सबसे बड़ी जन्नत क्या थी?

उत्तर. जन्नत का अर्थ होता है– स्वर्ग। बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई बजाने में और काशी में निवास करने में स्वर्ग जैसा सुख अनुभव होता था इसलिए वह शहनाई और काशाी को ही अपने लिए सबसे बड़ी जन्नत मानते थे।

प्रश्न 7. शिष्या ने खाँ साहब को किस बात पर टोका?

उत्तर. खाँ साहब को देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' प्राप्त होने के बावजूद भी वह अपनी फटी तहमद पहनते थे। विशिष्ट लोगो से, मेहमानों से उसी पुरानी फटी लुंगी (तहमद) में बिना संकोच के मिलते थे। अतः शिष्या ने उनकी प्रतिष्ठा को देखते हुए, उनकी वेशभूषा के लिए टोका।

प्रश्न 8. बिस्मिल्ला खाँ शहनाईवादन में जादुई असर किसका परिणाम मानते थे?

उत्तर. शहनाई के उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के कठिन परिश्रम और पूर्ण समर्पण का परिणाम था कि जहॉ भी खाँ साहब शहनाई बजाते, लोग उनको और उनके संगीत को पहचान लेते थे। वह शहनाई वादन के जादुई असर का श्रेय खुद को न देकर गंगा मैया, बाबा विश्वनाथ और अपने उस्ताद को देते थे। खुदा के आर्शीवाद का परिणाम मानते थे।

लेखक परिचयः–

प्रश्न 1. यतीन्द्र मिश्र का जीवन व कृतित्व परिचय लिखिए।

उत्तर. हिंदी साहित्य, संस्कृति और कला में गहरी रूचि रखने वाले हिंदी कवि, सम्पादक और संगीत अध्येता यतीन्द्र मिश्र का जन्म विश्वविख्यात अयोध्या नगरी में 12 अप्रैल 1977 ई. को हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में

स्नात्तकोत्तर की उपाधि स्वर्ण पदक से प्राप्त की। पढ़ाई के समय से ही साहित्य और संस्कृति के प्रति आकर्षित रहे। 1999 से ही 'विमला देवी फाउंडेशन' नामक सांस्कृतिक न्यास का संचालन कर रहे है। हिंदी साहित्य जगत मे इनके योगदान के लिए 'भारत भूषण अग्रवाल कविता सम्मान' 'ऋतुराज' सम्मान प्राप्त हुए हैं।

इनकी प्रमुख रचनाएँ है– तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

1. यदा कदा
2. अयोध्या तथा अन्य कविताएँ
3. ड्योढ़ी पर आलाप।

इसके अलावा शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी के जीवन और संगीत साधना पर एक पुस्तक 'गिरिजा' लिखी है।

<u>पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्याः–</u>

प्रश्न 1. काशी में संगीत आयोजन .... विश्वनाथ जी के प्रति भी अपार है।

उत्तर. संदर्भः– प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग–2 में' संकलित पाठ ''नौबतखाने में इबादत'' से लिया गया है। इसके लेखक यतीन्द्र मिश्र है।

प्रसंग'– इस अंश में लेखक काशी में चले आ रहे संगीत संबंधी आयोजन तथा बिस्मिल्ला खाँ के सर्वधर्म सद्भाव का परिचय दे रहे है।

व्याख्याः– काशी के विषय में लेखक कहते है कि यह धार्मिक क्रियाकलापों के साथ–साथ संगीत संबंधी आयोजनों के लिए भी प्रसिद्ध है। पिछले कई सालो से यह संगीत कार्यक्रम संकटमोचन मंदिर में होता आया है। यह मंदिर शहर के दक्षिण में लंका पर स्थित हैं। हनुमान जयंती के पावन अवसर पर यहा पाँच दिनों तक संगीत सम्मेलन आयोजित होता है। शास्त्रीय लौकिक दोनों ही प्रकार के गायन–वादन होते हैं। इस उच्चस्तरीय आयोजन में बिस्मिल्ला अवश्य भाग लेते हैं। खाँ साहब अपने धर्म के प्रति तो समर्पित हैं ही काशी विश्वनाथ में भी अपार श्रद्धा रखते है। इसका परिचय तब मिलता है जब वह काशी से बाहर किसी कार्यक्रम में भाग लेने जाते है तब वह विश्वनाथ तथा बालाजी मंदिर की ओर मुख करके बैठा करते थे। थोड़ी देर के लिए ही सही वह शहनाई का मुख भी उधर ही कर देते थे। उस समय उनके हृदय की श्रद्धा भावना सुरों के रूप प्रकट हुआ करती थी।

विषयः– 1. भाषा सरल, सहज व बोधगम्य है।

2. हिंदी–उर्दू मिश्रित शब्दावली है।

3. 'हिंदू–मुस्लिम एकता' की मूल्यवान संस्कृति बताई है।

प्रश्न 2. ''अपने ऊहापोहों'' से बचने .... क्यों नहीं आई।''

उत्तर. संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग–2' में संकलित पाठ ''नौबतखाने में इबादत'' से लिया गया है। इसके लेखक यतीन्द्र मिश्र है।

प्रसंगः– इस अंश में लेखक कहते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ सुर सम्राट होते हुए भी सदा खुदा से स्वर माँगते रहते हैं।

व्याख्याः– ऊहापोह का अर्थ है– असमंजस या अनिश्चितता की स्थिति। लेखक कहते हैं हम सभी अपनी उलझनों, समस्याओ से बचनेके लिए कोई आसरा, कोई गुफा खोजते है। जहाँ पहुँच कर हम अपनी चिंताएँ, अपनी कमजोरियाँ भूल सकें और फिर सब भूल कर सुखों के तिलिस्म में खो जाएँ। हिरण और बिस्मिल्ला खाँ में एक बात समान है कि जो वस्तु उनके भीतर ही स्थित है उसे वे बाहर खोज रहे है। अतः हिरण के माध्यम से खाँ साहब की शहनाई की तुलना करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार हिरण अपनी नाभि में कस्तूरी छिपे होने से अनजान तथा उसकी खुशबू से परेशान होकर पूरे जंगल में व्याकुल होकर उस कस्तूरी को ढूँढ़ता है जो उसके स्वयं के पास है, उसी प्रकार अस्सी बरसों से बिस्मिल्ला खाँ यही सोचते आए है कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त सातों सुरों का ज्ञान खर्च करने का तरीका और

सलीका अभीं तक उन्हे क्यों नहीं आया है। खुदा द्वारा शहनाई वादन कौशल प्रदान करने के बावजूद जीवनभर खुदा से सच्चे सुर की याचना करते रहे।

विशेषः— 1. हिरण की व्याकुलता की तुलना बिस्मिल्ला खाँ की हदय की व्याकुलता से की गई है।

2. भाषा शैली सहज, सरल व बोधगम्य है।

3. हिंदी—उर्दू मिश्रित शब्दावली का प्रयोग किया है।

<u>निबंधात्मक प्रश्नः—</u>

प्रश्न 1. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्न है—

1. धार्मिक सद्भाव से ओत प्रोत—बिस्मिल्ला खाँ हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। वह गंगा को मैया कहते थे। बाबा विश्वनाथ और बालाजी मंदिर मे शहनाई वादन करते थे। दिन में पाँच वार नमाज पढ़ते और मुस्लिम पर्वो में श्रद्धापूर्वक भाग लेते थे।

2. सरलता व सादगी की प्रतिमूर्ति— 'भारतरत्न' सहित अनेक विश्व विद्यालयों की मानद उपाधियाँ प्राप्त होने पर भी अभिमान रहित रहकर सरल व सादगीपूर्ण जीवन जीते थे।

3. ईश्वर में दृढ़ आस्था— अपने शहनाई वादन में निपुणता और प्राप्त सम्मान को खुदा को समर्पित करते थे।अल्लाह से 'सच्चा सुर' माँगते थे।

4. रियाजी और स्वादी— संगीत की साधना करना के साथ—साथ कुलसुम हलवाइन की देसी घी की कचौड़ी और मलाई बरफ के शौकिन थे।

5. रसिक और विनोदी— अभिनेत्री सुलोचना की फिल्म जुनून से देखते थे। रसूलन और बतूलन बाई की गायिकी के रसिक थे। और विनोदी स्वभाव के ये जैसा कि उन्होंने अपनी शिष्या से कहा— ''भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला, लुंगिया पे नाहीं।''

प्रश्न 2. 'बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे।' तर्क सहत उत्तर दीजिए।

उत्तर. बिस्मिल्ला खाँ संगीत कला के अनन्य उपासक थे। वह शहनाई बजाने की कला में पारंगत थे। वह अस्सी वर्ष तक लगातार शहनाई बजाते रहे। उनका शहनाई वादन बेजोड़ व अनुपम था। वे अपनी कला को ईश्वर की उपासना मानते थे। एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते थे। पाँचों वक्त वाली नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती थीं वे नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते थे— मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ। वे अपने आप पर झल्लाते भी थे कि सातों सुरो को सलीके से बरतने की तमीज अर्थात शहनाई सही ढंग से बजाना अभी तक क्यों नहीं आया इससे स्पष्ट होता है कि वह एक सच्चे कला उपासक थे।

शैक्षणिक मिशन—100

1.माता का अँचल

(शिवपूजन सहायः—1893—1963)

लेखक परिचयः—

जन्मः— गाँव—उनवाँस, जिला—भोजपुर (बिहार)

अन्य नामः— तारकेश्वरनाथ, भोलानाथ

कार्यः— बनारस की अदालत मे नकलनवीस व
हिंदी के अध्यापक के रूप में।

पत्रिका संपादनः— जागरण, हिमालय, मधुरी, बालक।

अन्यः— प्रतिष्ठित पत्रिका 'मतवाला' के संपादक—मंडल के रूप में।

रचनाएँः— देहाती दुनिया, ग्राम सुधार, वे दिन वे लोग, स्मृतिशेष आदि।

पाठ—परिचयः— लेखक शिवपूजन सहाय द्वारा रचित शीर्षक 'माता का अँचल' में बाल मनोवृत्तियों को दर्शाते हुए स्पष्ट किया गया है कि चाहे बचपन से ही बच्चे का जुड़ाव अपने पिता से कितना भी घनिष्ठ क्यों न हो परंतु विपदा आने पर उसे अपनी माता के अँचल में ही सुकून प्राप्त होता है।

निम्नांकित प्रश्नों मे सही उत्तर के विकल्प का चयन कीजिए—

प्रश्न 1. लेखक शिवपूजन सहाय का वास्तविक नाम क्या था?

(अ) अमरनाथ (ब) कमलनाथ

(स) तारकेश्वरनाथ (द) रामेश्वरनाथ

प्रश्न 2. लेखक के पिता 'रामनामा बही' पर कितनी बार राम—नाम लिखते थे।

(अ) तीन सौ बार (ब) तीन हजार बार

(स) पाँच सौ बार (द) हजार बार

प्रश्न 3. लेखक किसके साथ कुश्ती लड़ते थे?

(अ) बाबू जी के साथ (ब) मइयाँ के साथ

(स) हमजोलियों के साथ (द) मूसन निवासी के साथ

प्रश्न 4. भोलानाथ की माता के अनुसार बच्चे को खाना खिलाने का तरीका कौन नहीं जानता?

(अ) महतारी (ब) मरदुएं

(स) बच्चा स्वयं (द) उक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 5. कौन सा खिलौना लेकर लेखक बाहर गली में निकल जाते थे?

(अ) साइकिल (ब) गेंद

(स) काठ का घोड़ा (द) उक्त सभी

प्रश्न 6. पाठ के अनुसार कड़वा तेल किस तेल को कहा गया है?

(अ) जैतून का तेल (ब) नीम का तेल

(स) आँवले का तेल (द) सरसों का तेल

प्रश्न 7. हमजोलियों से मिलकर लेखक क्या करने लग जाते थे?

(अ) नृत्य (ब) अध्ययन

शेखावाटी मिशन—100

(स) विवाद (द) तमाशे

प्रश्न 8. बारात के जुलूस में समधी बनकर लेखक व मित्रों द्वारा किसकी सवारी की जाती थी?

(अ) घोड़े की (ब) बैल की

(स) ऊँट (द) बकरे की

प्रश्न 9. 'ऊँच नीच में बई कियारी' जो उपजी सो भई हमारी– पंक्ति कब गायी जाती थी?

(अ) चिड़ियों को पकड़ते समय

(ब) फसल काटते समय

(स) बारात का जुलूस निकालते समय

(द) दुकानदारी करते समय

प्रश्न 10. बरखा बंद होते ही बाग में क्या नजर आए?

(अ) बिच्छू (ब) सर्प

(स) जुगनू (द) मोंर

प्रश्न 11. लेखक और उनके साथियों में ज्यादा ढ़ीठ कौन था?

(अ) लेखक स्वंय (ब) बैजू

(स) सभी मित्र (द) कोई नहीं

प्रश्न 12. ''बुढ़वा बेईमान माँगे करैला का चोखा''– सुर किसके लिए अलापा गया?

(अ) गुरूजी के लिए (ब) बूढ़े वर के लिए

(स) बाबू जी के लिए (द) मूसन तिवारी के लिए

उत्तरमालाः– 1. (स) तारकेश्वरनाथ 2. (द) हजार बार 3. (बाबूजी जी के साथ) 4. (ब) मरदुए 5. (स) काठ का घोड़ा 6. (द) सरसों का तेल 7. (द) तमाशे 8. (द) बको कर 9. (ब) फसल काटते समय 10. (अ) बिच्छू 11. (ब) बैजू 12. (द) मूसन तिवारी के लिए

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

प्रश्न 1. बाहर आते ही हमारी बाट जोहनेवाला .... एक झुंड मिल जाता था।

प्रश्न 2. .... का तबूरा बजता .... को घिसकर शहनाई बजायी जाती।

प्रश्न 3. चुन चुनकर धुले–धुले .... आम चाबते थे।

प्रश्न 4. सचमुच 'लड़के और .... पराई पीर नहीं समझते।'

प्रश्न 5. .... पर जाकर हम लोग चूहों के बिल से पानी उलीचने लगे।

उत्तरमालाः– 1. बालकों का, 2. कनस्तर, 3. अमोले, 4. , 5. , 6.

सत्य/असत्य कथन छांटिए–

प्रश्न 1. भोलानाथ और उसके मित्र फसल तैयार करते समय मिट्टी के दीए का सूप बनाकर ओसाते और कमोरे की तराजू पर तोंलकर राशि तैयार करते है।

प्रश्न 2. गुरूजी के सिपाहियों के आगे पर बैजू नौ–दो ग्यारह हो गया।

प्रश्न 3. गणेशजी के चूहे की रक्षा के लिए शिवजी का साँप निकल आया।

प्रश्न 4. लेखक को डर से काँपते देखकर बाबू जी जोर से रो पड़े।

प्रश्न 5. भोलानाथ और उसके मित्र दियासलाई से अपने चरौंदे के

उत्तरमालाः– 1. असत्य, 2. सत्य , 3. सत्य , 4. असत्य, 5. सत्य

शेखावाटी मिशन–100

अतिलघूत्तरात्मक

प्रश्न 1. 'माता का अँचल' लेखक शिवपूजन सहाय के किस उपन्यास का अंश है?

उत्तर. 'माता का अँचल' शिवपूजन सहाय के 'देहाती दुनिया' उपन्यास का अंश है।

प्रश्न 2. 'जहाँ लड़कों का संग, तहाँ बाजे मृदंग।

जहाँ .... पंक्ति को पूर्ण करें।

उत्तर. 'जहाँ बुड्‌ढों का संग, तहाँ खरचे का तंग।'

प्रश्न 3. पूजा के समय लेखक शिवपूजन सहाय अपने पिता से किस बात की दिक करने लगते थे?

उत्तर. पूजा के समय लेखक अपने पिता से भभूत का तिलक लगाने की दिक करने लगे।

प्रश्न 4. लेखक के पिता रामायण का पाठ करते तब लेखक की क्या क्रिया रहती है?

उत्तर. उस समय लेखक अपने पिता के बगल में बैठे–बैठे आइने में अपना मुँह निहारा करते थे।

प्रश्न 5. पाँच सौ बार कागज के टुकड़ों पर राम–नाम लिखकर आटे की गोली में लपेटकर लेखक के बाबू जी क्या करते?

उत्तर. लेखक के बाबू जी राम–नाम लिखी आटे की गोलियों को गंगाजी जाकर मछलियों को खिलातें।

प्रश्न 6. लेखक के पिता कब बनावटी रोना रोने लगते?

उत्तर. जब लेखक उनकी मूँछें नोचने लग जाते तब उनके पिता बनावटी रोना रोने लग जाते।

प्रश्न 7. लेखक के पिता किस बर्तन में लेखक को क्या खिलाते?

उत्तर. लेखक के पिता फूल के कटोरे में गोरस और भात सानकर खिलातीं?

प्रश्न 8. थाली में दही–भात सानकर भोलनाथ की माता किस बहाने से उन्हें खिलाते?

उत्तर. अलग–अलग तोता, मैना, कबूतर, हंस, मोर आदि पक्षियों के बनावटी नाम से कौर बनाकर भोलानाथ की माता उन्हें खाना खिलाती।

प्रश्न 9. भोलानाथ के लिए रंगमंच का क्या साधन था?

उत्तर. बाबू जी जिस छोटी चौकी पर बैठकर नहाते थे वहीं भोलानाथ के लिए रंगमंच का साधन होता था।

प्रश्न 10. 'चंदोआ' का शाब्दिक अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. 'चंदोआ' का शाब्दिक अर्थ है– छोटा शामियाना।

प्रश्न 11. खेती करते वक्त लेखक और उनके साथी चबूतरे को किस प्रकार काम में लेते थे?

उत्तर. खेती करते वक्त चबूतरे के छोर पर घिरनी गड़ जाती और उसके नीचे की गली कुआँ बन जाती थी।

प्रश्न 12. दो लड़के बैल बनकर क्या कार्य करते थे?

उत्तर. दो लड़के बैल बनकर 'मोट' खींचने लग जाते।

प्रश्न 13. बाबूजी के अलावा बच्चों के द्वारा खेले गये नाटकों के दर्शक और कौन है?

उत्तर. राह चलने वाले बटोही एवं अन्य ग्रामीण इनके तमाशों के दर्शक बने।

प्रश्न 14. 'माता का अँचल' पाठ में किस मेले का जिक्र किया गया है?

उत्तर. उक्त शीर्षक में ददरी के मेले का उल्लेख मिलता है।

प्रश्न 15. मूसलाधार बारिश होने पर लेखक और उनके साथी पेड़ों की जड़ से किस प्रकार सट गए?

उत्तर. लेखक और उनके साथी पैड़ों की जड़ से बिलकुल इस प्रकार सट गए जैसे कुत्ते के कान में अँठई चिपक जाती है।

प्रश्न 16. गुरू जी ने किस की खबर ली?

उत्तर. गुरूजी ने तारकेश्वरनाथ (लेखक) की खबर ली।

प्रश्न 17. 'चिरौरी' शब्द का अर्थ स्पष्ट करें।

उत्तर. दीनता पूर्वक की जाने वाली प्रार्थना, विनती।

प्रश्न 18. ''राम जी की चिरई, राम जी का खेत, खा लो चिरई भर भर पेट''— कौन गा रहा था?

उत्तर. खेत से अलग खड़े होकर भोलानाथ (स्वयं लेखक) द्वारा ही ये पंक्ति गायी गई।

प्रश्न 19. जब बेतहाशा होकर बालक भोलानाथ दौड़कर घर में घुसा तब बाबूजी कहाँ बैठे हुए और क्या कर रहे थे?

उत्तर. उस वक्त बाबू जी बैठक के ओसारे (बरामदे) में बैठकर हुक्का पी रहे थे।

प्रश्न 20. भोला के बेतहाशा होकर दौड़ते हुए घर में आने पर मइयाँ क्या कर रही थी?

उत्तर. भोला के दौड़कर घर में आने पर मइयाँ चावल अमनिया (साफ) कर रही थी।

<u>लघूत्तरात्मक</u>

प्रश्न 1. शिवपूजन सहाय को उनके पिताजी भोलानाथ कहकर क्यों पुकारते थे?

उत्तर. जब स्नानादि के बाद पूजा पर बैठते समय लेखक के दिक करने पर उनके पिताजी उन्हें भभूत का चौड़े लिलार में त्रिपुंड कर देते और लेखक की लंबी–लंबी जटाएँ व भभूत रमाने से वे 'बम–भोला' के जैसे बन जाते। बम–भोला जैसे प्रतीत होने के कारण उनके पिताजी उन्हें प्यार से भोलानाथ कहकर पुकारते।

प्रश्न 2. ''महतारी के हाथ से खाने पर बच्चों का पेट भी भरता''— ऐसा क्यों कहा गया? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर खाना खिलाने के ढंग पर मइयॉ के तर्क को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर. मइयॉ लेखक के बाबू जी से कहती कि वे चार–चार दाने के कौर बच्चे के मुँह में देते हैं, जिससे थोड़ा खाने पर भी बहुत खा जाने का आभास बच्चे को होता है और वह उबकर खड़ा हो जाता है। उनके अनुसार पुरूषों को बच्चें को भरपेट खाना खिलाने का तरीका नहीं आता।

जबकि माताएँ अकसर पेट भर जाने के बाद भी और खिलाने की जिद कर अलग–अलग बनावटी पक्षियों के नाम के कौर बताकर उनको खिला देती है। लेखक की माता भी मानती है कि बच्चे को भर–मुँह कौर खिलाना चाहिए जिससे बच्चा भूखा ना रहे।

प्रश्न 3. लेखक किस प्रकार 'कन्हैया' बनकर बाबू जी की गोद में आते? उस रूप वर्णन को शब्दचित्र के माध्यम से प्रस्तुत करें।

उत्तर. जब लेखक की माता अपने पुत्र को पकड़कर एक चुल्लू कड़वा तेल लेखक के सिर में बोधकर उनकी नाभी और लिलार में काजल की बिंदी लगाकर चोटी गूँथती और उसमें फूलदार लट्ट बाँधकर रंगीन कुरता–टोपी पहना देती तब लेखक खासे ''कन्हैया'' बनकर बाबूजी की गोद में सिसकते–सिसकते बाहर आते थे।

प्रश्न 4. डर से काँपते हुए भोलानाथ को देखकर उनकी माता की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर. डर से काँपते भोलानाथ को देखकर माता जोर से रो पड़ी और सब काम छोड़ अधीर होकर भय का कारण पूछने लगी तथा अपने पुत्र को अंग भरकर दबाती और उनके अंगों को आँचल से पोंछकर चूम लेती। उन्होंने हल्दी पीसकर भोला के घावों पर लगायी। इस प्रकार माता स्वंय बड़े ही संकट में पड़ गई।

प्रश्न 5. भयभीत भोलानाथ की मनोदशा कैसी थी?

उत्तर. भयभीत भोलानाथ रोता, काँपता माता के अँचल में जा सिमटा। काँपो हुये धीमे सुर से 'सॉ.स.सॉ.' कहते हुये थर–थर काँपने लगा। रोंगटे खड़े हो गए। डर के मारे आँखें नहीं खोल पाया। ओठों में कंपन होने लगा और माता के अँचल की प्रेम और शांति के चँदोवे की छाया में छिपकर सुकून अनुभव करने लगा।

2.जॉर्ज पंचम की नाक

(कमलेश्वरः—1932—2007)

लेखक परिचयः—

जन्मः— मैनपुर (उ.प्र.)

शिक्षाः— इलाहाबाद वि.वि.से एम. ए.

कार्यः— दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक के पद पर

पत्रिका संपादनः— सारिका, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर

पुरस्कारः— साहित्य अकादमी से पुरस्कृत

सम्मानः— भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से सम्मानित

रचनाएँः— राजा निरबंसियाँ, खोई हुई दिशाएँ, सोलह छतों वाला घर, जिंदा मुर्दे (कहानी—संग्रह)

:— वही बात, आगामी अतीत, डाक बंगला, काली आँधी तथा कितने पाकिस्तान (उपन्यास)

अन्य गद्य विद्याः— आत्मकथा, यात्रावृतांत और संस्मरण

अन्यः— हिंदी फिल्मों व टी.वी. धारावाहिकों की पटकथा लेखन कार्य

पाठ—परिचयः— कमलेश्वर द्वारा रचित व्यंग्य रचना 'जॉर्ज पंचम की नाक' में इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ द्वितीय के भारत आगमन के समाचार से भारतीय शासन व्यवस्था की गुलामी की मानसिकता व राजनीतिक षड़यंत्रों पर करारा व्यंग्य किया गया है। साथ ही चतुर्थ स्तंभ कहलाने वाले समाचार—पत्र (प्रिंट मिडिया) में सच्ची कर्म निष्ठा का अभाव तथा सरकारी तंत्र से उसकी मिलीभगत एवं स्वार्थसिद्धि के कारण उत्पन्न कर्मविमुखत का पर्दाफाश किया गया है।

निम्नांकित प्रश्नों मे सही उत्तर के विकल्प का चयन कीजिए—

प्रश्न 1. कमलेश्वर द्वारा रचित रचना 'जॉर्ज पंचम की नाक' किस विधा की रचना?

(अ) जीवनी (ब) खण्डकाव्य

(स) उपन्यास (द) व्यंग्य

प्रश्न 2. कहाँ के दौरे को लेकर रानी एलिजाबेथ द्वितीय का दर्जी परेशान थे?

(अ) हिन्दुस्तान (ब) पाकिस्तान

(स) नेपाल (द) उक्त सभी

प्रश्न 3. एलिजाबेथ द्वितीय से पहले महाद्वीप का दौरा कौन करने वाला था?

(अ) सेक्रेटरी (ब) दरजी

(स) अंगरक्षक (द) कोई नहीं

प्रश्न 4. रानी के हलके नीले रंग के सूट का कपड़ा किससे बना हुआ था?

(अ) सूत (ब) मखमल

(स) रेशम (द) ऊन

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

प्रश्न 1. इंग्लैंड के अखबारों की कतरनें .... में दूसरे दिन चिपकी नजर आती थीं।

प्रश्न 2. करीब चार सौ .... खर्चा उस सूट पर आया।

प्रश्न 3. जिसके .... पहले महायुद्ध में जाने हथेली पर लेकर लड़ चुके हैं।

प्रश्न 4. मूर्तिकार यों तो कलाकार था पर जरा .... लाचार था।

शगुनाटी मिशन—100

प्रश्न 5. .... विभाग की फाइलों के पेट चीरे गए।

उत्तरमालाः— 1. हिंदुस्तानी अखबारों, 2. पौंड, 3. बावरची, 4. पैसे, 5. पुरातत्व

सत्य/असत्य कथन छांटिए—

प्रश्न 1. एलिजाबेथ द्वितीय के हिंदुस्तान दौरे के लिए फोटोग्राफरों की फौज तैयार हो रही थी।

प्रश्न 2. शंख नेपाल में बज रहा था, गूँज हिंदुस्तान में आ रही थी।

प्रश्न 3 ''मैं हिंदुस्तान के हर पहाड़ पर जाऊँगा और ऐसा ही पत्थर खोजकर लाऊँगा।''—कथन मूर्तिकार का था।

प्रश्न 4. पूरे हिंदुस्तान की परिक्रमा करने पर मूर्तिकार ने पाया कि सब की नाक जॉर्ज पंचम की नाक से छोटी है।

प्रश्न 5. अखबारों में छपा कि राजपथ पर इंडिया गेट के पास वाली जॉर्ज पंचम की लाट के नाक लग रही है।

उत्तरमालाः— 1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. असत्य, 5. सत्य।

<u>अतिलघूत्तरात्मक</u>

प्रश्न 1. 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ की शुरूआत में किस घटना का उल्लेख मिलता है?

उत्तर. जब इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ द्वितीय मय अपने पति के हिंदुस्तान पधारने वाली थी, तब की घटना का उल्लेख पाठ के आरम्भ में मिलता है।

प्रश्न 2. लंदन के अखबारों से किस प्रकार की खबरें आ रही थी?

उत्तर. लंदन के अखबारों से खबरें आ रही थी, कि शाही दौरे के लिए कैसी—कैसी तैयारियाँ हो रही है।

प्रश्न 3. एलिजाबेथ के हिंदुस्तान दौरे के समय कौन से दिन बीत चुके थे?

उत्तर. नये जमाने में फौज—फाटे के साथ निकलने के दिन बीत चुक थे।

प्रश्न 4. अखबारों में किसके कारनामे छपे?

उत्तर. अखबारों में प्रिंस फिलिप के कारनामें छपें।

प्रश्न 5. पाँच हजार रूप्ए का रेशमी सूट पहनकर रानी कौन से हवाई अड्डे पर उतरने वाली थी।

उत्तर. रानी पालम के हवाई अड्डे पर उतरने वाली थी।

प्रश्न 6. दिल्ली में बड़ी मुसीबत क्या थी?

उत्तर. दिल्ली में जॉर्ज पंचम की नाक बड़ी मुसीबत थी।

प्रश्न 7. जिन लाटों की नाकों तक लोगों के हाथ पहुँचे उन्हें उतारकर कहाँ पहुँचाया गया?

उत्तर. ऐसी नाकों को शानों—शौकत के साथ उतारकर अजायबघरों में पहुँचा दिया गया।

प्रश्न 8. हथियारबंद पहरेदारों के गश्त लगाते रहने पर भी जॉर्ज पंचम की लाट की नाक किस स्थान से गायब हुई?

उत्तर. इंडिया गेट से जॉर्ज पंचम की लाट की नाक गायब हुई।

प्रश्न 9. दिल्ली में हाजिर होने का हुक्म किसे दिया गया?

उत्तर. मूर्तिकार को दिल्ली में हाजिर होने का हुक्म दिया गया।

प्रश्न 10. मूर्तिकार ने जिन हुक्कामों के चेहरे देखे वे कैसी हालत में थे?

उत्तर. उन हुक्कामों के चेहरों पर अजीब परेशानी थी, कुछ लटके, कुछ उदास और कुछ बदहवास थे।

प्रश्न 11. लाट के नाक लगाने के प्रश्न को लेकर मूर्तिकार के मन में क्या जिज्ञासा थी?

उत्तर. लाट कब और कहाँ बनी, इसके लिए पत्थर कहाँ से लाया गया। आदि प्रश्नों की जिज्ञासा मूर्तिकार के मन में थी।

प्रश्न 12. ''फाइलें सब कुछ हजम कर चुकी है''— कथन किसका था?

उत्तर. उक्त कथन हुक्कामों के सम्मुख क्लर्क का था।

प्रश्न 13. फाइलों से लाट की जानकारी न मिलने पर लाट की नाक का दारोमदार किसे सौंपा गया?

उत्तर. एक खास कमेटी को लाट की नाक का जिम्मा सौंपा गया।

प्रश्न 14. किसका भाषण अखबारों में छपा?

उत्तर. सभापति का भाषण अखबारों में छपा।

प्रश्न 15. पहाड़ी प्रदेश व पत्थरों की खानों के दौरे से हताश लौटा मूर्तिकार किस नतीजे पर पहुँचा?

उत्तर. दौरे से हताश लौटा मूर्तिकार इस नतीजे पर पहुँचा कि लाट में प्रयुक्त पत्थर विदेशी है।

प्रश्न 16. बंद कमरे में मूर्तिकार ने क्या सुझाव दिया?

उत्तर. मूर्तिकार ने बंद कमरे में यह सुझाव दिया कि देश के नेताओं की मूर्तियों में से जिसकी नाक इस लाट पर ठीक बैठे, उसे उतार कर लाट पर लगा दी जाए।

प्रश्न 17. भारतीय लाटों के लिए मूर्तिकार ने कहाँ–कहाँ दौरा किया?

उत्तर. मूर्तिकार दिल्ली से बंबई, गुजरात, बंगाल, बिहार, उत्तर–प्रेदश, मद्रास, केरल व पंजाब होता हुआ पुनः दिल्ली पहुँचा।

प्रश्न 18. सारे यत्न कर चुकने के बाद मूर्तिकार ने कौनसा हैरतअंगेज़ खयाल प्रकट किया?

उत्तर. मूर्तिकार ने कहा कि नाक लगना एकदम जरूरी है। इसलिए चालीस करोड़ की आबादी में से कोई एक जिंदा नाक काट कर लगा दी जाए।

प्रश्न 19. मूर्तिकार ने सभापति व अन्य हुक्कामों से किस बात की इजाजत मांगी?

उत्तर. चालीस करोड़ की आबादी में से चुनकर एक जिंदा नाक जॉर्ज पंचम की लाट के लगाने की इजाजत मूर्तिकार ने माँगी।

प्रश्न 20. तालाब को सुखा कर, साफ कर ताजा पानी क्यों डाला गया?

उत्तर. तालाब को सुखाकर, साफ कर ताजा पानी इसलिए डाला गया ताकि लाट पर जो जिंदा नाक लगाई जाने वाली थी, वह सूखने न पाए।

<u>लघूत्तरात्मक</u>

प्रश्न 1. जॉर्ज पंचम की नाक को लेकर प्रचलित दास्तान का वर्णन कीजिए।

उत्तर. जॉर्ज पंचम की नाक को लेकर एक लंबी दास्तान है। इसके लिए तहलके मचे, आंदोलन हुए, राजनीतिक पार्टियों मे प्रस्ताव पास हुए, चंदा जमा हुआ, नेताओं के भाषण, गरमा गरम बहसे भी हुई थी। अखबारों के पन्ने रंग गए थे। बहस का मुद्दा नाक हटा दी जाए या रहने दी जाए।

प्रश्न 2. एलिजाबेथ के भारत आगमन के दौरे का असर किन पर हुआ?

उत्तर. एलिजाबेथ के भारत आगमन के दौरे का असर इंग्लैण्ड और भारत दोनों जगहों पर देखा गया। समाचार–पत्र, पूरी दिल्ली, रानी का दर्जी, विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारी और मन्त्रीगण इस दौरे से प्रभावित हुए। अखबारों में रानी, प्रिंस फिलिप, नौकर, बावर्ची, अंगरक्षक तथा कुत्तों तक से जुड़ी खबरें प्रकाशित होने लगी दिल्ली की कायापलट हो गई। जॉर्ज पंचम की टूटी नाक को जोड़ने के प्रबंध को लेकर अधिकारियों व मंत्रियों में परेशानी नजर आयी।

प्रश्न 3. किस प्रकार नयी दिल्ली की कायापलट की गयी?

उत्तर. सड़कों की मरम्मत, साफ–सफाई, डामर डलवाकर चमकाना, किनारों पर संकेत चिह्न, नाम–पट्ट, रोशनी की उत्तम व्यवस्था की गई। सरकारी इमारतों पर, पर्यटन–स्थलों पर रंग–रोगन, सजावट, सफाई व्यवस्था, लॉन के फव्वारों को सुधारा गये। ट्रेफिक पुलिस की सुव्यवस्था के साथ ही मेहमान नवाजी की विशेष व्यवस्था की गयी।

प्रश्न 4. 'जॉर्ज पंचम की नाक' रचना में सरकारी तंत्र और कार्य–प्रणाली पर किस प्रकार कठोर व्यंग्य किया गया?

उत्तर. इस व्यंग्य रचना में जॉर्ज पंचम की टूटी नाक को प्रतिष्ठा का विषय बनाने वाले मन्त्रियों एवं सरकारी कार्यालयों की कार्यप्रणाली पर करारा व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है। रानी के दौरे से राजधानी में तहलका मचना, सरकारी महकमों

ज्ञानवाणी मिशन–100

में रानी के स्वागत को लेकर कमेटियों का गठन, योजना निर्माण , तरह–तरह के प्रस्ताव, सजावट व समारोह के लिए हो रहे आर्थिक व्यय, विदेशी शासक की लाट की नाक को लेकर सभी में हो रही बदहवासी भारतीयों की गुलामी की मानसिकता को दर्शाती है। स्वार्थपूर्ति के आगे सरकारी तंत्र को देश के सम्मान की परवाह नहीं।

प्रश्न 5. लेखक कमलेश्वर की व्यंग्य रचना 'जॉर्ज पंचम की नाक' का मूल उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. 'जॉर्ज पंचम की नाक' व्यंग्य रचना में स्वाभिमान रहित भारतीय शासकों पर व्यंग्य है। जो आजाद होकर अत्याचारियों का स्वागत करते हैं। उन्हें देश प्रेम पर मर–मिटन वाले शहीदों के त्याग–बलिदान की भी परवाह नहीं। गुलाम बनाने वाले देश के शासकों के स्वागत की चिंता ही उन्हें सताती रहती है। नाक को प्रतिष्ठा का प्रतीक मानने वाले सामंती वर्ग की परतंत्र मानसिकता को बेनकाब करना ही इस रचना का मूल उद्देश्य है।

शेखावाटी मिशन–100

3. साना–साना हाथ जोड़ि

(मधु कांकरिया)

लेखक परिचयः–

जन्मः– सन् 1957 में कोलकाता में

शिक्षाः– कोलकाता वि.वि. से अर्थशास्त्र में एम.ए.,

कम्प्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा

रचनाएँः– पत्ताखोर (उपन्यास)

सलाम आखिरी, खुले गगन के लाल सितारे, बीतते हुए, अंत में ईशु (कहानी संग्रह)

अन्यः– यात्रा–वृत्तांत लेखन कार्य

पाठ–परिचयः– प्रस्तुत यात्रा–वृत्तांत में प्राकृतिक सौंदर्य के साथ वहाँ के आम–जीवन की कठिनाइयों को उभारा गया है तथा प्रकृति के सौंदर्य में खोकर आत्मा के परिचय तक पहुँचकर अंतिम सौंदर्य को उपयुक्त शब्द चित्रों से चित्रित किया गया है।

- निम्नांकित प्रश्नों में सही उत्तर के विकल्प का चयन कीजिए–

प्रश्न 1. 'साना–साना हाथ जोड़ि' रचना का प्रकार बताइए।

(अ) आत्मकथा (ब) यात्रा–वृत्तांत

(स) कहानी (द) संस्मरण

प्रश्न 2. लेखिका मधु कांकरिया ने किस शहर को इतिहास और वर्तमान के संधि स्थल पर खड़े मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा है?

(अ) गैंगटॉक (ब) सूरत

(स) नैनिताल (द) माउंट आबू

प्रश्न 3. 'साना–साना हाथ जोड़ि' प्रार्थना के बोल लेखिका ने किससे सीखे थे?

(अ) अपनी सखी से (ब) नेपाली युवती से

(स) जितेन नार्गे से (द) नन्हें बच्चों से

प्रश्न 4. गैंगटॉक से यूमथांग कितनी दूरी पर था?

(अ) 199 किलोमीटर (ब) 200 कि.मी.

(स) 149 कि.मी. (द) 300 कि.मी.

प्रश्न 5. नार्गे की जीप में किसकी तस्वीर लगी हुई थी?

(अ) गौतम बुद्ध की (ब) महावीर स्वामी की

(स) पोप की (द) दलाई लामा

प्रश्न 6. लेखिका ने चाँदी की तरह गुलाबी पत्थरों पर इठलाने वाली नदी किसे कहा है जो सिलीगुड़ी से उनके साथ थी?

(अ) गोदावरी (ब) कृष्णा

(स) चम्बल (द) तिस्ता

प्रश्न 7. हिमालय को सलामी देने की इच्छुक लेखिका मधु कांकरिया को रामधारी सिंह दिनकर की कौन सी पंक्तियाँ याद आयी?

(अ) हिमद्री तुंग श्रृंग से (ब) वीर तुम बढ़े चलो

(स) मेरे नगपति मेरे विशाल (द) हिमगिरि के तुंग शिखट पर

प्रश्न 8. 'सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल'– क्या था?

(अ) सात नदियों का संगम (ब) सात सागरों का समूह

(स) सात महाद्वीपों का समूह (द) हिमालय के समीप स्थित एक झरना

प्रश्न 9. लेखिका ने बहती जलधारा में पॉव डुबोया तो क्या हुआ?

(अ) वह भयभीत हो गई (ब) वह भीतर तक भीग गई

(स) बाढ़ आना (द) वह अधीर हो गई

प्रश्न 10. बी.आर.ओ. के कर्मचारी क अनुसार पहाड़िनें क्या कर रही थी?

(अ) रास्तों को चौड़ा बनाने का कार्य

(ब) उन्माद

(स) नृत्य (द) कुछ नहीं

प्रश्न 11. पीठ पर बच्चे को कपड़े से बाँधे आदिवासी युवतियों को लेखिका ने कौन–से जंगलों में देखा?

(अ) गिर के जंगल में (ब) पलामू और गुमला के जंगल में

(स) अफ्रीका के जंगल में (द) चम्बल के जंगल में

प्रश्न 12. लेखिका की सहयात्री सखी का क्या नाम था?

(अ) मणि (ब) स्वाति

(स) रमणी (द) हीना

प्रश्न 13. जितेन के अनुसार पहाड़ी बच्चे हर दन कितनी चढ़ाई चढ़कर स्कूल जाते है?

(अ) तीन–साढ़े तीन कि.मी. (ब) पाँच कि.मी.

(स) एक कि.मी. (द) साढ़े पाँच कि.मी.

प्रश्न 14. 'बोकु' क्या है?

(अ) परिवहन (ब) प्राणी

(स) पुष्प (द) सिक्किमी परिधान

प्रश्न 15. पाठ के अनुसार 'भारत का स्विट्जरलैंड' किसे कहा गया?

(अ) यूमथांग (ब) शिमला

(स) लायुंग (द) कटाओ

प्रश्न 16. कटाओ लायुंग से कितनी ऊँचाई पर था?

(अ) 1400 फीट (ब) 500 फीट

(स) 14000 फीट (द) 50 फीट

प्रश्न 17. लेखिका के बोल ''राम रो छो''– किस भाषा के बोल है?

(अ) तिब्बती (ब) चीनी

(स) नेपाली (द) हिंदी

प्रश्न 18. लेखिका ने सहेली मणि से किस कवि की कविता पढ़ने का प्रश्न पूछा?

(अ) मिल्टन की (ब) दिनकर की

(स) गोर्की की (द) इकबाल की

प्रश्न 19. पौष और माघ में भी बर्फीले इलाकों में क्या नहीं जमता?

शिक्षा मिशन–100

(अ) पानी (ब) पेट्रोल

(स) वनस्पति (द) कोई नहीं

प्रश्न 20. यूमथांग को टूरिस्ट स्पॉट बनाने का श्रेय किसे जाता है?

(अ) कप्तान शेखर दत्ता को (ब) पर्यटकों को

(स) शासक वर्ग को (द) बुद्धिजीवी वर्ग को

उत्तरमाला :— 1.(ब) यात्रा वृत्तांत, 2. (अ) गैंगटॉक, 3. (ब) नेपाली युवती से, 4. (स) 149 कि.मी., 5. (द) दलाई लामा को, 6. (द) तिस्ता, 7.(स) मेरे नगपति मेरे विशाल, 8. (द) हिमालय के समीप स्थित एक झरना, 9. (ब) वह भीतर तक भीग गई, 10.(अ) रास्तों को चौड़ा बनाने का कार्य, 11. (ब) पलामू और गुमला के जंगल में, 12. (अ) मणि, 13. (अ) तीन—साढ़े तीन कि.मी., 14. (द) सिक्किमी परिधान, 15. (द) कटाओ, 16. (ब) 500 फीट, 17. (स) नेपाली, 18. (अ) मिल्टन की, 19. (ब) पेट्रोल, 20. (अ) कप्तान शेखर दता को।

—रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

प्रश्न 1. हिमालय की तीसरी सबसे बड़ी चोटी ....।

प्रश्न 2. ''यह .... है। प्रेयर व्हील। इसे घूमाने से .... धुल जाते है।''

प्रश्न 3. तमाम .... प्रगतियों के बावजूद इस देश की आत्मा एक जैसी।

प्रश्न 4. पल—पल परिवर्तित ....।

प्रश्न 5. चित्रलिखित—सी मैं '...........' और '...........' के इस अनूठे खेल को भर—भर आँखों देखती जा रही थी।

प्रश्न 6. इतने स्वर्गीय,सौदर्य, नदी, फूलों, वादियों और झरनों के बीच भूख, मौत, दैन्य और .... यह जंग।

प्रश्न 7. बी. आर. ओ. (...........)।

प्रश्न 8. पहाड़ों पर रास्ता बनाने के लिए पहले .... चट्टानों को उड़ा दिया जाता है।

प्रश्न 9. हिमालय अब मेरे लिए कविता ही नहीं .... बन गया था।

प्रश्न 10. .... के कारण 'कटाओ' सुर्खियों में नहीं आया।

उत्तरमालाः— 1. कंचनजंघा, 2. धर्म चक्र, सारे पाप, 3. वैज्ञानिक, 4. हिमालय, 5. माया, छाया, 6. जिंदा रहने की, 7. बोर्ड रोड आर्गेनाइजेशन, 8. डाइनामाइट, 9. दर्शन, 10. टूरिस्ट स्पॉट नहीं बनने।

➢ सत्य/असत्य कथन छांटिए—

प्रश्न 1. जितेन नार्गे मधु कांकरिया का ड्राइवर—कम—गाइड था।

प्रश्न 2. झरने के संगीत के साथ ही लेखिका आत्मा का संगीत सुनने लगी।

प्रश्न 3. झरने के संगीत व बहती जलधारा से लेखिका का मन उदास हो उठा।

प्रश्न 4. पहाड़ी औरतें पत्थरों पर बैठीं आराम कर रही थी।

प्रश्न 5. यूमथांग पहुँचने के लिए लेखिका ने लायुंग में पड़ाव लिया।

प्रश्न 6. लेखिका का गेस्ट हाऊस ईंट—पत्थरों से बना था।

प्रश्न 7. बर्फ से ढ़के पहाड़ 'कटाओ' में नजर आए।

प्रश्न 8. लेखिका को अहसास हुआ कि मंजिल से कहीं ज्यादा फीका होता है मंजिल तक का सफर।

प्रश्न 9. सिक्किम आरम्भ से ही भारत का हिस्सा है।

प्रश्न 10. लेखिका के अनुसार मनुष्य की असमाप्त खोज का नाम आविष्कार हैं।

उत्तरमालाः— 1. सत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. असतय, 5. सत्य, 6. असत्य, 7. सत्य, 8. असत्य, 9. असत्य, 10. असत्य।

अतिलघूत्तरात्मकः–

प्रश्न 1. ''साना–साना हाथ जोड़ि, गर्दहु प्रार्थना। हाम्रो जीवन तिम्रो कौसेली''– पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. इस पंक्ति का अर्थ हैः– छोटे–छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूँ कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो।

प्रश्न 2. नार्गे के अनुसार 'गाइड' फिल्म की शूटिंग कहाँ हुई थी।

उत्तर. 'कवी–लोंग स्टॉक' नामक स्थान पर 'गाइड' फिल्म की शूटिंग हुई थी।

प्रश्न 3. संधि–पत्र पर हस्ताक्षर किसने और कहाँ किए थे?

उत्तर. तिब्बत के चीस–खे बम्सन ने लेपचाओं के शोमेन से कुंजतेक के साथ कवी–लोंग स्टॉक नामक स्थान पर संधि–पत्र पर हस्ताक्षर किये थे।

प्रश्न 4. सिक्किम की कौनसी स्थानीय जातियों के बीच चले दीर्घकालीन झगड़ों के बाद शांति वार्ता हुई?

उत्तर. 'लेपचा' और 'भुटिया' नामक सिक्किम की स्थानीय जातियों के बीच चले सुदीर्घ झगड़ों के बाद शांति वार्ता हुई।

प्रश्न 5. ऊँचाई पर चढ़ने पर घाटियों में क्या दिखाई दिया?

उत्तर. घाटियों में पेड़–पौधों के बीच ताश के घरों की तरह छोटे–छोटे घर दिखाई दे रहे थे।

प्रश्न 6. ऊँचाई की ओर बढ़ने पर रास्ते कैसे होते गए?

उत्तर. ऊँचाइ पर रास्ते वीरान, सँकरें और जलेबी की तरह घुमावदार होने लगे।

प्रश्न 7. प्रकृति की बिखरी असीम सुंदरता के प्रभाव में सभी सैलानी झूम–झूमकर क्या गाने लगे?

उत्तर. सभी सैलानी–''सुहाना सफर और ये मौसम हंसी''–गाने लगे।

प्रश्न 8. पर्वतों, झरनों, फूलों और खूबसूरत वादियों के दुर्लभ नजारों के बीच क्या लिखा था?

उत्तर. इन खूबसूरत नजारों के बीच लिखा था – 'थिंक ग्रीन'।

प्रश्न 9. प्रवाहमान झरने, बहती तिस्ता नदी और आवारा बादल के साथ मधु जी ने कौन–से फूलों का जिक्र किया?

उत्तर. मद्धिम–मद्धिम हवा में हिलोरे लेते 'प्रियुता' और 'रूडोडेंड्रो' के पुष्पों को जिक्र लेखिका ने किया है।

प्रश्न 10. चैरवेति–चैरवेति का अर्थ लिखिए।

उत्तर. इसका अर्थ हैः– चलते रहो, चलते रहो।

प्रश्न 11. मंत्रमुग्ध–सी तंद्रिल अवस्था में दूर निकल आने पर अचानक पाँवों में ब्रेक लगने की तुलना लेखिका ने किससे की है?

उत्तर. लेखिका ने सामाधिस्थ भाव मे नृत्य करती आत्मलीन नृत्यांगना के अचानक टूट जाने वाले नुपूरों से इसकी तुलना की है।

प्रश्न 12. लेखिका ने पहाड़ी औरतों को किस अवस्था में देखा?

उत्तर. पत्थर तोड़ते, हाथों में कुदाल और हथोड़े लिए, पीठ पर बंधी डोको (बड़ी टोकरी) में अपने बच्चों को बाँधे हुए व भरपूर ताकत से जमीन पर कुदाल मारते उन पहाड़िनों को लेखिका ने देखा।

प्रश्न 13. रास्तों में लगे सिक्किम सरकार के बोर्ड पर क्या लिखा था।

उत्तर. बोर्ड पर–''एवर वंडर्ड हू डिफाइड डेथ टू बिल्ड दीज रोड्स।'' (आप ताज्जुब करेंगे पर इन रास्तों को बनाने में लोगो ने मौत को झुठलाया है)– लिखा था।

प्रश्न 14. आम जिंदगियों की कहानी हर जगह एक–सी है कि सारी मलाई एक तरफः सारे आँसू, अभाव, यातना और वंचना एक तरफ लेखिका को ये खयाल कैसे आया?

उत्तर. रास्ता निर्माण करती पहाड़िनों को देखकर और पत्तों की तलाश में वन–वन डोलती आदिवासी युवतियों का स्मरण लेखिका के मन में उक्त खयाल आया।

प्रश्न 15. 'वेस्ट एट रिपेईंग', 'जीवन का प्रति संतुलन'– लेखिका ने किसे माना?

उत्तर. देश की आम जनता को लेखिका ने 'वेस्ट एट रिपेईंग' तथा 'जीवन के प्रति संतुलन' माना।

प्रश्न 16. श्रमसुंदरियों के खिल खिलाकर हँसने से लेखिका को क्या अनुभव हुआ?

उत्तर. श्रमसुंदरियों के हँसने से लेखिका को यह अनुभव हुआ, कि जैसे जीवन लहरा उठा और सारा खंडहर ताजमहल बन गया।

प्रश्न 17. हेयर पिन बेंट से पहले नजर आये सात–आठ वर्ष की उम्र के बच्चे क्या कर रहे थे?

उत्तर. ये पहाड़ी बच्चे स्कूल से लौट रहे थे और यात्रियों से लिफ्ट मांग रहे थे।

प्रश्न 18. स्कूली बच्चों की सायंकालीन दिनचर्या कैसी होती?

उत्तर. शाम के समय पहाड़ी स्कूली बच्चे अपनी माँओं के साथ मवेशियों को चराते, पानी भरते, जंगल से लकड़ियो के भारी–भारी गट्‌टर ढोते है।

प्रश्न 19. पहाड़ी रास्तों पर खतरों के प्रति सजग करने वाली चेतावनियाँ किस प्रकार की होती?

उत्तर. लेखिका और उनके सहयात्रियों को निम्नप्रकार की लिखी चेतावनियाँ नजर आने लगी –

1. 'धीरे चलाएँ, घर में बच्चे आपका इंतजार कर रहे हैं।'
2. 'वी केयर, मैन इटर अराउंड'
3. 'दुर्घटना से देर भली, सावधानी से मौत टली।'
4. 'इफ यू आर मैरिड, डाइवोर्स स्पीड।'–लायुंग से कटाओ के रास्ते में भी इसी प्रकार की चेतावनियाँ नजर आयी।

प्रश्न 20. पहाड़ों पर कौन सा जानवर दिखाई दिया?

उत्तर. दूध देने वाले काले–काले, घने–घने बालों वाले ढ़ेर सारे याक पहाड़ों पर दिखाई दिए।

प्रश्न 21. बागानो में युवतियाँ क्या कर रही थी?

उत्तर. युवतियाँ चाय की पतियाँ तोड़ रही थी।

प्रश्न 22. तिस्ता नदी के पानी को अंजुल में भर कर लेखिका ने संकल्प के रूप में कैसी प्रार्थना की?

उत्तर. लेखिका ने प्रार्थना की कि भीतर का सारा हलाहल, सारी तामसिकताएँ है और दुष्ट वासनाओं रूपी मनोविकार बह जाएँ।

प्रश्न 23. गाने की धुन पर किसे नृत्य करते देख लेखिका अवाक् रह गई।

उत्तर. अपनी पचास वर्षीय सहेली मणि को नृत्य करते देख लेखिका दंग रह गई।

प्रश्न 24. पहाड़ी लोगों की जीविका के प्रमुख साधन क्या थे?

उत्तर. पहाड़ी आलू, धान की खेती और दारू का व्यापार ही यहाँ की जीविका के प्रमुख साधन थे।

प्रश्न 25. सिक्किमी नवयुवक ने लेखिका को स्ना–फॉल कम होने का क्या कारण बताया?

उत्तर. नवयुवक ने बताया की प्रदूषण के चलते स्नो–फॉल कम होती जा रही है।

प्रश्न 26. लेखिका की सहेली मणि ने नार्गे की बात का प्रतिवाद किस प्रकार किया?

उत्तर. नार्गे द्वारा 'कटाओ' को हिंदुस्तान का स्विट्‌जरलैंड बताने पर मणि ने प्रतिवाद करते हुए कहा–''नहीं स्विट्‌जरलैंड भी इतनी ऊँचाई पर नहीं है और न ही इतना सुंदर।''

प्रश्न 27. कटाओ की बर्फीली जन्नत के सौंदर्य से अपराधी पर भी क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर. लेखिका के अनुसार इस असीम सौंदर्य से प्रभावित होकर बड़े से बड़ा अपराधी भी 'करूणा का अवतार' बुद्ध बन जाए।

प्रश्न 28. मणि के अनुसार प्रकृति ने जल संचय का क्या इंतजाम किया है?

उत्तर. मणि के अनुसार सर्दियों में बर्फ के रूप में जल संग्रह और गर्मियों में बर्फ शिलाएँ पिघलकर जलधारा के रूप में जल संचय की अद्‌भुत व्यवस्था प्रकृति ने की है।

प्रश्न 29. लेखिका के एक फौजी को कड़कड़ाती ठंड में काम करने की तकलीफ को लेकर पूछे गये प्रश्न के प्रत्युत्तर में फौजी ने क्या कहा?

उत्तर. फौजी ने लेखिका क पूछे प्रश्न के जवाब में कहा–''आपचैन की नींद सो सकें, इसलिए तो हम यहाँ पहरा दे रहे हैं।''

प्रश्न 30. फौजी छावनी पर क्या लिखा था?

उत्तर. छावनी पर लिखा था–'वी गिव अवर टुडे फॉर यार टुमारो।'

प्रश्न 31. चिप्स बेचती सिक्किमी युवती में लेखिका को क्या जवाब दिया?

उत्तर. लेखिका के पूछने पर–'' क्या तुम सिक्किमी हो?''

युवती ने जवाब दिया–'' नहीं मैं इंडियन हूँ।''

प्रश्न 32. मणि ने पहाड़ी कुत्तों की क्या विशेषता बताई?

उत्तर. मणि ने बताया कि ये भौंकते नहीं सिर्फ चाँदनी रात में ही भौंकते हैं।

प्रश्न 33. लौटती यात्रा में जितेन ने क्या रोचक जानकारी दी?

उत्तर. जितेन ने बताया कि वहाँ एक पत्थर है, जिस पर गुरूनानक के फुट प्रिंट हैं। कहते हैं यहाँ गुरूनानक की थाली से थोड़े से चावल छिटक कर बाहर गिर गए थे। जिस जगह चावल छिटक कर गिरे थे, वहाँ चावल की खेती होती है।

प्रश्न 34. खेदुम क्या है?

उत्तर. खेदुमः– देवी–देवताओं का निवास है, मान्यता हैं कि वहाँ जो गंदगी फैलाएगा, वह मर जाएगा।

प्रश्न 35. जितेन के अनुसार 'गैंगटॉक' का असली नाम क्या है? और उसका क्या मतलब है?

उत्तर. जितेन के अनुसार असली नाम 'गंतोक' है जिसका मतलब है–पहाड़।

<u>लघूत्तरात्मकः</u>–

प्रश्न 1. श्वेत और रंगीन पताकाएँ क्या संकेत करती?

उत्तर. गैंगटॉक से यूमथांग के रास्ते में नजर आयी पताकाओं की परंपरागत मान्यता के बारे में जानकारी देता जितेन नार्गे बताता है कि सफेद पताकाएँ शांति और अहिंसा की प्रतीक थी जिन पर मंत्र लिखे होते थे। जब किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है, तब उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी भी पवित्र स्थान पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती है। इन्हें उतारा नहीं जाता, ये धीरे–धीरे आप ही नष्ट हो जाती है।

प्रश्न 2. पहाड़ों पर रास्ता बनाने के दुसाध्य कार्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर. पहले डाइनामाइट से चट्टानों को उड़ा दिया जाता है। फिर बड़े–बड़े पत्थरों को तोड़–मोड़कर एक आकार के छोटे–छोटे पत्थरों में बदला जाता है, फिर बड़े से जाले में उन्हें लंबी पट्टी की तरह बिठाकर कटे रास्तों पर बाड़े की तरह लगाया जाता है। जरा–सी चूक और सीधा पाताल प्रवेश। इस जोखिम पूर्ण कार्य में पहाड़ी लोग बड़ी सिद्धत से जूटे रहते है।

प्रश्न 3. पहाड़ी और मैदानी इलाकों को सामान्य जन–जीवन का संक्षेप में तुलनात्म विवरण प्रस्तुत करें।

उत्तर. पहाड़ी जन–जीवन प्रकृति की गोद में बसा असीम सौंदर्य की अनुभूति कराता हैं तो वहीं दूसरी और कठिनाइयों से जूझकर इंसान यहाँ मजबूत बनता है। यहाँ का मनुष्य प्रकृति के सान्निहय में भावुक, संवेदनशील तो संघर्षों व आकस्मिक आपदाओं से हदय से मजबूत भी बनता है। परिवहन, दैनिक कठिनाइयों का सामना पर्वतीय लोग अपने बच्चों समेत करते हैं।

वहीं दूसरी ओर मैदानी इलाकों का जन–जीवन अत्यंत सरल, सुविधाओं से भरपूर, संघर्षहीन आसान जीवन होता है। चिकित्सा, शिक्षा, परिवहन, ईंधन, सामाजिक मेल–जोल की सहजता यहाँ बनी रहती है।

प्रश्न 4. कठिन परिस्थितियों का सामना करते सीमा पर तैनात फौजियों का जीवन कैसा है?

ज्ञानार्जन मिशन-100

उत्तर. देशप्रेम, देशभक्ति, देश रक्षा का भाव लिए सीमा पर तैनात फौजी जवान कठिनाइयों से जुझते हुए निडर होकर डटकर देश की रक्षा कर अपने कर्तव्य का सर्वोपरि मानते हुए संघर्षो का सामना करते है। ये अपने परिवार से दूर विभिन्न प्राकृतिक थपेड़ों की मार सहते हुये देश के नागरिकों के सुख–चैन हेतु दुश्मन की गोली का शिकार बनकर अपना सर्वस्व सामर्पित कर देते है।

प्रश्न 5. 'साना–साना हाथ जोड़ि'–पाठ में वर्णित प्राकृतिक सौंदर्य के स्थल कौन–कौन से है?

उत्तर. इस पाठ मे आकर्षण के कई केंद्र प्राकृतिक सुषमा की छटा बिखेरते दर्शाये गये है। दर्शक, सैलानी सभी अनायास ही इस असीम अथाह सौंदर्य के मोहपाश में खिंचा चला जाता है तथा स्वयं को भूलकर उस विराट परमात्मा का ऋणी बन जाता है। हिमालय, गैंगटॉक, यूमथांग, लायुंग, कटाओ, झांगू लेक, विविधजल–प्रपात, ग्लेश्यिर, स्नोफॉल, नदियाँ, पर्वत पुष्प, वादियॉ, घाटियॉ, जन–जीवन, हवा, झरने, परम्पराएँ, प्रतीक चिह्न, घुमवदार रास्ते, ऊँचाई पर चढ़ान– आदि प्राकृतिक सौंदर्य के केंद्र इस पाठ में बने है।

शेखावाटी मिशन–100

संज्ञा

संज्ञाः—

किसी वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेदः— संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद होते हैं।

1. व्यक्तिवाचक
2. जातिवाचक
3. भाववाचक

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञाः—** जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदाहरणः—

(क) हिमालय भारत का गौरव है।

(ख) शहरूख खान फिल्म अभिनेता है।

(ग) कुतुब मीनार दिल्ली में है।

(घ) कुरान, बाइबल तथा रामायण धार्मिक ग्रंथ हैं।

उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द हिमालय, भारत, शाहरूख खान, कुतुब मीनार, दिल्ली, कुरान, बादबल और रामायण व्यक्तिवाचक्म संज्ञाएँ हैं। क्योंकि ये किसी विशेष स्थान, वस्तु या व्यक्ति का बोध कराती हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञाः—** जिन संज्ञा शब्दों से किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी या स्थान की पूरी जाति या वर्ग का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदाहरणः—

(क) बंदर <u>पेड़</u> पर बैठा है।

(ख) <u>कोयल</u> का स्वर मीठा है।

(ग) <u>बगीचे</u> में फूल खिले हैं।

(घ) <u>ऊँट</u> को रेगिस्तान का जहाज कहते हैं।

उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द बंदर, पेड़, कोयल, बगीचे, फूल, ऊँट, रेगिस्तान तथा जहाज जातिवाचक संज्ञाएँ हैं क्योंकि ये सभी एक ही प्रकार की चीजों का बोध कराते हैं।

3. **भाववाचक संज्ञाः—** जिन संज्ञा शब्दों से किसी, व्यक्ति, प्राणी तथा स्थान के गुण—दोष, अवस्था तथा स्वभाव आदि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

उदाहरणः—

(क) कमरे की <u>लंबाई</u> तथा चौड़ाई नापो।

(ख) इस गन्ने में <u>मिठास</u> हैं।

(ग) सबसे <u>प्रेम</u> से बोलो।

(घ) परिश्रम करने से ही <u>सफलता</u> मिलती है।

उपरोक्त सभी वाक्यों में सभी रेखांकित शब्द लंबाई, चौड़ाई, मिठास, प्रेम, परिश्रम और सफलता भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

कुछ वैयाकरण/विद्वान संज्ञा के दो भेद और मानते हैंः—

(i) द्रव्यवाचक संज्ञा,		(ii) समूहवाचक संज्ञा

(i) **द्रव्यवाचक संज्ञाः–** जिन संज्ञा शब्दों से किसी पदार्थ या द्रव्य का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदाहरण– सोना, चाँदी, लोहा, पीतल आदि।

(ii) **समूहवाचक संज्ञाः–** जिन संज्ञा शब्दों से किसी जाति के समूह का बोध होता है, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। इसे समुदायवाचक संज्ञा भी कहते हैं।

उदाहरण– कक्षा, झुंड, दल, सेना आदि।

सर्वनामः–

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

सर्वनाम का अर्थ है सब नामों (संज्ञा शब्दों) के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले शब्द। ये शब्द सभी के लिए प्रयोग किए जा सकते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से भाषा में सौंदर्य आता है।

सर्वनाम के भेद– सर्वनाम के छह भेद हैः–

(i) पुरूषवाचक, (ii) संकेतवाचक

(iii) अनिश्चयवाचक, (iv) प्रश्नवाचक

(v) संबंधवाचक, (vi) निजवाचक

(i) पुरूषवाचक सर्वनामः– जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता अपने लिए, श्रोता के लिए या अन्य व्यक्ति के लिए करता है, उन्हें पुरूषवाचक सर्वनाम कहते हैं। उदाहरण–

(क) तुम कहाँ जा रहे हो ?

(ख) वह कल विद्‌यालय आएगा।

किसी भी वार्तालाप में वक्ता (बोलनेवाला), श्रोता (सुनने वाला) के अतिरिक्त अन्य (जिसके बारे में चर्चा की जाए) व्यक्ति भी सम्मिलित होता हैं।

पुरूषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं।

(क) उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम (मै, हम) : बोलने वाला या लिखनेवाला व्यक्ति अपने लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण– मैं, मुझे, मेरा, मुझसे, मुझ पर, मुझको

हम, हमने, हमें, हमारा, हमसे, हमको, हमपर

(ख) मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम (तू, तुम, आप) : सुननेवाले के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण– तू, तूने, तुझे, तेरा, तेरे, तुझसे, तुझको, तुझपर

तुम, तुमने, तुमको, तुम्हारा, तुमसे, तुमपर, तुम्हारे

आप, आपने, आपको, आपका, आपसे, आपपर

(ग) अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम (वह, वे, यह, ये) : श्रोता या वक्ता के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण– यह, वह, वे, ये, उसे, उन्हें, इसे, इन्हें, उनका, उसका आदि।

अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम के कारकीय रूप

यह – इस, इसे, इससे, इसके लिए, इसको, इसका, इसकी, इसमें, इस पर

वह – उस, उसे, उससे, उसके लिए, उसको, उसका, उसके, उसकी, उसमें, उसपर

ये – इन, इन्हें, इनसे, इनको, इनके लिए, इनका, इनकी, इनके, इनमें

वे – उन, उन्हें, उनसे, उनको, उनके लिए, उनका, उनकी, उनके, उनपर, उनमें

यह, वह, ये, वे इन सर्वनामों का प्रयोग निश्चयवाचक सर्वनाम की तरह भी किया जाता हैं।

(ii) निश्चयवाचक सर्वनामः– (यह, वह, ये, वे) : जो सर्वनाम किसी निश्चित वस्तु, व्यक्ति या स्थान की ओर संकेत करें, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। इन्हें संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं।

उदाहरण–

(क) ये मेरी पुस्तक है। (ख) वो मेरा घर है। (ग) इस डिब्बे में क्या है?

इन वाक्यों में ये, वो, इस सर्वनाम शब्द एक निश्चित पुस्तक, घर तथा डिब्बे की ओर संकेत कर रहे हैं।

विशेष : 'वह' शब्द का प्रयोग अन्य पुरूषवाचक और निश्चयवाचक सर्वनाम दोनों में किया जाता है। किंतु इसके प्रयोग में अंतर होता है। अर्थात् 'वह' शब्द जब किसी व्यक्ति के नाम के स्थान पर आए तब पुरूषवाचक सर्वनाम होता है और जब किसी की ओर संकेत करने के लिए प्रयोग हो तब निश्चयवाचक सर्वनाम होता है

उदाहरण– वह बहुत मेहनती है। (पुरूषवाचक सर्वनाम), मेरी घड़ी वह है। (निश्चयवाचक सर्वनाम)

(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनामः– (कोई, कुछ, किसी, किन्हीं, कहीं) : जो सर्वनाम शब्द किसी अनिश्चित वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान के लिए प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरणः–

(क) दरवाजे पर कोई खड़ा है।

(ख) अभी किसी ने मुझे आवाज दी।

(ग) चाय में कुछ गिर गया है।

(घ) आज हम कहीं जाएँगे।

(ड़) आज हम कहीं जाएँगे।

उपरोक्त वाक्यों में कोई, किसी, कुछ, किन्हीं तथा कहीं शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं क्योंकि इनसे किसी निश्चित वस्तु, व्यक्ति या स्थान का बोध नहीं होता।

(iv) प्रश्नवाचक सर्वनामः– (क्या, कौन, कहाँ, किधर, किसे) : जिन सर्वनाम शब्दों के द्वारा हम किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान के बारे में प्रश्न करते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

विशेष : केवल वही प्रश्नवाचक शब्द सर्वनाम होते हैं जिनका उत्तर संज्ञा या सर्वनाम में मिलता है।

(क) इस पुस्तक का क्या नाम है?	संभावित उत्तर	(महाभारत)
(ख) इस पुस्तक के लेखक कौन हैं?		(वेदव्यास)
(ग) यह पुस्तक कहाँ छपी?		(दिल्ली)
(घ) इस पुस्तक को आप कहाँ ले जा रहे हैं?		(घर)
(ड़) इस पुस्तक को आप किसे भेंट करेंगे?		(मित्र को)

(v) संबंधवाचक सर्वनामः– (जो–सो, जैसा–वैसा, जिसने–उसने) : जिन सर्वनाम शब्दों का संबंध किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान से ज्ञात हो, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(क) जिसकी लाठी उसकी भैंस।

(ख) जिसने यह शीशा तोड़ा उसे जुर्माना भरना होगा।

(ग) जैसा बोओगे वैसा काटोगे।

(vi) निजवाचक सर्वनामः– (स्वयं, अपनेआप, खुद, आप) : जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता अपने आप (निज) के लिए करता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण–

(क) रचना ने स्वयं आकर मुझसे बात की।

(ख) मोहित हर काम खुद करता है।

(ग) मैं अपनेआप चला जाऊँगा।

(घ) उसे आप ही बात करने दो।

विशेषणः–

संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

विशेषण के भेद–

(i) गुणवाचक विशेषण

(ii) संख्यावाचक विशेषण

(iii) परिमाणवाचक विशेषण

(iv) सार्वनामिक विशेषण

(i) गुणवाचक विशेषणः– जो शब्द किसी संज्ञा तथा सर्वनाम के गुण–दोष, दशा, अवस्था आदि का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण– मेरी माँ सरल स्वभाव की हैं।, काली कोयल कूकती है।

गुण से तात्पर्य है किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के रंग–रूप, गुण–दोष, अवस्था, आकार आदि को बताना।

कुछ गुणवाचक विशेषण इस प्रकार हैं।

गुण – दयालु, परोपकारी, परिश्रमी, होनहर, ईमानदारी आदि।

दोष – कठोर, बुरा, क्रोधी, ईर्ष्यालु, चालाक, कपटी आदि।

रंग–रूप – गोरा, काला, सुंदर, मधुर, कोमल, आकर्षक आदि।

आकार – लंबा, छोटा, मोटा, पतला, नाटा, भारी, बड़ा, चौरस, चौकोर आदि।

अवस्था – बूढ़ा, युवा, किशोर, कमजोर, रोगी, अमीर, गरीब, जवान आदि।

स्वाद – खट्टा, मीठा, नमकीन, कसैला, चटपटा, फीका आदि।

गंध – खुशबूदार, बदबूदार, गंधहीन, सुगंधित आदि।

स्पर्श – सख्त, कठोर, नरम, खुरदरा, चिकना आदि।

(ii) संख्यावाचक विशेषणः– जो शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम की संख्या संबंधी जानकारी दें, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. टोकरी में चार आम थे।

2. पेड़ पर कुछ बंदर हैं।

शेखावाटी मिशन–100

संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं।

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषणः– जो शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. तीन लड़के खेल रहे हैं।

2. मेज़ पर पाँच पुस्तकें हैं।

इन दोनों वाक्यों में विशेष्य की निश्चित संख्या का बोध हो रहा है। अतः ये निश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषणः– जो शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध नहीं कराते हैं, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. कुछ लोग बाहर खड़े हैं।

2. बगीचे में बहुत–से फूल हैं।

इन दोनों वाक्यों में विशेष्य की निश्चित संख्या का बोध नहीं हो रहा है। अतः ये अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

(iii) परिमाणवाचक विशेषणः– जो शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के परिमाण अर्थात् नाप–तोल तथा मात्रा की जानकारी दें, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। इनके साथ अधिकतर नाप–तोल सूचक शब्द जुड़ा होता है।

उदाहरण– 1. एक किलो मटर

2. दो आम

परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं।

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषणः– जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध होता है, उन्हें निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. माँ ने पाँच किलो चावल खरीदे।

2. रोमा दो लीटर दूध लाई।

इन वाक्यों में पाँच किलो तथा दो लीटर शब्द क्रमशः चावल तथा दूध की निश्चित मात्रा बता रहे हैं। अतः ये निश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषणः– जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध नहीं होता, उन्हें अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. मुझे कुछ फल दो।

2. दूध में कम चीनी डालना।

इन वाक्यों में कुछ तथा कम शब्द क्रमशः फल तथा चीनी कि निश्चित मात्रा नहीं बता रहे हैं। अतः ये अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

संख्यावाचक विशेषण तथा परिमाणवाचक विशेषण में अंतर

जिन वस्तुओं को गिना जा सकता है, उनके लिए संख्यावाचक विशेषण का प्रयोग किया जाता है। जिन वस्तुओं को गिना नहीं जा सकता, नापा या तोला जाता है, उनके लिए परिमाणवाचक विशेषण का प्रयोग किया जाता है।

सार्वनामिक विशेषणः–

शिक्षावाणी मिशन–100

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग विशेषण की तरह किया जाता है, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। इन्हें संकेतवाचक विशेषण भी कहते हैं।

उदाहरण– 1. यह घर मेरा है।

2. मेरा बस्ता नया है।

सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अंतर

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। परंतु जब कोई सर्वनाम संज्ञा से पहले प्रयुक्त होकर संज्ञा की विशेषता बताता है तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
यह काफी दुबला है।	यह लड़का दुबला है।
पेन उसका है।	उसका घर नया है।
पुस्तक मेरी है।	मेरा पेन खो गया।
वह योगाभ्यास करता है।	वह आदमी योगाभ्यास कर रहा है।

प्रविशेषणः–

विशेषण शब्दों की विशेषता बताने वाले विशेषण शब्दों को प्रविशेषण कहते हैं।

उदाहरण–

1. शालू का गला बहुत सुरीला है।
2. मुझे हल्का पीला रंग पसंद है।

उपरोक्त वाक्यों में बहुत तथा हल्का शब्द सुरीला और पीला विशेषण शब्दों की विशेषता बता रहे हैं।

अतः ये प्रविशेषण हैं जो विशेषण से पहले लगाए जाते हैं।

विशेषणों की तुलना और अवस्थाएँ

प्रायः विभिन्न व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थानों की तुलना की जाती है। तुलना में एक–दूसरे के गुण तथा दोषों को न्यून या अधिक बताया जाता है।

तुलना के आधार पर विशेषण की तीन अवस्थाएँ मानी गई हैं।

1. **मूलावस्थाः**– इसमें कोई तुलना नहीं होती। इसमें विशेषण विशेष्य की सामान्य अवस्था बताता है।

(क) रिया के बाल लंबे हैं।

(ख) मुझे लाल गुलाब पसंद हैं।

2. **उत्तरावस्थाः**– इसमें दो वस्तुओं, व्यक्तियों की तुलना करके एक को दूसरे से अच्छा या बुरा बताया जाता है।

उदाहरण–

(क) रूचिका कनिका से अधिक बुद्धिमान है।

(ख) रवि आलोक की अपेक्षा समझदार है।

3. **उत्तरमावस्थाः**– इसमें दो या दो से अधिक व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थान की तुलना की जाती है और एक को सबसे श्रेष्ठ तथा दूसरे को कम बताया जाता है।

उदाहरण–

(क) श्रेया कक्षा की सबसे बुद्धिमान लड़की है।

(ख) श्रेया ने परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त किए।

विशेषण की उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था बनाने के लिए क्रमशः तर तथा तम प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं।

विशेषण शब्दों की तुलना एवं अवस्थाएँ

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था	मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
अधिक	अधिकतर	अधिकतम	न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम	निकट	निकटतर	निकटतम
दृढ़ दृढ़तर	दृढ़तम	लघु	लघुतर	लघुतम	
कुटिल	कुटिलतर	कुटिलतम	जटिल	जटिलतर	जटिलतम
सरल	सरलतर	सरलतम	घनिष्ठ	घनिष्ठतर	घनिष्ठतम
महान	महानतर	महानतम	तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
नीच नीचतर	नीचतम	कोमल	कोमलतर	कोमलतम	
विशाल	विशालतर	विशालतम	मृदु	मृदुतर	मृदुतम
कटु कटुतर	कटुतम	सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम	

विशेषण भाब्दों की रचना

हिंदी में मूल रूप से विशेषण शब्दों की संख्या बहुत कम है। अधिकांश विशेषण शब्द संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया शब्दोकं में उपसर्ग तथा प्रत्यय जोड़कर बनाते हैं।

कुछ मूल विशेषण शब्द इस प्रकार हैं–

अच्छा, बुरा, लंबा, छोटा, बड़ा, गुरू, मधुर, नीला, पीला आदि।

क्रियाः–

जो शब्द किसी काम के करने या होने का बोध कराते हैं, उन्हें क्रिया कहते हैं।

- प्रत्येक वाक्य में क्रिया का होना आवश्यक है। क्रिया प्रायः वाक्य के अंत में आती है। क्रिया के बिना वाक्य रचना असंभव है।
- क्रिया शब्द विकारी शब्द है जिसमें लिंग, वचन तथा काल से परिवर्तन आ जाता है।

लिंग के आधार पर	लड़का लिख रहा है।	लड़की लिख रही है।
वचन के आधार पर	लड़का लिख रहा है।	लड़के लिख रहे हैं।
काल के आधार पर	लड़का पत्र लिखता है।	लड़का पत्र लिखेगा।

- धातु : क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।

  उदाहरण– पढ़, लिख, उड, बैठ, सो आदि।

  धातु में ना जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनता है।

  उदाहरण– पढ़ना, लिखना, उठना, बैठना आदि।

उपरोक्त वाक्य में लिख क्रिया सभी वाक्यों में समान है। यही क्रिया का मूल रूप है। परंतु लिंग, वचन काल के प्रभाव से उसका रूप बदल जाता है।

क्रिया के भेदः–

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद– 1. अकर्मक क्रिया, 2. सकर्मक क्रिया

1. **अकर्मक क्रियाः**— जिस क्रिया का फल कम्र पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। अर्थात् अकर्मक क्रिया में कर्म की आवश्यकता नहीं होती। अकर्मक तथा सकर्मक क्रिया को पहचानने के लिए क्रिया से पूर्व क्या तथा किसको का प्रश्न किया जाता है।

   जैसे हाथी चिंघाड़ता है। तथा शिखा हँस पड़ी।

   उपरोक्त दोनों क्रियाओं के कोई कर्म नहीं हैं। अतः ये अकर्मक क्रियाएँ हैं।

   कुछ अकर्मक क्रियाएँ इस प्रकार हैं— दौड़ना, भागना, डरना, रोना, जागना, सोना, अकड़ना, उछलना आदि।

2. **सकर्मक क्रियाः**— जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है अर्थात् जिस क्रिया का कर्म अनिवार्य होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

   जैसे माली पौधों को पानी डाल रहा है तथा मनीष पतंग उड़ा रहा है।

   उपरोक्त दोनों वाक्यों में क्रिया डाल रहा है और उड़ा रहा है का फल क्रमशः पौधों तथा पतंग पर पड़ रहा है। अतः ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

   (क) एककर्मक क्रिया

   (ख) द्विवकर्मक क्रिया

   (क) एककर्मक क्रियाः— जिन क्रियाओं में क्रिया का एक कर्म होता है, उन्हें एककर्मक क्रिया कहते हैं।

   उदाहरण— माँ ने बच्चों को खाना खिलाया, रूचि ने चित्र बनाया।

   (ख) द्विवकर्मक क्रियाः— जिन क्रियाओं के दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

   उदाहरण— माँ ने बच्चों को खाना खिलाया, शोभित ने मित्रों को केक खिलाया।

प्रयोग तथा संरचना की दृष्टि से क्रिया के भेद

1. सामान्य
2. संयुक्त
3. प्रेरणार्थक
4. पूर्वकालिक
5. नामधातु

1. **सामान्य क्रियाः**— जिस वाकय में केवल एक क्रिया हो, उसे सामान्य क्रिया कहते हैं।

   उदाहरण— मानस ने खाना खाया, शैलजा बाजार गई।

2. **संयुक्त क्रियाः**— दो या दो से अधिक धातुओं से बनी क्रिया संयुक्त क्रिया कहलाती है। संयुक्त क्रिया में एक से अधिक क्रियाओं का प्रयोग एक क्रिया के रूप में किया जाता है।

   उदाहरण— मानस ने खाना खा लिया, शैलजा बाजार चली गई।

3. **प्रेरणार्थक क्रियाः**— जिस वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे को कार्य करने को प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

   उदाहरण— माँ ने बेटे से चाय बनवाई, रीता ने माली से पौधे लगवाए।

   उपरोक्त वाक्यों में चाय बनवाने का काम तथा पौधे लगवाने का काम कर्ता स्वयं न करके क्रमशः बेटे से, माली से करवा रहा है। प्रेरणार्थक क्रियाओं में दो कर्ता होते हैं। उपरोक्त वाक्यों में प्रेरक कर्ता माँ तथा रीता हैं। प्रेरित कर्ता हैं— बेटा और माली।

   प्रेरणार्थक क्रिया दो प्रकार की होती हैं। प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक।

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया में मूल क्रिया में आ जोड़ जाता है और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया में मूल क्रिया के साथ वा जोड़ दिया जाता है। प्रेरणार्थक क्रिया के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
बनना	बनाना	बनवाना
करना	कराना	करवाना
सिलना	सिलाना	सिलवाना
उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
डरना	डराना	डरवाना
हँसना	हँसाना	हँसवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना

4. **पूर्वकालिक क्रियाः**– जब किसी क्रिया से पूर्व कोई अन्य क्रिया प्रयुक्त हुई हो, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। पूर्वकालिक क्रिया में अधिकतर क्रिया में अधिकतर क्रिया के साथ कर जुड़ा होता है।

उदाहरण– राजन पाठ पढ़कर सो गया, मनीषा खाना खाकर गई।

उपरोक्त वाक्यों में आपने देखा कि कर्ता ने एक से अधिक क्रिया की। राजन ने पड़ने तथा सोने की और मनीषा ने खाने तथा जाने की क्रियाएँ की। जो क्रिया पहले की जाती है वह पूर्वकालिक क्रिया होती है।

5. **नामधातु क्रियाः**– जो क्रियाएँ किसी मूल धातु से न बनकर, संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों में ना जोड़कर बनती हैं, उन्हें नामधातु क्रियाएँ कहते हैं।

उदाहरण–

संज्ञा	रंग	रंगाना
सर्वनाम	अपना	अपनाना
विशेषण	गरम	गरमाना

अव्ययः–

अव्यय वे शब्द होते हैं जिनका रूप, लिंग, वचन, कारक अथवा काल के अनुसार नहीं बदलता। इन्हें अविकारी शब्द भी कहते हैं।

अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं।

1. क्रिया–विशेषण
2. संबंधबोधक
3. समुच्चयबोधक
4. विस्मयादिबोधक
5. निपात

1. **क्रिया–विशेषणः–**

(क) कछुआ धीरे–धीरे चल रहा है।

(ख) सड़क दाएँ–बाएँ देखकर पार करो।

(ग) दादाजी प्रातःकाल घूमने जाते हैं।

(घ) सौम्या बहुत बोलती है।

शेखावाटी मिशन–100

उपरोक्त वाक्यों में रंगीन शब्द क्रिया होने की रीति, स्थान, समय तथा मात्रा की जानकारी दे रहे हैं। ये सभी शब्द क्रिया–विशेषण हैं।

''जो शब्द क्रिया के बारे में विशेष जानकारी देते हैं कि क्रिया 'कैसे', 'कब', 'कहाँ' तथा 'कितनी' हुई, उन्हें क्रिया–विशेषण कहते हैं।''

क्रिया–विशेषण के चार भेद होते हैं।

(क) रीतिवाचक

(ख) स्थानवाचक

(ग) कालवाचक

(घ) परिमाणवाचक

(क) रीतिवाचक क्रिया–विशेषणः– जिन शब्दों से क्रिया के होने के ढंग, रीति, तरीके का ज्ञान होता है, उन्हें रीतिववाचक क्रिया–विशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. एकाएक बत्ती चली गई।

2. बिल्ली चुपके से आकर दूध पी गई।

3. नई पुस्तक हाथों–हाथ बिक गई।

4. बच्चा मजे से सो रहा है।

रीतिवाचक क्रिया–विशेषण की पहचान करने के लिए क्रिया के साथ कैसे लगाकर प्रश्न करते हैं।

जैसे– नई पुस्तक हाथों–हाथ बिक गई। बच्चा मजे से सो रहा है।

कैसे बिक गई–हाथों–हाथ कैसे सो रहा है–मजे से

कुछ रीतिवाचक क्रिया–विशेषण शब्द इस प्रकार हैं–

सहसा, एकाएक, ज्यों–ज्यों, अकस्मात्, सरासर, शीघ्र, चुपचाप, ध्यानपूर्वक, नियमपूर्वक, यथाविधि, यथासंभव, सचमुच, अवश्य, बिलकुल, सावधानीपूर्वक, जल्दी–जल्दी आदि।

(ख) स्थानवाचक क्रिया–विशेषणः– जिस क्रियारू–विशेषण शब्द से क्रिया के होने के स्थान का बोध हो, उसे स्थानवाचक क्रिया–विशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. बाहर बहुत गरमी है।

2. भीतर जाकर बैठो।

3. शर्माजी आप यहाँ कब आए?

4. मेरे पीछे राहुल बैठा है।

इन वाक्यों में बाहर, भीतर, यहाँ, पीछे क्रिया–विशेषण शब्द हैं। ये क्रिया के होने के स्थान की जानकारी दे रहे हैं। स्थानवाचक क्रिया–विशेषण को पहचानने के लिए क्रिया के साथ कहाँ का प्रश्न किया जाता है।

बाहर गरमी है	– कहाँ गरमी है?	– बाहर
भीतर जाकर बैठो	– कहाँ बैठो?	– भीतर
मेरे पीछे राहुल बैठा है	– कहाँ बैठा है?	– पीछे

कुछ स्थानवाचक क्रिया–विशेषण शब्द इस प्रकार हैं–

आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, दाएँ, बाएँ, अंदर, बाहर, निकट, दूर, पास, समीप, सर्वत्र, मध्य, सामने आदि।

(ग) कालवाचक क्रिया–विशेषणः– जिन क्रिया–विशेषण शब्दों से क्रिया के होने के समय की जानकारी मिलती है, उन्हें कालवाचक क्रिया–विशेषण कहते हैं।

उदाहरण– 1. ट्रेन अभी चलने वाली है। 2. परसों हमारी परीक्षा है।

2. मैं प्रतिदिन संगीत का अभ्यास करती हूँ। 3. आज ठंडी हवा चल रही है।

उपरोक्त वाक्यों में अभी, परसों, प्रतिदिन तथा आज क्रिया के होने के काल/समय की जानकारी दे रहे हैं। ये बताते हैं कि क्रिया कब हुई या होगी।

कालवाचक क्रिया– विशेषण शब्दों को पहचानने के लिए कब का प्रश्न किया जाता है।

उदाहरण–

ट्रेन अभी चलने वाली है–	परसों हमारी परीक्षा है–
कब चलने वाली है?–अभी	कब परीक्षा है?–परसों
मैं प्रतिदिन संगीत का अभ्यास करती हूँ–	आज ठंडी हवा चल रही है–
कब अभ्यास करती हूँ?–प्रतिदिन	कब हवा चल रही है?–आज

कुछ कालवाचक क्रिया–विशेषण शब्द इस प्रकार हैं–

आज, कल, परसों, अभी, अब, जब, तब, प्रतिदिन, नित्य, दिन–भर, हमेशा, रोज, बार–बार, कभी–कभी, दिन को, रात को आदि।

(घ) **परिमाणवाचक क्रिया–विशेषणः**– जो क्रिया–विशेषण शब्द क्रिया की मात्रा या परिमाण के विषय में बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण शब्द कहते हैं।

उदाहरण– 1. जितना खेलना है उतना खेलो।

2. अधिक मत खाओ।

3. रजनी कम बोलती है।

4. थोड़ा सोचो।

उपरोक्त वाक्यों में जितना, उतना, कम, अधिक और थोड़ा क्रिया की मात्रा बताते हैं। परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण शब्दों की पहचान करने के लिए कितना लगाकर प्रश्न पूछते हैं।

उदाहरण–

जितना खेलना है उतना खेला।	– कितना खेलो?	– जितना, उतना
रजनी कम बोलती है।	– कितना बोलती है?	– कम
अधिक मत खाओ।	– कितना मत खाओ?	– अधिक
थोड़ा सोचो।	– कितना सोचो?	– थोड़ा

कुछ परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण शब्द इस प्रकार हैं–

कम, ज्यादा, अधिक, बहुत, जरा, जितना, थोड़ा, अत्यधिक, काफी, अत्यंत आदि।

विशेषण तथा क्रिया–विशेषण में अंतर

विशेषण तथा क्रिया–विशेषण दोनों शब्द विशेषता बताते हैं। विशेषण शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं तथा क्रिया–विशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं।

उदाहरण–

विशेषण	क्रिया–विशेषण
वह तेज आवाज में बोलता है।	वह तेज भागता है।
उसने कम खाना खाया।	थोड़ा कम खाया करो।

2. **<u>संबंधबोधकः–</u>**

अनुगामी मिशन–100

(क) विद्यालय के सामने

(ख) दरवाजे के बाहर कोई खड़ा है।

(ग) यश बहन के साथ जा रहा है।

उपरोक्त वाक्यों में के सामने, के बाहर, के साथ पद वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा/सर्वनाम शब्दों का संबंध आपस में जोड़ते हैं। यदि वाक्य के ये शब्द न हों तो वाक्य निरर्थक हो जाते हैं।

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जोड़ते हैं, उनहें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं। संबंधबोधक अव्यय कई रूपों में होता है।

1. कालसूचक – के पहले, के बाद, के पश्चात्, के पीछे, के आगे
2. स्थानसूचक – के भीतर, के बाहर, के अंदर, के पीछे, के आगे, के निकट, के पास, के बीच, के मध्य, के बाएँ, के दाएँ
3. दिशासूचक – के सामने, की ओर, की तरफ, के समीप, के चारों ओर
4. साधनसूचक – के द्‌वारा, के सहारे, के जरिए
5. विरोधसूचक – के विपरीत, के विरूद्‌ध, के प्रतिकूल
6. समानतासूचक – के समान, के अनुसार, के सदृश, के तुल्य
7. हेतुसूचक – के कारण, के अलावा, के रहित, के सिवाय, के लिए

- कुछ संबंधबोधक अव्यय विभक्ति सहित तो कुछ विभक्ति रहित होते हैं।

विभक्ति के बिना	विभक्ति सहित
कल वह रातभर जागता रहा।	राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी वन को गए।
राम चौदह वर्षों तक वन में रहे।	विद्‌या के बिना जीवन निरर्थक है।

- कारक की विभक्तियों तथा संबंधबोधक में अंतर– कारक की विभक्तियाँ तथा संबंधबोधक लगभग एक सा कार्य करते हैं। परंतु फिर भी उनमें अंतर है। विभक्ति संज्ञा या सर्वनाम का अंग होती है। उसका स्वतंत्र शब्द के रूप में प्रयोग नहीं हो सकता, जबकि संबंधबोधक अव्यय स्वतंत्र शब्द है। इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से कहीं भी हो सकता है।
- संबंधबोधक तथा क्रिया–विशेषण में अंतर– कुछ अव्यय शब्दें का प्रयोग संबंधबोधक तथा क्रिया–विशेषण दोनों की तरह किया जाता है। इनकी पहचान करने के लिए यह ध्यान रखें कि जब इनका प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम के साथ हुआ है तो ये संबधबोधक अव्यय हैं। यदि ये क्रिया के बारे में जानकारी दे रहे हैं तो ये क्रिया–विशेषण हैं।

उदाहरण –	संबंधबोधक	क्रिया–विशेषण
	सड़क के सामने ट्रक खड़ा है।	सामने देखो।
	कमरे के अंदर कौन है?	अंदर आ जाइए।
	घर के पीछे पेड़ है।	तुम मेरे पीछे चलो।

3. <u>समुच्चयबोधकः–</u>

(क) प्रतिदिन व्यायाम करो ताकि स्वस्थ रहो।

(ख) बादल छाए मगर बारिश नहीं हुई

उपरोक्त वाक्यों में ताकि, मगर शब्दों तथा वाक्यों को जोड़ने का काम कर रहे हैं। इनहें योजक या समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

शेखावाटी मिशन–100

जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

समुच्चयबोधक अव्यय दो प्रकार के होते हैं।

(क) समानाधिकण

(ख) व्यधिकरण

(क) समानाधिकरण समुच्चयबोधकः— जो समुच्चयबोधक शब्द दो या दो से अधिक समानपदों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं।

उदाहरण—

1. राधा और वसुधा जुड़वाँ बहनें हैं।
2. हमारे विद्यालय में तमिल एवं संस्कृत दोनों भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं।
3. आप क्या पीना चाहेंगे चाय या कॉफी?
4. मैंने उसे बहुत समझाया परंतु वह नहीं माना।

कुछ समानाधिकरण समुच्चयबोधक शब्द इस प्रकार हैं—

और, तथा, एवं, व, या, अथवा, किंतु, अगर, मगर, बल्कि, लेकिन, वरना, अतः आदि।

(ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधकः— जो समुच्चयबोधक शब्द एक प्रधान उपवाक्य को एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों से जोड़ते हैं, वे व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

उदाहरण—

1. राजू जल्दी सो जाता है ताकि सुबह समय पर उठ सके।
2. अच्छे अंक पाना चाहते हो तो एकाग्रता से पढ़ो।
3. पानी बरसने वाला था इसलिए मैं जल्दी घर आ गया।
4. मैं चाहता हूँ कि बड़ा होकर अध्यापक बनूँ।

पिछले पृष्ठ पर दिए वाक्यों में ताकि, तो, इसलिए, कि प्रधन उपवाक्य तथा उपवाक्यों को जोड़ने का काम कर रहे हैं। अतः ये व्यधिकरण समुच्चयबोधक हैं।

कुछ व्यधिकरण समुच्चयबोधक इस प्रकार हैं—

यदि तो, चाहे तो, यद्यपि—तथापि, मानो न मानो, इसलिए, क्योंकि, कि, चूँकि, ताकि, अर्थात्, यदि आदि।

4. <u>विस्मयादिबोधकः—</u>

(क) उफ! कितनी गरमी है।

(ख) वाह! क्या नजारा है।

(ग) बाप रे बाप! ठनता बड़ा साँप।

उपरोक्त वाक्यों में उफ, वाह, बाप रे बाप शब्द विभिन्न प्रकार के भावों को प्रकट कर रहे हैं।

जो अव्यय शब्द हर्ष, शोक, आश्चर्य, क्रोध, घृणा, विसमय, दुख आदि मनोभावों को प्रकट करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं।

विशेष :

- विस्मयादिबोधक अव्यय हमेशा वाक्य के आरंभ में आते हैं।
- विस्मयादिबोधक शब्दों के आगे सदा विस्मयपूर्वक (!) चिह्न लगा होता है।

अनुगामी मिशन—100

* विस्मयादिबोधक अव्ययों का प्रयोग विभिन्न मनोभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है।

विस्मयादिबोधक शब्द		भाव
हर्षसूचक	–	वाह! अहा! शाबाश!
पीड़ा/शोकसूचक	–	हाय! आह! उफ!
विस्मयसूचक	–	ओह! हैं! ओहो!
भयसूचक	–	हाय राम! बाप रे बाप!
प्रशंसासूचक	–	शाबाश! धन्य!
क्रोधसूचक	–	चुप! धत्!
घृणासूचक	–	छी–छी! थू–थू!
चेतावनीसूचक	–	सावधान! खबरदार!

5. <u>निपातः–</u>

(क) राहुल ने ही मनीष को मारा है।

(ख) राहुल ने मनीष को ही मारा है।

(ग) राहुल ने मनीष को मारा ही है।

इन तीनों वाक्यों में ही अव्यय का प्रयोग किया गया है। जिस पद के साथ ही का प्रयोग किया गया है उस पद को बल मिलता है तथा इसके प्रयोग से वाक्य का अथ्र ही बदल जाता है। ही शब्द निपात है। निपात का अपना कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता।

जो अव्यय शब्द वाक्य में प्रयुक्त शब्द के साथ जुड़कर उसे बल प्रदान करते हैं, उन्हें निपात कहते हैं।

* निपात का अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं होता।
* निपात के प्रयोग से पद को बल मिलता है।
* निपात के प्रयोग से वाक्य का अर्थ बदल जाता है।

कुछ निपात इस प्रकार हैं– केवल, ही, भी, तो, तक, न आदि।

संधि

- व्युत्पत्तिः– 'सम्+धि' के योग से बना शब्द–संधि 'सम्' का अर्थ–पूर्णतया

    'सम्' का अर्थ–पूर्णतया

    'धि' का अर्थ–धारण करना/मिलना

- शब्दिक अर्थः– योग अथवा मेल
- परिभाषाः– दो ध्वनियों या वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न ध्वनि–विकार या परिवर्तन को संधि कहते हैं।

    जैसेः– राका+ईश = राकेश

    (आ+ई=ए)

- संधि विच्छेदः– किसी संधि शब्द को एकाधिक शब्दों या वर्णों में विभक्त करना संधि–विच्छेद कहलाता है।

    जैसेः– सज्जन = सत्+जन

- संधि के भेदः– 3 भेद होते हैः–

    1. स्वर संधिः– इसके भी 5 प्रकार है–

        (i) दीर्घ स्वर संधि

        (ii) गुण स्वर संधि

        (iii) वृद्धि संधि

        (iv) यण् संधि

        (v) अयादि संधि

    2. व्यंजन संधि

    3. विसर्ग संधि

1. स्वर संधिः– दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार को स्वर संधि कहते है।

    (i) दीर्घ स्वर संधिः– दो समान (सजातीय) स्वरों के मिलने पर

    नियम– अ/आ+अ/आ = आ

    इ/ई+इ/ई = ई

    उ/ऊ+उ/ऊ = ई

    जैसे–

    गीत + अंजलि = गीतांजलि (अ+अ = आ)

    शयन + आगार = शयनागार (अ+आ = आ)

    रचना + अवली = रचनावली (आ+अ = आ)

    महा + आशय = महाशय (आ+आ = आ)

    रवि + ईद्र = रवीन्द्र (इ + इ = ई)

    अभि + ईप्सा = अभीप्सा (इ + ई = ई)

    मही + इंद्र = महींद्र (ई + इ = ई)

    नदी + ईश्वर = नदीश्वर (ई + ई = ई)

    भानु + उदय = भानूदय (उ+उ = ऊ)

    सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि (उ+ऊ = ऊ)

चमू + उत्साह = चमूत्साह (ऊ+उ = ऊ)

भू + ऊर्जा = भूर्जा (ऊ+ऊ = ऊ)

(ii) गुण स्वर संधिः– भिन्न स्थानों से उच्चरित स्वरों के बीच संधि से एक नया स्वर उत्पन्न हो वहाँ गुण संधि–

नियमः–

अ/आ + इ/ई = ए

अ/आ + उ/ऊ = ओ

अ/आ + ऋ = अर्

उदाहरणः–

गज + इंद्र = गजेंद्र (अ+इ = ए)

सर्व + ईश्वर = सर्वेश्वर (अ+ई = ए)

सुधा + इंदु = सुधेंदु (आ+इ = ए)

गुड़ाका + ईश = गुड़ाकेश (आ+ई = ए)

प्राप्त + उदक (जल) = प्राप्तोदक (आ + उ = ओ)

महा + उदय = महोदय (आ + उ = ओ)

नव + ऊढ़ा (विवाहिता) = नवोढ़ा (अ + ऊ = ओ)

महा + ऊर्जा = महोर्जा (आ + ऊ = ओ)

ग्रीष्म + ऋतु = ग्रीष्मर्तु (अ + ऋ = अर्)

महा + ऋषि = महर्षि (आ + ऋ = अर्)

(iii) वृद्धि संधिः– वृद्धि स्वरों का निर्माण होने के कारण वृद्धि संधि

नियमः–

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ/औ = औ

उदाहरणः–

हित + एषी = हितैषी (अ+ए = ऐ)

सदा + एव = सदैव (आ+ए = ऐ)

मत + ऐक्य = मतैक्य (अ+ऐ = ऐ)

महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य (आ+ऐ = ऐ)

परम + ओजस्वी = परमौजस्वी (अ + ओ = औ)

वन + औषध = वनौषध (अ + औ = औ)

महा + ओज = महौज (आ + ओ = औ)

महा + औषध = महौषध (आ + औ = औ)

(iv) यण् संधिः– जहाँ स्वर संधि करने पर 'य्, व्, र्' आदि व्यंजनों में बदल जाते है। ऐसी संधि को 'य्' के नाम पर 'यण्' संधि कहा जाता है। पूर्व पद का अंतिम वर्ण <u>व्यंजन रह</u> जाता है।

नियमः–

इ/ई + अन्य स्वर (इ/ई को छोड़कर) = य् + स्वर (जो हो)

ओझाघाटी मिशन–100

उ/ऊ + अन्य स्वर (उ/ऊ को छोड़कर) = व् + स्वर (जो आये)

ऋ + अन्य स्वर (स्वयं 'ऋ' को छोड़कर) = र् + अन्य स्वर (जो हो)

उदाहरणः–

प्रति + अर्पण = प्रत्यर्पण (इ+अ = य) पूर्व पद का अंतिम वर्ण स्वर रहित

अति + आवश्यक = अत्यावश्यक (इ+आ = या)

अभि + उदय = अभ्युदय (इ+उ = यु)

नि + ऊन = न्यून (इ+ऊ = यू)

प्रति + एक = प्रत्येक (इ + ए = ये)

नदी + अर्पण = नद्यर्पण (ई + अ = य)

मही + आधार = मह्याधार (ई + उ = या)

नारी + उचित = नार्युचित (ई + उ = यु)

वाणी + औचित्य = वाण्यौचित्य (ई + औ = यौ)

तनु + अंगी = तन्वंगी (उ + अ = व)

सु + आगत = स्वागत (उ + आ = वा)

धातु + इक = धात्विक (उ + इ = वि)

अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण (उ + ई = वी)

अनु + एषण = अन्वेषण (उ + ए = वे)

लधु + ओष्ठ = लघ्वोष्ठ (उ + ओ = वो)

वधू + अर्थ = वध्वर्थ (ऊ + अ = व)

वधू + आगमन = वध्वागमन (ऊ + आ = वा)

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति (ऋ + अ = र)

मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा (ऋ + आ = रा)

पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा (ऋ + इ = रि)

पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश (ऋ + अ = रू)

(v) अयादि संधिः– ए,ऐ,ओ,औ के बाद कोई भिन्न स्वर (असवर्ण) आए तो वह क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् हो जाता है।

नियमः–

ए + अन्य स्वर (ए, ऐ को छोड़कर) = अय् + अन्यस्वर (जो हो)

ऐ + अन्य स्वर (ऐ, ऐ को छोड़कर) = आय् + अन्यस्वर (जो हो)

ओ + अन्य स्वर (ओ, औ को छोड़कर) = अव् + अन्य स्वर (जो हो)

ओ + अन्य स्वर (ओ, औ को छोड़कर) = आव् + अन्य स्वर (जो हो)

उदाहरणः–

ने + अन = नयन (ए+अ = अय)

विनै + अक = विनायक (ऐ+अ = आय)

नै + इका = नायिका (ऐ+इ = आयि)

हो + अन = हवन (ओ + अ = अव)

गो + ईश = गवीश (ओ + ई = अवी)

शौ + अक = शावक (औ + अ = आव)

नौ + इक = नाविक (औ + इ = आवी)

भौ + उक = भावुक (औ + उ = आवु)

2. व्यंजन संधिः– व्यंजन का स्वर अथवा व्यंजन के साथ मेल हो तो वहाँ व्यंजन संधि होती है।

नियमः–

(i) प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद–

तृतीय या चतुर्थ वर्ण अथवा य, र, ल, व अथवा कोई स्वर हो–

= तो प्रथम वर्ण अपने की वर्ग का तीसरा वर्ण (ग्, ज्, ड्, द्, ब्) हो जाता है।

जैसेः–

दिक् + अंबर = दिगंबर (क् + अ = ग)

वाक् + ईश = वागीश (क् + ई = गी)

प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक (क् + ऐ = गै)

दिक् + गज = दिग्गज (क् + ग = ग्ग)

वाक् + जाल = वाग्दान (क् + ज = ग्ज)

वाक् + दान = वाग्दान (क् + द = ग्द)

दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम (क् + भ = ग्भ)

ऋक् + वेद = ऋग्वेद (क् + व = ग्व)

अच् + अंत = अजंत (च् + अ = ज)

षट् + अभिज्ञ = षडभिज्ञ (ट् + अ = ड)

षट् + आनन = षडानन (ट् + आ)

षट् + गुण = षड्गुण (ट् + ग = ड्ग)

षट् + यंत्र = षड्यंत्र (ट् + य = ड्य)

चित् + रूप = चिद्रूप (त् + र = द्र)

सत् + उपदेश = सदुपदेश (त् + उ = दु)

जगत् + अंबा = जगदंबा (त् + अ = द)

अप् + द = अब्द (प् + द = ब्द)

(ii) प्रत्येक वर्ग के प्रथम वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद + 'न' या 'म'

– तो प्रथम वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) अपने वर्ग के पंचम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) में बदल जाते हैः–

वाक् + मय = वाङ्मय (क् + म = ङ्म)

षट् + मास = षण्मास (ट् + म = ण्म)

जगत् + नाथ = जगन्नाथ (त् + न = न्न)

अप् + मय = अम्मय (प् + म = म्म)

(iii) म् + स्पर्श व्यंजन = 'म' जुड़ने वाले वर्ण के वर्ग के पंचम वर्ण या अनुस्वार हो जाता हैः–

अहम् + कार = अहंकार (म् + क = अनुस्वार / 'क' का पंचम वर्ण)

सम् + तोष = संतोष (म् + त = अनुस्वार / 'त' का पंचम वर्ण)

भाग्यश्री मिशन–100

(iv) म् + य, र, ल, व, श, ष, स, ह = तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार

जैसेः–

सम् + वाद = संवाद (म् + व = अनुस्वार)

सम् + सार = संसार

(v) त्/द् + ल = तो 'त्' या 'द्' 'ल्' में बदल जाता हैः–

उत् + लास = उल्लास (त् + ल = ल्ल)

(vi) त्/द् + ज/इन = त्/द् 'ज्' में बदलता हैः–

सत् + जन = सज्जन (त् + ज = ज्ज)

(vii) त्/द् + श = तो त्/द् का – 'च्' और 'श्' का – 'छ्' होता है।

उत् + श्वास = उच्छ्वास (त् + श = च्छ)

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र (त् + श = च्छ)

(viii) त्/द् + ह = तो त्/द् के स्थान पर 'द' और 'ह' के स्थान पर 'ध' होगा।

तत् + हित = तद्धित (त् + ह = द्ध)

(x) जब पहले के अंत में स्वर हो और आगे के पद का पहला वर्ण 'छ' हो तो 'छ' के स्थान पर 'च्छ' होगा।

आ + छादन = आच्छादन (आ + छ = च्छ)

(xi) किसी शब्द के अंत में 'अ' या 'आ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर आये एवं दूसरे शब्द के आरंभ में 'स' हो तो 'स' के स्थान पर 'ष्' हो जाता है।

वि + सम = विषम ('अ/आ' के अलावा स्वर इ + स = ष)

(xii) ऋ, र, ष के बाद कोई स्वर 'क' वर्गीय या 'प' वर्गीय वर्ण, अनुस्वार या 'य, व, ह' में से कोई वर्ण आये तो अंत में आने वाला 'न' = 'ण' में बदल जाता है।

प्र + मान = प्रमाण (र + 'प' वर्गीय वर्ण 'म' = अंत में ण)

3. विसर्ग संधिः– विसर्ग का लोप अथवा नये वर्ण का आगमन हो जाता है वहाँ विसर्ग संधि होती है।

नियमः–

(i) विसर्ग (:) के पूर्व 'अ' हो और बाद में 'आ' हो तो दोनों का विकार 'ओ' में बदलता है।

जैसेः– अधः + भाग = अधोभाग

(ii) विसर्ग के पहले 'अ' और बाद वाले शब्द का पहला अक्षर 'अ', 'ए' हो तो विसर्ग का लोप होगा।

जैसेः– अतः + एव = अतएव

यशः + इच्छा = यशइच्छा

(iii) विसर्ग के पहल 'अ' हो तथा बाद में किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण अथवा 'य, र, ल, व' व्यंजन हो तो विसर्ग 'ओ' में बदल जाता है।

जैसेः– अधः + गामी = अधोगामी

(iv) विसर्ग के बाद 'अ' के अतिरिक्त अन्य स्वर या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण हो या 'य, र, ल, व, ह' हो तो विसर्ग के स्थान में 'र' हो जाता है।

जैसेः– आयुः + वेद = आयुर्वेद

धनुः + धारी = धनुर्धारी

शेखावाटी मिशन–100

(v) विसर्ग (:) के बाद 'च' या 'श' आये तो विसर्ग (:) 'श्' बन जाता है।

जैसेः– पुनः + च = पुनश्च (तालव्य 'श्' में परिवर्तन)

यशः + शरीर = यश शरीर

(vi) विसर्ग के बाद 'त'/'स' आए तो विसर्ग – 'स्' होगा

जैसेः–नमः + ते = नमस्ते (दन्त्य 'स्')

(vii) विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' स्वर हो और उसके बाद 'क', 'प', 'म' वर्ण आये तो विसर्ग मूर्धन्य 'ष्' में बदलेगा।

जैसेः– आविः + कार = आविष्कार

चतुः + पथ = चतुष्पथ

प्रश्न 1. संधि किसे कहते हैं?

उत्तर. दो या दो से अधिक वर्णो के मेल से उत्पन्न विकार या परिवर्तन को संधि कहते है।

प्रश्न 2. संधि कितने प्रकार की होती है? उनके नाम लिखिए।

उत्तर. संधि तीन प्रकार की होती हैः–

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

प्रश्न 3. स्वर संधि के कितने भेद है? कौन–कौन से?

उत्तर. स्वर संधि के पाँच भेद हैः–

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण् स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

प्रश्न 4. स्वर संधि कब होती ह?

उत्तर. दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार को स्वर संधि कहते है।

प्रश्न 5. व्यंजन संधि कब होती है?

उत्तर. जब व्यंजन का स्वर से या व्यंजन का व्यंजन से योग होता हो तो वहाँ व्यंजन संधि होगी।

प्रश्न 6. विसर्ग संधि किसे कहते है?

उत्तर. जहाँ पर विसर्ग (:) का लोप हो जाता है अथवा विसर्ग के स्थान पर नया वर्ण आ जाता है उसे विसर्ग संधि कहते है।

प्रश्न 7. संधि विच्छेद कीजिए।

उत्तर.

संधि		संधि–विच्छेद (उत्तर)
स्वच्छ	–	सु+अच्छ
इत्यादि	–	इति+आदि
पयोद	–	पयः+द
वागीश्वर	–	वाक्+ईश्वर
सुरेन्द्र	–	सुर+इन्द्र

प्रश्न 8. निम्नलिखित में संधि करते हुए प्रयुक्त संधि का नाम लिखिए–

उत्तर. सर्व+उदय – सर्वोदय (गुण संधि)

जगत्+नाथ – जगन्नाथ (व्यंजन संधि)

सु+आगत – स्वागत (यण् संधि)

आशीः+वाद – आशीर्वाद (विसर्ग संधि)

गै+अक – गायक (अयादि संधि)

दीप+अवली – दीपावली (दीर्घ संधि)

सदा+एव – सदैव (वृद्धि संधि)

प्रश्न 9. 'मुक्तावली' का सही संधि विच्छेद होगा?

(अ) मुक्त+अवली (ब) मुक्त+आवली

(स) मुक्ता+अवली (द) मुक्ता+आवली (स)

प्रश्न 10. दिए गए विकल्पों में से शब्दों में प्रयुक्त संधि का सही भेद चुनिए–

1. अन्वीक्षणः–

(अ) यण् (ब) अयादि

(स) दीर्घ (द) वृद्धि संधि (अ)

2. नाविकः–

(अ) वृद्धि (ब) गुण

(स) यण् संधि (द) अयादि (स)

3. वनौषधः–

(अ) गुण (ब) व्यंजन

(स) विसर्ग (द) वृद्धि स्वर संधि (द)

4. रजनीशः–

(अ) वृद्धि (ब) दीर्घ

(स) गुण (द) यण् संधि (ब)

5. जलोर्मिः–

(अ) गुण (ब) यण्

(स) व्यंजन (द) कोई नहीं (अ)

शेखावाटी मिशन–100

समास

→ समास शब्द की व्युत्पतिः– 'सम्+आस' के योग से

→ 'सम्' का अर्थः– 'पूर्णतया' तथा 'आस' का अर्थः– 'मिलना या निकट आना' है।

अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का पूर्णतया मिलना या निकट आना है।

→ समास शब्द का अर्थः– संक्षिप्त करना/संक्षेपण

→ परिभाषाः– 1. दो या दो से अधिक शब्दों (पदों) के परस्पर संयोग से बनने वाले नये शब्द को समास कहते है।

→ 2. दो या दो से अधिक पदों के मेल को जिनके बीच के संयोजक शब्दों अथवा कारक चिह्नों का लोप हो जाए, समास कहते है।

जैसेः– राम और श्याम– राम श्याम ('और' संयोजक शब्द का लोप)

राजा की माता– राजमाता ('की' कारक चिह्न का लोप)

→ समस्त पद (सामासिक पद):– दो या दो से अधिक पदों के मेल से बना एक ही पद।

– समस्त पद में मुख्यतः दो पद होते हैः– 1. पूर्व पद व 2. उत्तर पद।

– पहले वाले पद को 'पूर्वपद' व दूसरे पद को 'उत्तर पद' कहते हैं।

→ समास विग्रहः– समस्त पद को खंडित कर पदों को अलग–अलग करने की क्रिया या रीति समास–विग्रह कहलाती है।

जैसेः–

समस्त पद	पूर्व पद	उत्तर पद	समास विग्रह
1. राजपुत्र	राजा	पुत्र	राजा का पुत्र
2. रंगमंच	रंग (नाट्य कला आदि)	मंच	रंग के लिए मंच
3. शांतिदूत	शांति	दूत	शांति का दूत
4. अन्नजल	अन्न	जल	अन्न और जल
5. दुःखसागर	दुःख	सागर	दुःख का सागर

→ समास के भेदः– समास के 6 भेद होते हैः–

1. अव्ययीभाव समास– प्रथम पद प्रधान
2. तत्पुरूष समास– दूसरा पद प्रधान
3. कर्मधारय– दूसरा पद प्रधान
4. द्विगु– प्रथम पद संख्यावाची व दूसरा पद प्रधान
5. द्वंद्व समास– दोनों पद प्रधान
6. बहुव्रीहि समास– अन्य पद प्रधान

1.अव्ययीभाव समास

- अव्यय शब्द का आशय ऐसा शब्द जिसका भाषा–प्रयोग में रूप सदैव एक जैसा होता है, उसमें कोई परिवर्तन/व्यय नहीं होता।

→ परिभाषाः– जिस समास का पहला पद अव्यय हो वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। अव्यय पद का रूप लिंग, वचन, कारक में नहीं बदलता।

- इसमें प्रथम पद प्रधान होता है।
- प्रथम पद अव्यय या उपसर्ग से युक्त होता हैं

उदाः–

समस्त पद		समास विग्रह
आजन्म	–	जन्म से लेकर
प्रतिक्षण	–	हर क्षण
प्रत्युत्तर	–	उत्तर का उत्तर
बेधड़क	–	बिना धड़क के
लाजवाब	–	जिसका जवाब न हो

- शब्दांत में भर, पूर्वक, प्रति, पर्यन्त एवं ध्वनि का दोहरा रूप हो तो वहाँ भी अव्ययीभाव समास होता है। जैसेः–

जीवनभर	–	पूरे जीवन या जीवन पर्यंत
कुशलता पूर्वक	–	कुशलता के साथ
नित्य प्रति	–	जो नित्य हो
जीवन पर्यन्त	–	सम्पूर्ण जीवन
घर–घर	–	घर के बाद घर
मंद–मंद	–	मंद के बाद मंद

शेखावाटी मिशन–100

2. तत्पुरूष समास

→ परिभाषाः– जिस समास में पहले पद की विभक्ति का लोप हो और दूसरा पद प्रधान हो, उसे तत्पुरूष समास कहते है।

- कर्त्ता व सम्बोधन कारक को छोड़कर शेष सभी कारकों की विभक्ति लोप होने के कारण उन्हीं छह कारकों के आधार पर तत्पुरूष समास के भेदों का नामकरण होता है।
- इसमें द्वितीय पद की प्रधानता होती है अर्थात् पूरे पद का लिंग, वचन दूसरे पद के अनुसार होता है।

→ कर्म तत्पुरूष ('को' विभक्ति का लोप)

तिलकुटा – तिल को कूटकर बनाया हुआ
जेबकतरा – जेब को कतरने वाला
कठफोड़ – काठ को फोड़नेवाला
विदेश गमन – विदेश को गमन

→ करण तत्पुरूष ('से, के द्वारा' चिह्न का लोप)

धर्मांध – धर्म से अंधा
आँखों–देखी – आँखों द्वारा देखी हुई
रतनजड़ित – रत्न से जड़ित
मेघाच्छन्न – मेघ से आच्छन्त (ढका हुआ)
ईश्वरप्रदत – ईश्वर द्वारा दिया हुआ

→ सम्प्रदान तत्परूष (के लिए–लोप)

गुरूदक्षिणा – गुरू के लिए दक्षिणा
यज्ञशाला – यज्ञ के लिए शाला
घुड़साल – घोड़ों के लिए साल (भवन)
कारागृह – कारा के लिए गृह

→ अपादान तत्पुरूष (सेः– पृथक/अलग होने के अर्थ में – चिह्न का लोप)

सत्ताच्युत – सत्ता के च्युत
लोकोत्तर – लोक से उत्तर (परे)
ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त
सेवानिवृत्त – सेवा से निवृत्त
नेत्रहीन – नेत्रों से हीन

→ संबंध्या तत्पुरूष (का, के, की चिह्नों का लोप)

जगन्नाथ – जगत् का नाथ
ग्रंथावली – ग्रंथों की अवली
वाग्दान – वाक् का दान
जलधारा – जल की धारा
अक्षांश – अक्ष का अंश

→ अधिकरण तत्पुरूष (में, पर–विभक्ति का लोप)

मुनिश्रेष्ठ – मुनियों में श्रेष्ठ

आप बीती – अपने पर बीती हुई

घुड़सवार – घोड़े पर सवार

वनवास – वन के वास

सर्वोत्तम – सर्व में उत्तम

→ तत्पुरूष के अन्य भेदः–

- कारक चिह्न की विद्मानता पर अलुक तत्पुरूषः–

मृत्युंजय – मृतयु को जय करने वाला

वाचस्पति – वाच् (वाणी) के पति

- नञ् तत्पुरूषः– पूर्वपद 'न' या 'अन्' लगाकर निषेधात्मक अर्थ देः–

अनपढ़ – ना पढ़ा हुआ

अनाथ – न नाथ के

- बादवाला शब्द स्वतंत्र रूप से न प्रयुक्त होकर प्रत्यय की आएः– उपपद तत्पुरूष

नभचर – नभ में विचरण करने वाला

राजनीतिज्ञ – राजनीति को जानने वाला

- पद लुप्त होने परः– लुप्त पद तत्पुरूष

गुड़धानी – गुड़ मिली हुई धानी

पनडुब्बी – पानी में डूब कर चलनेवाला पोत

3. कर्मधारय समास

परिभाषाः– जिस समास में दोनों पदो के बीच विशेषण–विशेष्य अथवा उपमान–उपमेय का संबंध हो कर्मधारय समास कहते है।

विशेषण–विशेष्यः– नीलोत्पल – नील है जो उत्पल (कमल)

मंद बुद्धि – मंद है जिसकी बुद्धि

अल्पसंख्यक – अल्प हैं जो संख्या में

बड़ भागी – बड़ा है जिस भाग्य

शुभागमन – शुभ है जो अगमन

उपमेय – उपमानः– मृगनयनी – मृग के समान नयनों वाली

मृगनयनी – मृग के समान नयनों वाली

चंद्रवदन – चंद्र के समान वदन (मूँह)

विद्युच्चंचला – विद्युत् के समान चंचल

वज्रहृदय – वज्र के समान हृदय

राजीव लोचन – राजीव (कमल) के समान लोचन

4. द्विगु समास

- पहला पद संख्यावाची / गणना बोधक व दूसरा पद प्रधान होता है।
- समस्त पद समूह के बोध को दर्शाता है।
- इसके विग्रह में समूह या समाहार शब्द प्रयुक्त होते हैं।

त्रिलोक – तीन लोकों का समूह
शताब्दी – सौ अब्दो (वर्षों) का समूह
दोपहर – दो पहरों का समाहार
सतसई – सात सौ दोहों का समूह / समाहार
सप्तऋषि – सात सौ दोहों का समूह / समाहार
सप्तऋषि – सात ऋषियों का समूह

- संख्यावाची समस्त पद में यदि अन्य पद की प्रधानता हो तो वहाँ बहुव्रीहि समास होगा।

जैसेः– दशासनस – दस आनन है जिसके अर्थात् रावण
त्रिनेत्र – तीन नेत्र है जिसके अर्थात् शिवजी

5. द्वंद्व समास

- इस समास में दोनों पदो के बीच और, या , अथवा आदि पदों का लोप रहता है। एवं दोनों पदों की प्रधानता रहती है।

आयात – निर्यात – आयात और निर्यात

सीता – राम – सीता और राम

हानि – लाभ – हानि या लाभ

आना – जाना – आना या जाना

सार्थक जीवन – मरण – जीवन या मरण

- समान–सी ध्वनि वाली निरर्थक शब्दों के प्रयोग में भी द्वंद्वः–

अड़ोसी– पड़ोसी – पड़ोसी आदि

चाय– वाय – चाय आदि

- आदि शब्द जोड़कर भी समाहार द्वंद्व–

फल– फूल – फल, फूल आदि

आगा– पीछा – आगा, पीछा आदि

6. बहुव्रीहि समास

- जिस समास में दोनों पदों का अर्थ न लेकर अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है उसे बहुव्रीहि समास कहते है।
- इसमें अन्य पद प्रधान होता है।

वक्रतुंड – वह जिनका तुंड (मुख) वक्र (टेढ़ा) है – गणेश

नाकपति – वह जो नाक (स्वर्ग) का पति है – इंद्र

श्रीश – वह जो श्री (लक्ष्मी) के ईश हैं – विष्णु

तिरंगा – तीन रंगों वाला – भारतीय राष्ट्रध्वज

मंदोदरी – उदर जिसका मंद (छोटा) हो वह स्त्री– रावण की पत्नी।

ज्ञानवाणी मिशन–100

उपसर्ग (उपसर्ग का विलोम परसर्ग होता है)

परसर्गः– कारक की विभक्ति को परसर्ग कहते हैं। उपसर्ग शब्द का शाब्दिक अर्थ है– शब्दांश का शब्द के नजदकी जाना।

परिभाषः– वे शब्दांश जो किसी भी शब्द के पहले जुड़कर उसका अर्थ बदल देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

जैसेः– अ+नाम= अनाम

बद+नाम=बदनाम

(i) अ (नहीं) = अमर, अजर, अगम, अज्ञात, अकाज, अकारण, असहाय, अज्ञानता, अविश्वास, असत्य, अचल, अलौकिक, असमान, अभिज्ञ, अपार, अपरिमित, असीम, असाधारण, अपवित, अधर्म
(ii) अन = अपषन, अनजान, अनचाहा, अनमाना, अनपढ़, अनहोनी
(iii) अध = उधखिला, अधपका, अधमरा, उधजला, अधकचरा
(iv) औ = औसर, औधड़, औगुण, औतार
(v) कु = कुमार्ग, कुख्यात, कुपुत्र, कुजात, कुधड़ी
(vi) चौ = चौराहा, चौसिंगा, चौमासा, चौकन्ना, चौपाया, चौंरगा, चौपाल, चौखट
(vii) पच = पचरंगा, पचमेल, पचकूटा, पचमढ़ी, पचमणी
(viii) पर = परकाज, परलोक, परजीवी, परदेसी, परहित, परकोटा, पवाधीन, पराश्रित
(ix) भर = भरपेट, भरपूर, भरसक, भरपाई, भरकम
(x) बिन = बिनमाँगा, बिनबुलाया, बिनखाया, बिनबोया, बिनब्याहा
(xi) ति = तिरंगा, तिपाई, निगुना, तिराहा, विकोना, तिमाही
(xii) दु = दुरंगा, दुगुना, दुराहा, दुपहर, दुबला, दुनाली
(xiii) का = कायर, कापुरूष, कातर, काजल, कालिख
(xiv) स = सपूत, सफल, सजग, सगुण, सहित, सजातीय, सबल, सपरिवार, सजीव
(xv) न = नग, नगण्य, नास्तिक, नपुंसक, नकुल
(xvi) बहु = बहुवचन, बहुपयोगी, बहुभुज, बहुविवाह, बहुद्देश्य, बहुमूल्य, बहुमल
(xvii) आप = आपबीती, आपसुनी, आपकती, आपकाज
(xviii) नाना = नानाप्रकार, नानाविध, नानारूप, नानाविका, नानाजाति
(xix) क = कपूत, कलंक, कठोर
(xx) सम = सम्पूर्ण, समतल, समकक्ष, समचतुर्भुज, समबाहु, समग्र
(xxi) सु = सुजान, सुघड़, सुडौल, सूदूर
(xxii) नि = निडर, निघड़त, निकम्मा, निहत्या, निपूत, निगोड़ा, नियम, निधन

तत्सम (संसकृत) के उपसर्गः–

(i) अति = अतिवृष्टि, अत्यंत, अतिक्रमण, अतिरिक्त, अत्याचार, अतिशय, अतिन्द्रिय, अत्यधिक, अत्यावश्क, अतीव
(ii) अधि = अधिकार, अधिकारी, अधिवक्ता, अधिपति, अधिमास, अधिसूचना, अध्याक्ष, अध्यादेश, अधीक्षक, अधिनियम, अधिकृत, अध्यापक
(iii) अनु = अनुकरण, अनुकूल, अनुभव, अनुवाद, अनुचर, अनुज, अन्य, अनुनय, अन्वेषण, अन्वेति, अन्वीक्षण, आनूदित
(iv) अप = अपमान, अपवाद, अपराध, अपहरण, अपकर्ष, अपव्यय
(v) अभि = अभिमान, अभिषेक, अभिलाषा, अभिनय, अभियोग, अभ्यन्तर, अभ्या, अभीष्ठ, अभिसार, अभियुक्त, अभ्यास
(vi) अव = अवनति, अवगुण, अवलोकन, अवमूल्य, अवतार, आकाश, अवसान, अवसर, अवशेष
(vii) आ = आहार, आवेश, आयात, आजन्म, आरोहण, आकार, आजीवन,
(viii) उत् = उत्कर्ष, उल्कंठा, उत्थान, उत्पति, उत्साह, उज्ज्वल, उल्लास, उच्चारण, उन्नति, उद्घाटन, उड्डयन
(ix) दुर् = दुरवस्था, दुरूपयोग, दुराचार, दुरदशा, दुर्बल, दुर्गुण, दुर्योधन, दुर्जना
(x) दुस् = दुसाहस, दुक्तर, दुशासन, दुरूचरित्र, दुष्कर्म, दुष्परिणाम, दुष्प्रचार, दुष्कामना
(xi) नि = निडर, निवास, नियम, निवारण, निबंध, निषेध, नियुक्त, न्यून
(xii) निर् = निर्जन, निर्यात, निरपराध, निरक्षर, निरीक्षक, निरीक्षणक्ष, निरादर, निरव, निराशा, निर्धन, निरन्तर, निराकर
(xiii) निस् = निस्तेज, निस्सनदेह, निश्चय, निश्छल, निशुल्क, निष्काम, निष्पाप, निष्फल, निष्कर्ष, निरन्तर
(xiv) उप = उपवन, उपकार, उपदेश, उपहार, उपग्रह, उपसर्ग, उपमंत्री, उपेक्षा, उपलक्ष्य, उपचार, उपयोग, उपनयन, उपवास, उप–प्रधानमंत्री
(xv) प्र = प्रगति, प्रदोष, प्रसंग, प्रयाग, प्रजाति, प्रदेश, प्रहार, प्रज्ञान, प्रचुर, प्रबल, प्रपोत्त, प्राचार्य, प्रवीण, प्रेत, प्रेषक, प्रभंजन, प्रवेश, प्रज्योति, प्रकाश, प्रसाद, प्रयोजना, प्रयोग, प्रशासन, प्रचार, प्राप्त, प्रधान, प्रकृति, प्रयास, प्रगाढ, प्राण, प्रमाण, प्रकोप, प्रसिद्ध, प्रार्थना, प्रमुख, प्रधान, प्रवास
(xvi) परा = पराभव, पराजय, पराक्रम, पराजीत, पराकाष्ठा, पराजय

(xvii) परि = परिवेश, परिचालक, परीक्षा, परीक्षक, परीक्षण, परिवार, परिवाद, परिवादी, पर्यवेक्षक, परिहार, परिभ्रमण, परिजन, परिक्रमा, परिजन

(xviii) प्रति = प्रतिदनि, प्रतिहार, प्रतिशत, प्रतिक्रिया, प्रतिहिंसा, प्रत्युत्तर, प्रतीक्षा, प्रतिष्ठा, प्रत्यक्ष, प्रतिकार, प्रतिवाद, प्रतिपाल, प्रतिलोम, प्रत्येक

(xix) वि = विज्ञान, विजय, विपक्ष, विनय, वियोग, विमुख, विजातीय, विभावना, विकार, विभाव, विग्रह, विलोम, विदेश, विभाग, विशेष, विकास, विदेह, विवाह, विवाद, विक्रम, विरोध, विशाल, विनाश, विदाई, विलुप्त, व्याकुल, व्याकरण, व्याप्त, व्याधि, विकट, विराम, विमाज, विधर्म, विमल, विकल, विजन, व्याख्या, विधाता, विधान, विधानसभी, विराट, विदिशा, विपाशा, विचार, विनय, विकृत, विकृति

(xx) सु = सुविचार, सुकर्म, सुगंध, सविकार, सुदर्शन, सुकन्या, सुलोचना, स्वागत, सुमन, सुरक्षा, सुवर्ण, सुपरिचित, सुजान, सुजन, सुगति, सुमति, सुजात, सुगर्म, सुबोध, सुलक्षण, सुशांत, सुशिक्षा, सुलेख, सुमित, सुचित्रा, सुदनि, सुयोग, सुधार, सुरंग, सुभाषित, सुमित्रा, सुमंत, सुमंत्र, सुकर, सुदूर, सुमनोहर, स्वल्प, स्वच्छ, सूक्ति, सुहाग, सुमाता, सुपति, सुदीर्घ, सुनयना, सुदामा, सुज्योति

(xxi) सम् = संकल्प, संगम, संजय, संतोष, संविधान, संस्कृत, संयोग, संन्यास, संसार, संजना, संसोधन, संतुलन, संध्या, सम्मान, संचार, सन्देह, संहार

(xxii) अपि = अपितु, अपिधान (ढक्कन), अपिहित (ढका हुआ)

1.गति शब्द उपसर्गः–

(i) अंतर = अंतर्गत, अन्तरधान, अन्तर्देशीय, अन्तर्राष्ट्रीय, अंतरिक्ष, अन्तरदयामी, अन्तःपुर, अन्तःकरण, अन्तरजाल, अन्तरात्मा, अन्तरमन, अन्त र्जातीय, अन्तर्कथा।

(ii) सर = सरपंच, सरदार, सरकार, सरहत, सरजात

(iii) हम = हमवतन, हमसफर, हमउम्र, हमदर्द

(iv) हर = हररोज, हरघड़ी, हरबार, हरचीज, हरहाल, हरदम, हरवक्त

(v) बे = बेइज्जत, बेदाग, बेजुबान, बेअदब, बेवजह, बेईमान, बेबुनयाद, बेअक्ल, बेघर, बेवजह, बेवफा, बेदर्द

(vi) बद = बदनाम, बदचलन, बदबू, बदजात, बददूआ, बदहवास, बदमाश

(vii) बर = बरकरार, बर्दाश्त, बरकंदाजी, बरबाद

(viii) ब = बशर्त, बखूबी, बजाय, बसंत, बनाम, बदौलत, बदस्तूर

(ix) बेश = बेशकीमत, बेशकीमती

(x) बा = बाकायदा, बाइज्जत, बाअदब, बामुलाहजा

(xi) नेक = नेकदिलख नेककाम, नेकनियत, नेकराह, नेकनाम

(xii) ना = नादान, नार ाज, नाकम, नाकामयाबी, नापसंद, नाउम्मीद, नाबालिक

(xiii) दर = दरबार, दरबसल, दरहकीकत, दरखास्त

(xiv) खुश = खुशबू, खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशामत, खुशहाल, खुशनसीब

(xv) कम = कमउम्र, कमजोर, कमकीमत, कमपदा, कमअक्ल, कमबख्त

2. अरबी भाषा के उपसर्गः–

(i) ला = लावारिस, लापता, लाईलाज, लापरवाह, लाजिम, लाचार

(ii) गैर = गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरसरकारी, गैरमर्द, गैरहाजिर

(iii) अल = अलबेला, अलगाव, अलसुबह, अलमस्त, अलबता, अलगरज, अलविधा

(iv) ऐन = ऐनवक्त, ऐनमौका, ऐनजगह

(v) बिला = बिलाईलाज, बिलावजह, बिलाकानून, बिलाशर्त, बिलाकसूर

(vi) की = फीसदी, फीआदमी, फीमैदान

3. अंग्रेजी भाषा के उपसर्गः–

(i) हैड = हैडमास्टर, हैडऑफिस, हैडबॉय, हैडक्वार्टर, हैडक्लर्क

(ii) हाफ = हाफकमीज, हाफपेन्ट, हाफटिकट, हाफडे

(iii) सब = सबइंस्टपेक्टर, सबकमेटी, सबडिविजन

(iv) वाइस = वाइसप्रिंसिपल, वाइसप्रेसिडेंट, वाइसचैयरमैन

(v) कॉ = कॉऑपरेशन, कॉऑपरेटिव

(vi) एक्स = एक्स–कमिश्नर, एक्स–प्रिंसिपल, एक्स–सर्विसमैन

नोटः– 1. एक से अधिक उपसर्ग से बनने वाले शब्द

शब्द	उपसर्ग	+	उपसर्ग	+	मूल शब्द
पर्यावरण	परि	+	आ	+	वरण
उपाध्यक्ष	उप	+	अधि	+	अक्ष

अप्रत्याशा	अ	+	प्रति	+	आशा		
अभ्यागत	अभि	+	आ	+	गत		
दुर्व्यवहार	दुर	+	वि	+	अव	+	हार

नोटः–2. निम्न शब्द में कोई उपसर्ग नहीं है–

शुभ, सुंदर, सुरेश, सुनार, कुमार, कुसुम, कुश्ल, कुलीन, अनल, अनिल, अन्यत्र, अनार, अचार, कमर, खिलौना, चीर, गौरव, निमित, नीरज, पराग, मिलान, रोजाना, विधायक, लेखक, सामान, सामंत, संतान, सारांश, बाशिंदा, सर्वज्ञ, चिरंजीव

शेखावाटी मिशन–100

प्रत्यय (प्रति+अय)

परिभाषाः—

वे शबदांश जो किसी मूल शब्द के बाद में लगकर उसमें अर्थ बदलते हुए नये शब्द का निर्माण करते हैं, प्रत्यय कहलाते है।

जैसेः— अपना + पन = अपनापन
मनुष्य + ता = मनुष्यता

प्रत्यय के प्रकारः—

प्रत्यय को मुख्यतः दो भागों में बाँठा गया है।

(i) कृत प्रत्यय
(ii) तद्धित प्रत्यय

(i) कृत प्रत्ययः—

वे प्रत्यय जो किसी क्रिया (धातु) के अंत में लगकर नये शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं।

नोटः— कृत प्रत्यय से बनने वाले शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

अक = लेखक, पाठक, नायक, वाचक, गायक, चालक
आक = तैराक, चालाक, लड़ाक
आकू = लड़ाकू, पढ़ाकू
अक्कड़ = भुलक्कड़, पियक्कड़, घुमक्कड़
आऊ = बिकाऊ, चलाऊ, टिकाऊ, जलाऊ, दिखाऊ, कमाऊ
आड़ी = अनाड़ी, कबाड़ी, जुगाही, खिलाड़ी
आलु = झगड़ालु, दयालु, ईर्ष्यालु, लजालु, कृपालु
इयल = मरियल, अड़ियल, सड़ियल, दड़ियल
ऊ = रट्टू , खाऊ, बिगाड़ु, उड़ाऊ, झाडू
एरा = बसेरा, लुटेरा, हुडेरा, कमेरा
ऐया = गवैया, पढ़ैया, खिवैया, रमैया, बजैया
ओड़ा = भगोड़ा, हँसोड़ा, निचोड़ा, निगोड़ा
ता = दाता, वक्ता, श्रोता, नेता, विक्रेता, क्रेता, ज्ञाता, त्राता, मनुष्यता
वाला = खिलौनेवाला, नाचनेवाला, धोनेवाला, मिठाईवाला, हुसैनीवाला, लोगेवाल, लुँगीवाला, दूधवाला, अखबारवाला
हार = खेलनहार, खेमनहार, होनहार, राखनहार, माखनहार
दार = देवदार, लेनदार, जमींनदार, खुशबूदार, बदबूदार, चौकीदार
ई = त्यागी, बोली, हँसी, आलसी, लालासी, बनारसी, बहुरगी, बजरंगी, सतरंगी, धमकी, घुड़की
औना = बिछौना, घिनौना, खिलौना
ना = खाना, पिना, दाना, जाना, आना, टहलना
नी = चलनी, ओढ़नी, सुँघनी, कर्तनी, लेखनी, फुँकनी, धौंकनी, मिलनी
आ = झूला, ठेला, मेला, घेरा, पूजा, भूला, झटका, भटका, देखा, खिला
अ = लूट, मार, लेख, मेल, पुकार, देखभाल, तोल, वाद, जय
इ = कृषि, रूचि
आनी = मथानी
औटी = कसौटी
न = बेलन, मंथन, बंधन
अन = चलन, गमन, ऐंठन, घुटन, फिसलन, तरन, पढ़न
अना = रचना, घटना, मिलना, सुचना, वेधना
आन = मिलान, चढ़ान, उड़ान, उठान, चालान
आप = मिलाप
आव = चढ़ाव, कटाव, बहाव, घुमाव
आई = लड़ाई, कटाई, चढ़ाई, सिलाई, पिसाई, लिखाई, पढ़ाई, इसाई
आवा = भुलावा, चढ़ावा
अत = बचत, बढ़त, खपत, लिखत
औवा = समझौता
औती = कटौती, मनौती, चढ़ौती

शिक्षा मिशन–100

आवट = मिलावट, लिखावट, सजावट
आहत = घबराहट, चिल्लाहट
ति = कृति, सुष्टि, स्तुति
ती = उठती, गिरवी, बढ़ती, घटती, बैठती, चलती, फिरती
सा = पिपासा, जिज्ञासा, मिमान्सा
य = ज्ञेय, पेय, देय
अनीय = पठनीय, गोपनीय, करमीय
हुआ = चलता–हुआ, बैठता हुआ, लिखता हुआ
हुई = चलती–हुई, बैठती हुई, लिखती हुई
हुए = चलते हुए, बैठते हुए, लिखते हुए

(ii) तद्धित प्रत्ययः–

वे प्रत्यय जो क्रियापद के अतिरिक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के साथि लगकर नए शब्द का निर्माण करते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

आर = सुनार, लुहार, चमार, कुम्हार
आलु = दयालु, कृपालु, श्रद्धालु
इया = मुखिया, रसिया, दुखिया, डिबिला, खटिया, लुटिया, बिटिया, अम्बिया, भारतीय, जातीय, राष्ट्रीय, शासकीयष
इयल = भारतीय, जातीय, राष्ट्रीय, शासकीय
ई = तेली, दुखी, सुखी, माली, लाली, गर्मी, सफेदी, खुशी, दोस्ती, चोरी, नमी, खेती, जानकी, गांधारी, द्रौपदी, मैथिली, घोड़ी, लड़की, बकरी, बेटी, टोकरी, घंटी, रस्सी, पहाड़ी, मण्डली, थाली, टोपी, झंडी, प्याली, नदी, हथौड़ी
एरा = सपेरा, घसेरा, चितेरा, लखेरा, चचेरा, ममेरा, मौसेस, कुफेश
ऊटा = कलूटा
क = लेखक, पाठक, लिपिक
कार = पत्रकार, चित्रकार, कलाकार, कहानीकार
अ = कौशल, यौवन, शैशव, मौन, वासुदेव, राघव, मानव, पांडव, दानव, मागध, शैव, जैन, पार्य, पांचाल, पौत्र, गौरव, वैष्णव, बौध, कौरव
आ = प्यासा, भुखा, ठंडा, छात्ता, महोदया, सुता, अग्रजा, अनुजा, खर्चो, सर्राफा
अक = ठंडक, लचक
अत = रंगत, संगत
आन = ऊँचान, लंबान, चौड़ान
आई = अच्छाई, बुराई, पंडिताई, भलाई
आयत = बहुतायत, पंचायत, टीकायत
इमा = लालिमा, कालिमा, मधुरिमा, नीलिमा, गरिमा
आस = मिठास, खटास
आपा = बुढ़ापा, मुटापा, रंडापा
आहट = गरमाहट, चिकनाहट, कड़वाहट
आयल (अयन) = रामायाण, नारायण
आइन = ठकुराइन, मुंशियाइन, चौधराइन, मुखियाइन, पंडिताइन
इन = लुहारिन, चमारिन, बाघिन, मालिन, मालकिन, धोबिन, मलिन,
पन = लड़कपन, बचपनत्र अपनापन, पागलपन, छुटपन, कालापन, गौरापन, नीलापन, लालपन
इकी = मानविकी, भौतिकी, सांख्यिकी, मौलिकी, अभियांत्रिकी
औती = बपौती, कठौती
य = धैर्य, स्वास्थ्य, सौन्दय्र, पांडितय, आदित्य, दैत्य, काव्य, नैराश्च
त्व = अपनतव, मनुष्यतव, गुरूत्व, कवित्व, पशुत्व, व्यक्तित्व, नेतृत्व
ता = मनुष्यता, मुर्खता, पशुता, एकता, मधुरता, सुंदरता
आल = ननिहाल, ससुराल
नानी = बुद्धिमानी, अभिमान
इक = पौराणिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, शारीरिक, भौगोलिक, दैनिक, नैतिक, धार्मिक, आर्थिक, वैदिक, मानसिक
इत = फलित, पुष्पित, अंकित, शोभित, हर्षित, खंडित, घटित, द्रवित, रचित
इम = रक्तिम, भक्तिम
इल = जटिल, कुटिल, पंकिल, रोमिल, स्वप्निल
ईन = कालीन, कुलीन
ईला = रसीला, जहरीला, चमकीला, सुरीला, रंगीला
एय = पौरूषेय, गांगेय, सौर्भेय, आग्नेय, कार्तिकेय, आंजनेय

उक	= भावुक, कामुक, इच्छुक, भिक्षुक
ऐला	= विषैला, मटैला, बनैला, कसैला
ओई	= ननदोई, बहनोई
तर	= कठिनतर, दृढ़तर, बृहत्तर
मान	= बुद्धिमान, शक्तिमान, गतिमान, शोभायमान
वत्	= मातृवत्, पुत्रवत्त
हरा	= इकहरा, दुहरा, तिहरा, ककहरा
जा	= भतीजा, भानजा
इ	= दाशरथि, वाल्मीकि, मारूति, सारथि, सौमित्ति
इका	= कलिका, पत्रिका, लिपिका, लतिका, गायिकी, नायिका, अध्यापिका, सेविका, दीपिका, निहरिका, मानविका, लेखिका
ओला	= खटोला, सँपोला, मँझौला
नी	= मोवनी, शेरनी, सिंहनी, जाटनी, राजपुतनी, भुतनी
इनी	= हथिनी, कमलिनी, सरोजिनी, वाहिनी, भुजागिनी
ड़ा	= दुखड़ा, मुखड़ा, चमड़ा, टुकड़ा
ड़ी	= अंतड़ी, पंखुड़ी
री	= कोठरी, छतरी
ली	= टिकली
उआ	= मनुआ, बबुआ

विदेशी भाषा के प्रत्ययः–

गर	= बाजीगर, जादूगर, सौदागर, कारीगर
ची	= नकलची, अभिमची, चिलम ची, तबल ची, तोप ची, खजान ची
दान	= कूड़ादान, पीकदान, पानदान, फूलदान, इत्रदान, रोशनदान
दानी	= पीकदानी, चायदानी, गोंददानी, मच्छरदानी, साबुनदानी
दार	= इमानदार, जमीनदार, दुकानदा, चौकीदार, मालदार, शानदार, थानेदार, हिस्सेदार
वान	= धनवान, गाड़ीवान, बागवान, कॉचवान, पहलवान
वाला	= दूधवाला, चायवाला, अखबारा, फलवाला
हारा	= पनिहार, लकड़हारा
अंदाज	= तीरंदाज, नजरअंदाज
आना	= नजराना, चकराना, मर्दाना, हर्जाना
आब	= पंजाब, गुलाब, शराब, तेजाब
आबाद	= अहमदाबाद, इस्लामाबाद, इलाहाबाद, हैदराबाद
आवर	= जोरावर, दिलावर, भक्तावर
इन्दा	= परिन्दा, वाशिन्दा, कारिन्दा, चुनिन्दा, शर्मिन्दा
इयत	= इंसानियत, हैवानियत
इश	= फरमाइश, आजमाइश, पैदाइश
इस्तान	= पाकिस्तान, कब्रिस्तान, तर्कीस्तान, अफगानिस्तान
ई	= पंजाबी, गुलाबी, खूनी, बदनसीवी, जमाखोरी, सूदखोरी
कार	= जानकार, पचीकार
खाना	= दवाखाना, कैदखाना, डाकखाना, छापाखाना
खोर	= घूसखोर, गोताखोर, एकलखोर, हरामखोर, चुगलखोर, रिश्वतखोर, जमाखोर
गर	= खिदमतगार, गुनाहगार, कामगार, मददगार, रोजगार, यादगार
गह	= चारागाह, आरामगाह, ईदगाह, बन्दगाह, दरगाह
गी	= जिन्दगी, ताजगी, दिवानगी, मर्दानगबी, सादगी
गीर	= राहगीर, जहाँगीर, आलमगीर, दस्तगीर
गीरी	= बाबूगीरी, चमचागीरी, गाँधीगीरी, कुलीगीरी, मुंशीगीरी, दादागीरी
चा	= चमचा, डेगचा
जादा	= हरामजादा, शाहजादा, रहीसजादा
नाम	= खतरनाक, शर्मनाक, दर्दनाक, खौफनाक
नामा	= बाबरनाम, अकबरनाम, सुलहनामा, इकरारनामा
पोश	= मेजपोश, नकाबपोश, सफेदपोश
बन्द	= नजरबन्द, कमरबन्द, बख्तरबंद, बोतलबन्द, बाजूबन्द, गोरबन्द, हथियारबन्द
बाज	= चालबाज, दगाबाज, दोखेबाज, नशेबाज

बन्दी	=	जमाबन्दी, चकबन्दी, जुगलबन्दी
बीन	=	दूरबीन, तमाशबीन, खुर्दबीन
बान	=	मेहरबान, मेजबान, दरबान
वान	=	गाड़ीवान, पहलवान, बागवान, कॉचवान
वार	=	गुरूवार, सप्ताहवार, माहवार, सिलसिलेवार, भाषावार
शाही	=	राजशाही, तानाशाही, अफसरशाही, नौकरशाही
साज	=	घड़ीसाज, जालसाज, जिल्दसाज
सर	=	मिलनसार, शर्मसार
नवीस	=	अखवारनवीस, नकलनवीस, अर्जीनवीस, खबरनवीस,
नशीन	=	तरदानशीन, तख्तनशीन, गद्छीनशीन

शेखावाटी मिशन–100

मुहावरा

ऐसा वाक्यांश जो सामान्य अर्थ का बोध न करवाकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति करवाये, 'मुहावरा' कहलाता है।

मुहावरे व लोकोक्तियों की पहचान–

1. मुहावरे के अंत में 'ना' का प्रयोग होता है एवं लोकोक्ति में इसका प्रयोग नहीं होता है।
2. ग्रामीण परिवेश में प्रचलित कहानियों, जनश्रुतियों, दन्तकथाओं को कम से कम शब्दों में अधिक रूचिपूर्ण ढंग से कहना ही लोकोक्ति है।
3. मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है जबकि लोकोक्ति हिंदी भाषा का शब्द है।
4. मुहावरा वाक्य का भाग (वाक्यांश) होता है जबकि लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य होता है।
5. मुहावरे भाषा की लाक्षणिकता को दर्शाते हैं, जबकि लोकोक्तियाँ समाज की भाषायी इतिहास को अभिव्यक्त करती है।
6. मुहावरे में लिंग, वचन और काल आदि अनुसार कुछ परिवर्तन आ जाता है जबकि लोकोक्ति में वाक्य के प्रयुक्त होने पर भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं आता।

मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिएः–

थू–थू करना – अपमानित करना।

वाक्य प्रयोग – आज सारा देश भ्रष्टाचारियों पर थू–थू कर रहा है।

लू अतारना – खरी–खोटी सुनाना।

वाक्य प्रयोग – शिक्षार्थी ने डण्डे से पिटाई करके लड़कों पर अपनी लू उतार दी।

आग लगाना – भड़काना

वाक्य प्रयोग – आजकल विरोधी पार्टी के लोग किसी भी समस्या को लेकर जनता में आग लगाने में नहीं चूकते।

मन में चकरी होना – भटकन होना।

वाक्य प्रयोग – वे लोग कभी भी अच्छी तरह से पढ़ाई नहीं कर पाते जिनके मन में चकरी होती है।

छक्के छुड़ाना – बुरी तरह हराना।

वाक्य प्रयोग – भारतीय सेना ने युद्ध में पाक–सैनिकों के छक्के छुड़ा दिए।

हारिल की लकड़ी – सदा साथ रहना।

वाक्य प्रयोग – आजकल युवाओं के लिए मोबाइल हारिल की लकड़ी हो गया है, जो सोते–जागते हर समय साथ रहता है।

नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना।

वाक्य प्रयोग – पुलिस को आते देखकर चौर नौ दो ग्यारह हो गये।

जान हथेली पर लेना – प्राण संकट में डालना।

वाक्य प्रयोग – आतंकवादियों को देखकर कितने ही सिपाहियों ने जान हथेली पर लेकर उनका सामना किया।

सिर पर आकाश उठाना – परेशान कर देना।

वाक्य प्रयोग – शिक्षक की अनुपस्थिति में छात्रों ने कक्षा में शोर मचाकर सिर पर आसमान उठा लिया।

नोटः छात्र स्वयं अभ्यास करें।

लोकोक्ति

लोकोक्ति शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– 'लोक' और 'उक्ति' अर्थात् लोक में प्रचलित उक्ति या कथन या लोक में चिकाल से प्रचलित कथन ही लोकोक्ति है। लोकोक्ति को कहावत के नाम से भी जाना जाता है।

1. 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– नौ दिन चले अढ़ाई कोसः– बहुत धीमी गति से चलना अथवा काम करना।

2. 'मान न मान' मैं तेरा मेहमान' लोकोक्ति का अर्थ लिखिए।

उत्तर– न चाहने पर, भी गले पड़ना।

3. 'रामजी की चिरई रामजी का खेत' लोकोक्ति का अर्थ लिखिए।

उत्तर– सब कुछ ईश्वर का ही है।

4. 'आगे कुँआ पीछे खाई' लोकोक्ति का अर्थ लीखिए।

उत्तर– सब ओर से विपत्ति में फँसना।

5. 'एक और एक ग्यारह होना' लोकोक्ति का अर्थ लिखिए।

उत्तर– संगठन में बड़ी शक्ति होती है।

शेखावाटी मिशन–100

पत्र–लेखन (Letter-Writing)

पत्र–लेखन एक कला है। पत्र विचारों के आदान–प्रदान का सरल, सशक्त, सस्ता और लोकप्रिय साधन है। पत्र, संक्षिप्त, आकर्षक, उद्देश्यपूर्ण और स्पष्ट होना चाहिए। मानव सभ्यता के विकास में पत्रों ने अपनी अनूठी भूमिका निभाई है। पत्र–लेखन से हम दूसरे व्यक्ति का दिल जीत सकते हैं और आपस में मैत्रीपूर्ण संबंध बना सकते हैं। पत्रों की उपयोगिता को देखते हुए पाठ्यक्रम में पत्र–लेखन शामिल किया गया है ताकि विद्यार्थी पत्र–लेखन की कला की सीख सकें।

पत्रों के प्रकार

पत्रों को दो भागों में बाँटा जा सकता है–

1. औपचारिक पत्र
2. अनौपचारिक पत्र

1. औपचारिक पत्रः– औपचारिक पत्र के अंतर्गत प्रधानाचार्य को पत्र, सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों को पत्र, संपादक के पत्र, व्यावसायिक पत्र आदि को शामिल किया जाता है।
2. अनौपचारिक पत्रः– अनौपचारिक पत्र उन्हें लिखे जाते हैं, जिनके साथ हमारा व्यक्तिगत या पारिवारिक संबंध होता है। इस प्रकार के पत्र अपने मित्रों, सगे–संबंधियों, परिजनों आदि को लिखे जाते हैं।

   पत्र के मुख्य अंग इस प्रकार हैं–

पत्र के मुख्य अंग इस प्रकार हैं–

1. प्रेषक (भेजनेवाले) का पता और दिनांकः– प्रेषक का पता आजकल बाईं ओर लिखा जाता है। उसके नीचे दिनांक लिखी जाती है।
2. विषय संकेतः– औपचारिक पत्रों में विषय शीर्षक देकर विषय संकेत लिखना चाहिए। जिससे पत्र को देखकर उसके विषय की जानकारी प्रापत हो सके।
3. संबोधन तथा अभिवादनः– जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जा रहा है, उस व्यक्ति के अनुरूप संबोधन और अभिवादन का प्रयोग करना चाहिए। जैसे–अपने से बड़े व्यक्तियों के लिए पूज्य, मान्यवर आदि का तथा छोटे व्यक्तियों के लिए प्रिय (नाम) चिरंजीव, प्रिय (नाम) चिरंजीव, प्रिय (नाम) आदि शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। औपचारिक पत्रों में महोदय/महोदया लिखना चाहिएं
4. विषय–वस्तुः– यह पत्र का मुख्य अंग है। पत्र के इस भाग में संबंधित विषय–वस्तु का संक्षिप्त और स्पष्ट विवरण लिखना चाहिए।
5. समापन सूचक शब्दः– पत्र की समाप्ति पर प्रेषक को पत्र प्राप्तकर्ता के संबंध के अनुसार समापन सूचक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। जैसे– अपनों से बड़ों के लिए आपका आज्ञाकारी, आपका प्रिय, अभिन्न तथा बराबर वालों के लिए तुम्हारा, अभिन्न मित्र/सखी, तुम्हारा परममित्र/सखी और अपने से छोटों के लिए तुम्हारा शुभचिंतक, तुम्हारा अग्रज, पिता आदि शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। औपचारिक पत्रों में साधारणतया प्रार्थी, भवदीच/भवदीया, आपका आज्ञाकारी शिष्य, आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या लिखा जाता है।
6. पत्र प्राप्त करने वाले का पताः– यह प्रायः अंत में अथवा लिफाफे/पोस्टकार्ड/अंतर्देशीय पत्र के बाहर लिखा जाता है। आजकल पत्रों के नए प्रारूप में यह पत्र के आरंभ में बाईं ओर लिखा जाने लगा है।

पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें–

(क) पत्र लिखते समय अपनी और पत्र पाने वाले की आयु, पद और योग्यता का ध्यान रखना चाहिए।

(ख) पत्र की भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावपूर्ण होनी चाहिए।

(ख) पत्र संक्षिप्त और सारगर्भित होना चाहिए।

(ख) पत्र की लिखावट स्पष्ट और सुंदर होनी चाहिए।

(ख) पत्र में अनावश्यक रूप से काट–छाँट नहीं करनी चाहिए।

(ख) पत्र में प्रेषक का नाम, पाने वाले का नाम, दिनांक, पता आदि का उल्लेख उचित स्थान पर होना चाहिए।

उदाहरणः–

स्वयं को रमेश सोनी निवासी मोहल्ला सुनारों का सीकर मानते हुए अध्यक्ष नगरपरिषद सीकर को पत्र लिखिए जिसमें मोहल्ले में व्याप्त गंदगी की समस्या को दूर करने का अनुरोध हो।

सेवा में,

श्रीमान अध्यक्ष महोदय,

नगरपरिषद सीकर

विषयः– मोहल्ले में व्याप्त गंदगी की समस्या के निराकरण हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि हम सुनारों के मोहल्ले सीकर के निवासी है। हमारे मोहल्ले में 10 दिनों से सफाई कर्मचारी सफाई करने के लिए नहीं आ रहे हैं। प्लास्टिक इधर–उधर उड़ रही है, कचरा सड़कों पर फैला हुआ है, आवारा पशु कचरे को इधर–उधर फैला रहे हैं। नालियों का पानी सड़कों पर आ गया है जिसमें मच्छर पनप रहे हैं जिससे बीमारी फैल सकती है।

अतः आपसे निवेदन है कि सफाई कर्मचारियों को भेजकर समस्या का निराकरण करवाएँ। हम आपके आभारी रहेंगे।

दिनांकः– 9 फरवरी 2022

प्रार्थी

रमेश सोनी

शेखावाटी मिशन–100

निबंध लेखन

बोर्ड परीक्षा 2022 हेतु महत्वपूर्ण निबंधः—

1. कोरोना : एक महामारी

   (क) प्रस्तावना (ख) कोरोना के लक्षण (ग) कोरोना से बचने के उपाय

   (घ) कोरोना के सामाजिक व आर्थिक प्रभाव (ङ) उपसंहार

2. बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ
3. विद्यार्थी जीवन में इंटरनेट की भूमिका
4. मोबाइल फोन : कोरोनाकाल / ऑनलाइन कक्षाओं की महती आवश्यकता
5. राजस्थान के त्योहार
6. पर्यावरण संरक्षण में विद्यार्थियों का दायित्व
7. स्वच्छता अभियान और आपका दायित्व
8. राजस्थान में जल संकट
9. बढ़ती बेरोजगारी
10. महंगाई / मूल्यवृद्धि का संकट
11. कन्या भ्रूण हत्या
12. राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान

शेखावाटी मिशन–100

अपठित गद्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों क उत्तर लिखिए–

डॉ. कलाम दृढ़ इच्छाशक्ति वाले वैज्ञानिक थे। वे भारत को विकसित देश बनाने का सपना संजोए हुए थे। उनका मानना था कि भारतवासियों को व्यापक दृष्टि से सोचना चाहिए। देश के विद्यार्थियो, युवाओं को सपने देखने चाहिए। सपनों को विचारों में बदलना चाहिए। विचारो को हकीकत में बदलने के लिए प्रयास करने चाहिए। डॉ. कलाम तीसरे ऐसे वैज्ञानिक हैं, जिन्हे भारत का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' दिया गया। उन्हे पद्मभूषण तथा पदाविभूषण से भी सम्मानित किया गया। इतनी उपलब्धियाँ प्राप्त करने के बावजूद अहंकार कलाम जी को छू तक नहीं पाया। वे सहज स्वभाव के भावुक व्यक्ति थे। उन्हे कविताएँ लिखना, वीणा बजाना तथा बच्चों के साथ रहना पसंद था। वे सादा जीवन उच्च विचार में विश्वास रखते थे। राष्ट्रपति पद की शपथ लेते समय दिए गए भाषण में उन्होने कबीरदास जी के इस दोहे का उल्लेख किया था– 'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब'। रामेश्वरम, तमिलनाडू में जन्मे, तथा देश के ग्यारहवें राष्ट्रपति का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायक है।

(i). डॉ. अब्दुल कलाम का जन्म स्थान था–

(अ) कन्याकुमारी (ब) कन्नूर

(स) रामेश्वरम (द) जयपुर

(ii). ''काल करे सो आज कर, आज करे सो अब'' पंक्ति में किसका महत्त्व बताया गया है?

(अ) कार्य (ब) समय

(स) व्यक्ति (द) किसी का नहीं

(iii). डॉ. अब्दुल कलाम की इनमें से कौनसी विशेषता नहीं है–

(अ) दृढ़ इच्छाशक्ति (ब) भावुक

(स) अहंकारी (द) सहज स्वभाव

(iv). कौन सा कथन सत्य नहीं है–

(अ) डॉ. कलाम को भारत का सर्वोच्च समान 'भारत रत्न' सहित पद्मभूषण व पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया।

(ब) वे सादा जीवन उच्च विचार में विश्वास करते थे।

(स) उन्हे कविताएँ लिखना, वीणा बजाना व बच्चों के साथ रहना पसंद था।

(द) देश के विद्यार्थियों व युवाओं को सपने नहीं देखने चाहिए।

(v). उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

(अ) समय का महत्व (ब) राष्ट्रपति का जीवन

(स) डॉ. अब्दुल कलाम (द) सपनों का महत्त्व

उत्तरमालाः– 1. स, 2. ब, 3. स, 4., द, 5. स

प्रश्न 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

ऋषि–मुनियों, साधु संतो को
नमन, उन्हे मेरा अभिनंदन।
 जिनके तप से पूत हुई है
 भारत देश की स्वर्णिम माटी
 जिनके श्रम से चली आ रही

युग युग से अविरल परिपाटी
जिनके संयम से शोभित है
जन जन के माथे पर चंदन।
कठिन आत्ममंथन के हित
जो असि धारा पर चलते हैं
पर–प्रकाश हित पिघल पिघल कर
मोम–दीप–सा जलते हैं
जिनके उपदेशों को सुनकर
सँवर जाए जन जन का जीवन
सत्य अंहिसा जिनके भूषण
करूणा मय है जिनकी वाणी
जिनके चरणों से है पावन
भारत की यह अमिट कहानी
उनसे ही आशीष, शुभेच्छा,
पाने को करता पद–वंदन।

(i). किनके तप से भारत की स्वर्णिम माटी पवित्र हुई है–
(अ) ऋषि मुनियों के (ब) देवताओं के
(स) मनुष्य के (द) भारतीयो के (अ)

(ii). 'जो असि–धारा पर चलते हैं' से क्या आशय है?
(अ) तलवार की धारा पर (ब) आशा रूपी धारा पर
(स) लोकहित में कष्ट झेलना (द) धारा पर चलना (स)

(iii). मोम–दीप–सा जलते हैं–पंक्ति में कौनसा अलंकार है–
(अ) अनुप्रास (ब) उपमा
(स) उत्प्रेक्षा (द) यमक (ब)

(iv). 'अविरल' विशेषण का विशेष्य है–
(अ) परिपाटी (ब) युग–युग
(स) संयम (द) आत्म मंथन (अ)

(v). उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक है–
(अ) हमारे पूजनीय ऋषि मुनि
(ब) कर्मठ भारतीय
(स) महापुरूषों के कर्म (द) हमारे आत्मजयी साधु संत (अ)

प्रश्न 3. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
सिंही की गोद से
छीनता रे शिशु कौन?
मौन भी क्या रहती वह
रहे प्राण? रे अंजान!

ज्ञानार्जन मिशन–100

किन्तु क्या,
योग्य जन जीता है।
पश्चिम की उक्ति नहीं
गीता है, गीता है।

एक मेषमाता ही
रहती है निर्निमेष
दुर्बल वह–
छिनती संतान जब
जन्म पर अपने अभिशप्त
तप्त आँसू बहाती हैं,
स्मरण करो बार–बार
जागो फिर एक बार!
ब्रह्म हो तुम
पद रज भर भी है नहीं पूरा यह विश्व–भार
जागो फिर एक बार।

(i). 'योग्य जन जीता है' यह पश्चिमी देशों की उक्ति नहीं तो किसकी है–

(अ) गीता (ब) रामायण

(स) बाइबिल (द) महापुराण (अ)

(ii). 'बिना पलक झपकाए' का समानार्थी शब्द पद्यांश से चुनिए–

(अ) मेषमाता (ब) निर्निमेष

(स) अभिशप्त (द) तप्त आँसू (ब)

(iii). उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने प्रेरणा दी है–

(अ) सिंह की तरह पराक्रमी बनने की

(ब) मेषमाता की तरह मौन रहने की

(स) अंजान बने रहने की

(द) बार–बार स्मरण करने की (अ)

(iv). मेष माता शब्द का अर्थ है–

(अ) हरिण की माता (ब) भेड़ की माता

(स) मछली की माता (द) शेर की माता (ब)

(v). उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक चुनिए–

(अ) जागो फिर एक बार (ब) पराक्रमी पुरूष

(स) सिंही का पराक्रम (द) गीता ज्ञान (अ)

ज्ञानार्थी मिशन–100

मॉडल प्रश्न पत्र

(खण्ड – अ)

प्रश्न 1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5×1=5

मधुर वचन वह रसायन है जो पारस की भाँति लोहे को भी सोना बना देता है। मनुष्यों की तो बात ही क्या, पशु–पक्षी भी उसके वश में हो, उसके साथ मित्रवत् व्यवहार करने लगते हैं। व्यक्ति का मधुर व्यवहार पाषाण–हृदयों को भी पिघला देता है। कहा भी गया है–''तुलसी मीठे वचन ते, जग अपनो करि लेत।''

निस्सन्देह मीठे वचन औषधि की भाँति श्रोता के मन की व्यथा, उसकी पीड़ा व वेदना को हर लेते है। मीठे वचन सभी को प्रिय लगते है। कभी–कभी किसी मृदुभाषी के मधुर वचन घोर निराशा में डूबे व्यक्ति को आशा की किरण दिखा उसे उबार लेते है। .... किसी ने सच कहा है–

''मधुर वचन हैं औषधि, कटुक वचन हैं तीर।''

(i). उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है–

(अ) वाणि से हानि (ब) वाणी की महत्ता

(स) पाषाण और पुराण (द) व्यवहार की उदासीनता

(ii). मधुर वचनों को किसके समान बताया बया है?

(अ) लोहे और सोने के (ब) पाषाण और पानी के

(स) पारस और औषधि के (द) अग्नि और बर्फ के

(iii). वाणी के वश में प्राणी जगत् कैसा व्यवहार करते है?

(अ) उदासीनता (ब) शत्रुता

(स) मित्रता (द) अहंकारी

(iv). कटुक वचन की किससे तुलना की गई है?

(अ) तीर से (ब) काँटों से

(स) पुष्प से (द) मोम से

(v). गद्यांश का प्रमुख उद्देश्य है–

(अ) रूखा व्यवहार करना (ब) क्रोधित बने रहता

(स) कटु वचन बोलना (द) मृदुभाषी होना

प्रश्न 2. निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 5×1=5

चाह नहीं, मै सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊ
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर
हे हरि! डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।

शेखावाटी मिशन–100

(vi). उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक हैः–

(अ) सुरबाला की सुंदरता (ब) सम्राटों का सम्मान

(स) प्रकृति की महता (द) पुष्प की अभिलाषा

(vii). पंक्तियों में कवि किसकी इच्छा का वर्णन कर रहे है?

(अ) पेड़ (ब) तितली

(स) पुष्प (द) वनमाली

(viii). पुष्प की अभिलाषा है–

(अ) सुन्दरी के बालों में सजना

(ब) सम्राटों के शव पर चढ़ाया जाना

(स) देवों पर अर्पित होना (द) वीरों के रास्ते में बिछ जाना

(ix). 'चाह नहीं ....' में 'चाह' का अर्थ है–

(अ) इच्छा (ब) अभिलाषा

(स) कामना (द) उक्त सभी

(x). काव्यांश का मुख्य संदेश है–

(अ) राष्ट्र प्रेम (ब) ईश्वर प्रेम

(स) सौंदर्य प्रेम (द) प्रकृति प्रेम

(xi). भोलानाथ और बैजू को पकड़ने के लिए मूसन तिवारी कहाँ पहुँचे?

(अ) मकई के खेत में (ब) भोलानाथ के घर में

(स) बाग में (द) पाठशाला में (1)

(xii). 'जॉर्ज पंचम की नाक' कहानी का उद्देश्य है–

(अ) विदेशी आकर्षण की निंदा करना

(ब) व्यावसायिक पत्रकारिता को बेनकाब करना

(स) औपनिवेशिक दौर की मानसिकता पर

(द) उक्त सभी (1)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः– 6×1=6

(i). किसी जाति, वर्ग या समूह का बोध कराने वाली संज्ञा को .... कहते है।

(ii). पुरूषवाचक सर्वनाम के .... भेद होते है।

(iii). मूलावस्था, उत्तरवस्था, उत्तमावस्था .... होते है।

(iv). कर्म के आधार पर क्रिया के मुख्यतः 1............. 2............ 2 भेद होते है।

(v). शब्द के आरंभ में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाने वाले शब्दांश .... कहलाते है।

(vi). 'कृदन्त' और 'तद्धित' हैं ....।

प्रश्न 3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 12×1=12

(i). संधि का शाब्दिक अर्थ बताते हुए यण् संधि के सभी नियमों को उदाहरण सहित समझाइए।

(ii). एक–एक उदाहरण सहित कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(iii). 'चिरौरी करना' मुहावरे का अर्थ लिखिए।

(iv). 'खग जाने खग ही की भाषा' लोकोक्ति का अथ लिखिए।

(v). चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

(vi). मन्नू भंडारी और उनके पिता के बीच टकराहट का क्या कारण था?

(vii). शहनाई कैसा वाद्य है तथा इसका प्रयोग कब होता है?

(viii). उद्धव की तुलना किनसे की गई है?

(ix). 'अयमय खांड न ऊखमय'– का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(x). कवि 'निराला' ने 'उत्साह' कविता में बादलों की तुलना किससे की है।

(xi). 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर बालसुलभ मनोवृत्तियों के कुछ प्रसंग बताइए।

(xii). जितेन नार्गे के अनुसार 'भारत का स्विट्जरलैंड' किसे कहते है?

(खण्ड–ब)

→ प्रश्न सं. 4 से 16 तक के लिए प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकत्तम 40 भाब्द में उत्तर लिखिए– **13×2=26**

प्रश्न 4. मूर्ति के पास से गुजरते हुए अंत में हालदार साहब क्यों भावुक हो उठे थे?

प्रश्न 5. गर्मियों की उमस भरी शाम को बालगोबिन भगत शीतल और मनमोहक बना देते थे। कैसे?

प्रश्न 6. लेखक ने सेकण्ड क्लास का रेल टिकट लेने का क्या कारण बताया? 'लखनवी अंदाज' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 7. बिस्मिल्ला खाँ की काशी और शहनाई के साथ भावनात्मक स्थिति का वर्णन करें।

प्रश्न 8. ''ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी'' में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 9. 'गागर रीति' से कवि का क्या आशय है?

प्रश्न 10. 'अट नही रही' कविता का क्या संदेश है?

प्रश्न 11. 'कन्यादान' कविता का निहितार्थ लिखिए।

प्रश्न 12. ''महतारी के हाथ से खाने पर बच्चों का पेट भी भरता''– उक्त कथन के आधार पर 'माता का आँचल' पाठ में खाना खिलाने के ढंग को लेकर माता के तर्क को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 13. शासक वर्ग (सरकारी तंत्र) और कार्य प्रणाली पर 'जॉर्ज पंचम की नाक' रचना में किस प्रकार व्यंग्य किया गया?

प्रश्न 14. पहाड़ों पर रास्ता बनाने के दुसाध्य कार्य का वर्णन यात्रावृत 'साना–साना हाथ जोड़ि ....' रचना में किस प्रकार हुआ है?

प्रश्न 15. 'मन्नू भण्डारी' अथवा रामवृक्ष बेनीपुरी का जीवन व कृतित्व परिचय संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न 16. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' अथवा 'ऋतुराज' का जीवन व कृत्तित्व परिचय संक्षेप में लिखिए।

(खण्ड–स)

प्रश्न 17. निम्नांकित पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:– 4×3=12

जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध, सारी वर्जनाएँ और सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है, यह तभी जाना और अपने क्रोध से सबको थरथरा देने वाले पिताजी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरू हुआ था, राजेन्द्र से शादी की, तब तक वह चलता ही रहा।

यश कामना बल्कि कहूँ कि यश–लिप्सा पिताजी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी और उनके जीवन की धुरी था यह सिद्धांत कि व्यक्ति को कुछ विशिष्ट बन कर जीना चाहिए ......।

अथवा

शुभकामना मिशन–100

काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्‌भुत परंपरा है। यह आयोजन पिछले कई बरसो से संकटमोचन मंदिर में होता आया है। यह मंदिर शहर के दक्षिण में लंका पर स्थित है व हनुमान जयंती के अवसर पर यहाँ पाँच दिनों तक शास्त्रीय और उपशास्त्रीय गायन–वादन की उत्कृष्ट सभा होती है। इसमें बिसिमिल्ला खाँ अवश्य रहते हैं।

प्रश्न 18. निम्नलिखित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः–

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार–बार मोहि लागि बोलावा।।
सुनत लखन के बचत कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर धोरा।।
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बध जोगू।।
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार भा साँचा।।
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू।।
खर कुठार मैं अकरून कोही। आगे अपराधी गुरूद्रोही।।
उतर देत छोड़ों बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे।।
न त येहि काटि कुठार कठोरे। गुरहि डरिन होतेउँ श्रम थोरे।।
गाधिसूनु कह ह्रदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ।।

अथवा

धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क
उँगलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होती जब कि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान
मुझे लगती बड़ी ही छविमान!

प्रश्न 19. सन्न्यासी न होने पर भी बालगोबिन भगत को साधु क्यों कहा गया है? विस्तृत वर्णन करें।
(शब्द सीमा लगभग 60 शब्द)

अथवा

बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है? यशपाल के इस विचार से अपनी सहमति–असहमति का तर्क दिजिए।

प्रश्न 20. पठित 'भ्रमरगीत' के पदों के आधार पर सूरदास जी की गोपियों की वाग्विदग्धता व भावुकता वर्णित करें।
(शब्द सीमा लगभग 60 शब्द)

अथवा

'उत्साह' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

(खण्ड–द)

प्रश्न 21. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 300–350 शब्दों में सारगर्भित निबन्ध लिखिए। 3×4=12

(अ) कोरोना वायरस – 21 वीं सदी की महामारी
(i) प्रस्तावना
(ii) कोरोना वायरस–लक्षण

शेखावाटी मिशन–100

(iii) बचाव के तरीके
(iv) महामारी का सामाजिक प्रभाव
(v) आर्थिक प्रभाव
(vi) उपसंहार

(ब) विद्यार्थी जीवन में इन्टरनेट की भूमिका
(i) प्रस्तावना—नवीनतम प्रौद्योगिकी
(ii) इन्टरनेट प्रणाली
(iii) इन्टरनेट का प्रचार
(iv) इन्टरनेट से लाभ—हानि
(v) आधुनिक विद्यार्थी जीवन मे उपयोगिता
(vi) उपसंहार

(स) भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहारः योग
(i) प्रस्तावना
(ii) योग से आशय
(iii) योग का महत्त्व
(iv) वर्तमान में योग की स्थिति
(v) उपसंहार

(द) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
(i) बेटी बचाओः बेटी पढ़ाओ की अव धारणा
(ii) लिंगानुपात कम होने के कारण
(iii) स्त्री शिक्षा का महत्त्व एवं उपाय
(iv) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ—अभियान एवं उद्देश्य
(v) उपसंहार

प्रश्न 22. स्वयं को अपने विद्यालय की हॉकी टीम का कप्तान मानते हुए विद्यालय में खेल सुविधाएँ बढ़ाने का निवेदन करते हुए प्रधानाचार्य को प्रार्थना—पत्र लिखिए। (300 शब्दों में लिखे)

अथवा

पढ़ाई हेतु छात्रावास में रह रहे अपने छोटे भाई को पत्र लिखकर 'कोरोना—वायरस संक्रमण' से बचाव हेतु विभिनन उपायों की जानकारी दीजिए।

प्रश्न 23. विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा निर्मित हस्तकला की वस्तुओं की प्रदर्शनी के प्रचार हेतु लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए।

अथवा

यातायात अथवा परिवहन अधिकारी की ओर से सड़क पर वाहन सावधानी से चलाने का एक सार्वजनिक विज्ञापन 25—50 शब्दों में लिखिए।

शैक्षिक मिशन—100

AAYAAM
CAREER ACADEMY
A NEW DIMENSION OF 'SUCCESS'
NEET I XI & XII FOUNDATION

पंखो को खोल
ज़माना सिर्फ
उड़ान
देखता है

Admission Open
Session 2022-23

NEET
XI & XII
FOUNDATION

Result: NEET 2020

131+ विद्यार्थियों का सरकारी मेडिकल कॉलेज में चयन !

AIR
67

JITENDRA KUMAWAT
S/o SURENDRA KUMAR
PALSANA

MAULANA AZAD GOVT. MEDICAL COLLEGE, DELHI

AIR
197

MANOJ KUMAR
S/o BABU LAL VERMA
PALSANA

AIIMS JDHPUR

Result: NEET 2021

उत्कृष्ट परिणाम के लिए
आयाम
ही सर्वोपरी संस्थान

एक बार फिर आयाम ने
साबित की अपनी श्रेष्ठता....

AIR
190
(OBC)

SAKSHAM YADAV
S/O RAJENDRA YADAV
Neem Ka Thana

Result: NEET 2021

सीकर में अनुपात की दृष्टि से सबसे **ज्यादा सलेक्शन** देने वाला संस्थान!

100+ विद्यार्थियों का सरकारी मेडिकल कॉलेज में चयन संभावित !

हर बार..लगातार...

Highest Selection Ratio

Session 19-20	131 Selection
Session 18-19	129 Selection
Session 17-18	108 Selection

SUCCESS

AAYAAM
CAREER ACADEMY

A NEW DIMENSION OF 'SUCCESS'

NEET | XI & XII FOUNDATION

01572-244555, 7300335555 PIPRALI ROAD, SIKAR

E-mail: info@aayaamacademy.com Website: www.aayaamacademy.com

FOLLOW US ON SOCIAL MEDIA

You Tube Subscribe to our YouTube Channel AAYAAM ACADEMY, SIKAR

Follow & Like us on Facebook facebook.com/AAYAAMACADEMYSIKAR

Join us on Whatsapp 7300335555